

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जुलाई, 2023
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2023

वर्ष : 81 अंक : 07
प्रथम श्रावण, 2080 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवानी

जुलाई, 2023



Website : www.jinwani.in

पर्युषण पर्व हमें आत्मावलोकन, आत्ममन्थन एवं आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करता है ।
अपने दोषों या विकारों के निकन्दन से तथा भावशुद्धि से आत्मशुद्धि सम्भव है ।

अंक सौजन्य

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिम्यो नमः
॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

जो इच्छा से बेईमानी नहीं करे, स्वेच्छा से घूसखोरी, नफ़ाखोरी एवं चोरी नहीं करे, मन से नशा नहीं करे, वह स्वतन्त्र है।

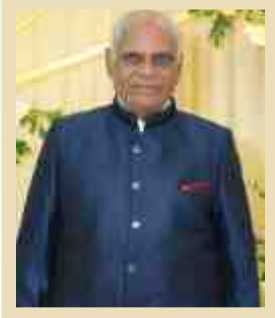
-आचार्यश्री हस्ती

परिग्रही इस बात को भूल जाता है कि हम जिस ज़मीन एवं वैभव के लिए आज इतना उछल-कूद कर रहे हैं, वे कभी किसी एक के होकर नहीं रहे।

-आचार्यश्री हीरा

सरलहृदय, अनन्य गुरुभक्त, सरलमना
श्रावकरत्न स्व. माँगीलालजी बाघमार (मेड़तासिटी वाले)
एवं
श्राविकारत्न स्व. श्रीमती रतनदेवीजी बाघमार
की पुण्यस्मृति में

:: श्रद्धावन्त ::



सुपुत्र श्रावकरत्न ज्ञानचन्द बाघमार,
श्री कालाहस्ती



सुपुत्र वधू श्रीमती सन्तोष देवी बाघमार,
श्री कालाहस्ती

सुपौत्री-दामाद : श्रीमती संगीता-स्व. श्री नवरतनजी रांका सेठ, मैसूर
श्रीमती सरिता-श्री दीपकजी कटारिया, चेन्नई
श्रीमती कविता-श्री कमलेशजी कवाड़, चेन्नई

3/1040, Nagari Street, Post-Srikalahasti-517644, Distt. Triupati (AP)

संघ एवं संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन तथा संचालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 09-10 सितम्बर, 2023 को सूर्यनगरी जोधपुर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गुणी-अभिनन्दन समारोह, संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की **संयुक्त वार्षिक साधारण सभा का आयोजन शनिवार एवं रविवार, दिनांक 09-10 सितम्बर, 2023 को सूर्यनगरी जोधपुर (राज.)** में किया जाएगा। अतः सभी बन्धु/बहिनो से निवेदन है कि उपर्युक्त कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति अवश्यमेव हो सके, एतदर्थ अपना अग्रिम कार्यक्रम अवश्य बनावें।

-धनपत सेठिया, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

जिनवाणी विशेषांक 'दान के विविध आयाम' के स्वतः लाभार्थी बनें

जिनवाणी मासिका पत्रिका के अब तक 20 विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। इन सबका प्रकाशन संघ-सदस्यों, श्रावक-श्राविकाओं, जिनवाणी प्रेमियों के अर्थ सहयोग से होता रहा है। इस बार भी आपके सहयोग से अगस्त, 2023 का अंक 'दान विशेषांक' के रूप में आप सबके कर कमलों में पहुँचे, ऐसी भावना है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित इस विशेषांक में आप स्वेच्छा से अपना अर्थ सहयोग शीघ्रातिशीघ्र निम्नांकित श्रेणियों में प्रेषित कर ज्ञान-प्रचार में लाभार्थी बन सकते हैं। 20 जुलाई, 2023 तक दान राशि जमा कराने वाले उदारमना महानुभावों के नाम इस विशेषांक में सम्मिलित हो सकेंगे। **स्वतः स्वेच्छा से प्रदत्त दान श्रेष्ठ दान होता है।**

1. रुपये 5,100/- (पाँच हजार एक सौ मात्र)
2. रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र)
3. रुपये 21,000/- (इक्कीस हजार मात्र)

आप यह राशि 'जिनवाणी' (JINWANI) के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के खाता संख्या 51026632986 आई.एफ.एस. SBIN0031843 में जमा करा सकते हैं। जमा की गई राशि पर 80जी में कर छूट की सुविधा प्राप्त है। अतः राशि जमा कराकर आप अपना पेन कार्ड संख्या भी प्रेषित करें तथा जमा की गई राशि का विवरण/स्क्रीन शॉट, मोबाइल नं. एवं पता मोबाइल नं. 93124625596 (अशोक कुमार सेठ, मन्त्री), 9314635755 (अनिल कुमार जैन) के व्हाट्स एप्प पर अवश्य प्रेषित करें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन

आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा सन्त-सतीवृन्द के सान्निध्य में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 'श्रावकाचार : एक विमर्श' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी 16-17 सितम्बर, 2023 को शक्तिनगर-जोधपुर में आयोजित की जायेगी। स्वाध्यायियों एवं समस्त श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। -सुभाष गुंदेचा, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

✚ संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

✚ संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

✚ प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

✚ प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

✚ सह-सम्पादक

नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

✚ सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088

E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinwani@gmail.com

✚ भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23

WPPLicence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



न य पाव-परिक्खेवी,
न य मित्तसु कुप्पइ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स,
रहे कल्लाणं श्रासइ॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, 11.12

बुटि पर न करे निन्दा पर की,
मित्रों पर क्रोध नहीं करता।
जो अप्रिय मित्रजनों का भी,
पीछे से हितकर ही कहता।।

जुलाई 2023

वीर निर्वाण सम्वत्, 2549

प्रथम श्रावण, 2080

वर्ष 81

अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्रों के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	पर्युषण में आत्म-विकास	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	दुःख निवारण के अनमोल सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	आत्मवद् भाव से करें दयापालन	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	जीवन-निर्माण के कुशल शिल्पी		
	आचार्यश्री शोभा	-भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	15
	सही दिशा में हो पुरुषार्थ	-मधुरव्याख्यानीश्री गौतममुनिजी म.सा.	18
	हर जीव में भगवान नज़र आ जाए	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	21
	सम्यक् प्रणाम की महत्ता	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	25
साधना-	संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	28
शोधालेख-	जैन ग्रन्थों में मुद्रा और विनिमय	-डॉ. दिलीप धींग	30
जैनत्व-संरक्षा-	रात्रिभोजन-त्याग केवल हमारी परम्परा ही नहीं,		
	पहचान भी है	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	37
सम्बोध-	हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान	-श्री पदमचन्द गाँधी	41
English-section	<i>Santhārā-Jaina Practice of Fasting unto Peaceful Death is not a Suicide</i>	-Dr. Samani Shashi Prajnā	44
प्रासङ्गिक-	कृपया ध्यान दीजिये	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	51
परिवार-स्तम्भ-	बुद्धिमानी से सेवा करें	-श्री एस. कन्हैयालाल गोलेछा	53
अध्यात्म-	पुद्गलानन्दी नहीं, आत्मानन्दी बनें	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	55
नारी-स्तम्भ-	दादी सास का नया रूप	-श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा	57
तप-साधना-	उपवास को आदत बनाइए	-श्री राजकुमार जैन	59
चिन्तन-	एकत्व भावना	-श्री लड्डूलाल जैन	61
स्वास्थ्य-विज्ञान-	शरीर में स्वयं को स्वस्थ रखने की क्षमता	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	63
चातुर्मास-	रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास	-संकलित	66
गीत/कविता-	कर्मों की धूल हटाने को	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	36
	अभी और बहुत कुछ पाना है	-श्री राजेन्द्र कुमार जैन 'राजा'	36
	हमारी पहचान	-श्री दिलीप गाँधी	40
	जीव-कर्म संवाद	-श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'	52
	कुछ सोये लोगों को जगाना	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	54
	जिनशासन यह कहता है	-श्रीमती शिपिका जैन	54
	योग तत्त्व-बोध	-डॉ. रमेश 'मयंक'	56
	मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो	-श्री विजेन्द्र कुमार जैन	58
	ऐसा अवसर कब होगा	-श्री सुशील चाणोदिया	58
	प्रभु में तल्लीनता अब बढ़ती जाए	-श्रीमती सुनीता डागा	65
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	87
	नर भव हाथ आया	-श्री धैर्य सुराणा	89
विचार/चिन्तन-	पर्युषण पर्व	-श्री मनोज कुमार जैन 'पाटोली'	24
	जीवन-निर्माण रश्मियाँ	-श्री राजेन्द्र पारख	50
	सभ्य भाषा	-श्री शुभम बोहरा	60
	आओ पक्षियों से कुछ सीखें	-श्री पीरचन्द विनोद कुमार चोरड़िया	75
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. अनिल जैन, श्री धर्मेन्द्र जैन	74
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	76
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	88
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	90

पर्युषण में आत्म-विकास

डॉ. धर्मचन्द जैन

मनुष्य अपने को धन-धान्य, भूमि, भवन, बैंक-बैलेन्स, व्यापार-व्यवसाय, पद-प्रतिष्ठा आदि की दृष्टि से समृद्ध देखना चाहता है, किन्तु आत्मगुणों की समृद्धि के प्रति अज्ञानवश उसकी कोई अभिलाषा व्यक्त नहीं होती। वस्तुतः बाह्य सुख-साधनों की समृद्धि होने पर भी भीतर से जब तक व्यक्ति आत्मगुणों से समृद्ध नहीं होता तब तक वह आत्मिक आनन्द का अनुभव नहीं कर पाता है। बाह्य समृद्धि एवं पद-प्रतिष्ठा में जरा भी आँच आने पर वह विचलित, अधीर एवं अशान्त हो उठता है। कई बार निराशा एवं अवसाद में चला जाता है। उसे क्षणभर के लिए संसार खारा एवं असार नज़र आता है, किन्तु उसका भी प्रभाव स्थायी नहीं होता। वह पुनः उसी राग-रंग में रहना चाहता है। संसार की सत्यता को वह नहीं समझ पाता कि आखिर ऐसा क्या लक्ष्य हो जिसकी प्राप्ति होने के पश्चात् दुःख एवं निराशा छू भी नहीं सके।

पर्युषण पर्व हमें आत्मावलोकन, आत्ममंथन एवं आत्मशुद्धि करने का अवसर प्रदान करता है। पर्युषण पर्व में हमें आठ दिन पूर्णतः धर्मसाधना एवं आत्मविकास में समर्पित करना चाहिए। यद्यपि पर्युषण कल्प की व्यवस्था मूलतः साधु-साध्वियों के लिए की गई है, किन्तु श्रावक-श्राविका भी पर्युषण पर्व को उत्साह से मनाते रहे हैं एवं आत्मचिकित्सा करते रहे हैं। प्राचीन काल में आषाढी पूर्णिमा के पश्चात् नया संवत्सर प्रारम्भ होता था। समवायांगसूत्र में कहा गया है कि साधु-साध्वी को आषाढी पूर्णिमा से 50वें दिन अवश्य ही सांवत्सरिक साधना करनी चाहिए। इसके लिए दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र में पञ्जोसमणा, पञ्जुसणा, वासावास आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। यह साधु-साध्वियों के लिए एक

आवश्यक कल्प है। इसमें वे अपने कषायों का उपशमन करते हैं। इसलिए इस पर्व का एक नाम 'पर्युषणमना' है। आत्मा के निकट रहने से इसे 'परिवसना' भी कहा गया है। इस पर्व को आठ दिन मनाये जाने के कारण इसे 'अष्टाद्विका पर्व' भी कहा गया है। श्वेताम्बर परम्परा में यह पर्व आठ दिन का होता है तथा दिगम्बर परम्परा में इसे दस दिन मनाये जाने के कारण इसे दशलक्षण पर्व कहा गया है। संवत्सरी का दिन दोनों परम्पराओं में प्रायः सर्वमान्य है। श्वेताम्बर परम्परा में यह पर्युषण का अन्तिम दिवस होता है तथा दिगम्बर परम्परा में इस दिन से दशलक्षण पर्व प्रारम्भ होता है। साधु-साध्वी इस पर्व के पहले अपना केश लुंचन करते हैं तथा पर्युषण के दिनों में आत्मालोचन कर आत्मशुद्धि की साधना करते हैं। इसके लिए वे तपोमय जीवन जीते हैं। सम्प्रति साधु-साध्वियों के सानिध्य में अथवा स्वाध्यायी श्रावक-श्राविकाओं की सन्निधि में गृहस्थ भी इस पर्व को तप-त्याग एवं धर्मसाधना के साथ मनाते हैं।

पर्युषण पर्व अपने दोषों या विकारों के निकन्दन एवं आत्मिक-स्वास्थ्य लाभ का अलौकिक पर्व है। दोषों को जानकर उन्हें दूर करने के लिए सजगता एवं प्रयत्नशीलता अनिवार्य है। यह पर्व शरीर, वचन एवं मन को साधने का पर्व है। संवर एवं निर्जरा की इसमें महती साधना होती है। हम गृहस्थ इस पर्व को अपने आत्मविकास में कैसे अधिक उपयोगी बना सकते हैं, इस सम्बन्ध में कुछ विचार प्रस्तुत हैं-

1. निवृत्तिमयता- अपने व्यापार-व्यवसाय एवं भोग-विलास का त्याग कर हम आठ दिन पूरी तरह से धर्मसाधना में सार्थक करें। चित्त को अशान्त बनाने वाले कार्यों से निवृत्त होने पर ही धर्मसाधना पूर्ण

मनोयोग से की जा सकती है तथा इन आठ दिनों का अधिक लाभ मिल सकता है। ये आठ दिन भावी जीवन को भी दिशा प्रदान कर सकते हैं। यह तभी सम्भव है जब भूतकाल में किये हुए दोषों के निराकरण तथा भावी जीवन को सुन्दर बनाने का अन्तः संकल्प हो।

2. आत्मावलोकन- आगम-साहित्य में आत्मा में अनन्त शक्ति का प्रतिपादन हुआ है। उस आत्मशक्ति का हमें बोध नहीं है। शरीर की शक्ति से अधिक आत्मा की शक्ति है, इसे पहचानने की आवश्यकता है। आत्मा के कारण ही शरीर में चेतना का अनुभव होता है। आत्मा में ही ज्ञान एवं अज्ञान होते हैं। अज्ञानी आत्मा पतन के मार्ग पर प्रयाण करती है, तो ज्ञानी आत्मा आत्म-प्रकाश में अपनी कमियों को जानकर उन्हें दूर करने के लिए प्रयत्नशील होती है। ज्ञानी आत्मा की दृष्टि निर्मल होती है, उसे सत्य का मार्ग सरलता से समझ में आता है तथा अज्ञानी आत्मा की आन्तरिक दृष्टि भ्रान्त होती है उसे असत्य ही सत्य नज़र आता है तथा सत्य पर विश्वास नहीं होता।

प्रायः मनुष्य अपने को जितना नहीं जानता उससे अधिक वह दूसरों को जानता है, दूसरों को जानने में उसकी विशेष रुचि रहती है। वह दूसरों की कमियों को तपाक से कह देता है, किन्तु अपनी कमियों को कमी के रूप में नहीं जानता। यदि जानता भी है, तो उन्हें ढकने की कोशिश करता है, कभी उनकी चर्चा नहीं करता। अपने दोषों और कमियों को भली-भांति जान लेना भी विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। जब तक कमियों का बोध नहीं होगा, तब तक उन्हें दूर करने का प्रयत्न भी नहीं हो सकता।

शान्त हुए बिना हम अपने को नहीं जान सकते, इसलिए आठ दिनों में शान्ति का अनुभव आवश्यक है। सभी प्रपंचों से दूर रहकर शान्तचित्त से अपना अवलोकन करना ही 'आत्मावलोकन' है। अंग्रेजी में इसे 'सेल्फ इंट्रोस्पेक्शन' कहा गया है। कोई कम्पनी भी तभी उन्नति करती है, जब वह अपना अवलोकन एवं मूल्यांकन करती है। अपनी कमियों और विशेषताओं

को जानकर ही कोई प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। इसी प्रकार अपनी गंदी आदतों, दोषों या कमियों को जानकर तथा अपनी विशेषताओं को समझकर निर्मलता की ओर बढ़ा जा सकता है।

3. सत्संग एवं प्रवचन-श्रवण- गृहस्थ श्रावक-श्राविका, युवक-युवति आदि साधु-साध्वियों के आगम वाणी से युक्त प्रवचन श्रवण करने के लिए तत्पर रहें। प्रवचन को ध्यानपूर्वक सुनें, पूरा सुनें तथा विशिष्ट वाक्यों को मस्तिष्क में अंकित कर प्रवचन को आत्मसात् करने का लक्ष्य रखें। दिन का समय भी धर्मस्थान एवं सत्संग में व्यतीत करें। साधु-सन्तों एवं सज्जनों की संगति को 'सत्संग' कहा जाता है। जहाँ जीवन के उत्थान की चर्चा होती है, आत्मगुणों एवं आत्मसामर्थ्य के विकास के सूत्र प्राप्त होते हैं, वहाँ 'सत्संग' है। सत्संग से भीतरी ऊर्जा एवं सामर्थ्य का अनुभव होता है, आगे बढ़ने का प्रकाश प्राप्त होता है।

4. धर्मसाधना में अप्रमाद- जीवन निर्वाह के लिए हम दौड़ते रहते हैं, किन्तु अपने जीवन को सुन्दर बनाने के लिए जिस धर्मसाधना का तीर्थकरों ने निरूपण किया है, उसको अपनाने में प्रमाद करते हैं। बृहत्कल्पभाष्य (4675) में कहा गया है-

तूरह धम्मं काउं, माहु पमायं खणं वि कुव्वित्था।

बहुविग्घो हु मुहुत्तो, मा अवरणं पडिच्छाहि।।

धर्मसाधना करने में शीघ्रता करो, क्षणमात्र भी प्रमाद मत करो। यह मुहूर्त अनेक विघ्नों से युक्त है। इसलिए अपराह्न की भी प्रतीक्षा मत करो। जब शुभ विचार एवं शुभ संकल्प उत्पन्न होता है, तब उसमें विलम्बता उचित नहीं। क्योंकि ये शुभ विचार कब स्थगित हो जायें, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए जिस समय शुभ विचार उदित हुए हैं, उस समय उनका उपयोग कर लेना चाहिए। धर्मसाधना के अन्तर्गत संवर एवं निर्जरा की साधना का समावेश होता है। पापकारी क्रियाओं से विराम लेकर ही धर्मसाधना सम्भव है, इसमें सामायिक साधना अत्यन्त उपयोगी है। पौषध एवं दयाव्रत की साधना भी संवर की साधना है। इसमें नये

पाप कर्मों का बंध नहीं होता तथा पुराने कर्मों को क्षीण करने एवं निर्जरित करने का अवसर प्राप्त होता है।

पर्युषण में अहिंसा की साधना पर विशेष बल दिया जाता है, अतः इन दिनों हरी सब्जी, जमींकन्द, सचित्त जल आदि के सेवन का त्याग रखा जाता है। आरम्भ-समारम्भ का वर्जन किया जाता है। ब्रह्मचर्य का परिपालन भी साधना का महत्त्वपूर्ण अंग है।

5. तपः साधना- पर्युषण पर्व में पूर्वबद्ध कर्मों को दग्ध किया जाता है। 'पर्युषण' शब्द में 'उष् दाहे' धातु से कर्मों को दग्ध करने का भाव प्रकट होता है। कर्मों का दहन तप के माध्यम से होता है इसलिए तपाराधन अवश्य करणीय है। जिसका जैसा सामर्थ्य है, वह उसके अनुसार तपसाधना कर सकता है। अनेक भाई-बहन इन दिनों में अठाई तप करते हैं। वे आठ दिन उपवास रखते हैं। अपनी इन्द्रियों और मन को नियन्त्रित रखते हैं, इससे चित्त में असीम शान्ति का अनुभव होता है तथा नूतन पाप प्रवृत्तियों से विराम मिलता है। 'तप' को तत्काल पवित्र करने वाला कहा गया है। किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि तप ज्ञानपूर्वक किया जाये, किसी प्रलोभन में आकर न किया जाये। शुद्ध कर्म-निर्जरा एवं आत्मशुद्धि की दृष्टि से तप करना हितकर है। बाह्य तप के साथ आभ्यन्तर तप करने पर आत्मशुद्धि तीव्रता से होती है। अपने द्वारा किये हुए दोषों की शुद्धि प्रायश्चित्त से होती है। विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान एवं व्युत्सर्ग भी आभ्यन्तर तप हैं। इनके द्वारा भी आत्मशुद्धि होती है। बाह्य तप में भूख से न्यून भोजन करने रूप ऊनोदरी तप, विभिन्न रसों में गृद्धता का अनुभव न करना एवं रस सेवन का परिमाण करना, 'रस परित्याग तप' कहा गया है।

6. कषाय-विजय- यह साधना का प्रमुख अंग है। क्रोध की आदत पर नियन्त्रण, अपने गुणों एवं स्वामित्व की वस्तुओं के आधार पर होने वाले अहंकार पर नियंत्रण, मायावी व्यवहार का परिहार तथा इन्द्रिय विषयों तथा धनादि के प्रति लोभ पर नियंत्रण करने की साधना पर्युषण पर्व में विशेषतः करणीय है। इन पर

नियन्त्रण का फल शान्ति एवं आनन्द है। ये कषाय ही हमें संसार में भटकने के कारण बनते हैं।

7. प्रतिक्रमण- यह भी एक महत्त्वपूर्ण साधना है, जिसमें अपने भूतकाल के दोषों को दूर किया जाता है। बारह व्रतों में लगे दोषों की शुद्धि के लिए प्रातःकाल एवं सायंकाल प्रतिक्रमण की साधना आवश्यक है। प्रतिक्रमण साधना द्वारा अनेकविध दोषों से मुक्ति मिलती है।

8. आलोचना- जिन दोषों का निवारण प्रतिक्रमण से नहीं होता उन्हें दूर करने के लिए गुरु के समक्ष अपने दोषों का कथन करके उनकी आलोचना की जाती है। अपने दोषों की निन्दा एवं गर्हा की जाती है। आत्मशुद्धि का यह महत्त्वपूर्ण साधन है। पर्युषण पर्व में अथवा सम्बत्सरी महापर्व के दिन आलोचना अवश्य करणीय है।

9. क्षमा- संसार में रहते हुए हम दूसरे के व्यवहार का बुरा मानकर द्वेष, घृणा एवं वैर की गाँठ बाँध लेते हैं। इससे हमारे चित्त में अपवित्रता अंकित हो जाती है। इसे धोने का एक ही साधन है क्षमा करना। यदि दूसरे ने बुरा माना है, तो उसकी शुद्धि का साधन है क्षमायाचना करना। क्षमा करके व्यक्ति अपने को प्रफुल्लित अनुभव कर सकता है एवं तत् सम्बद्ध तनाव से मुक्त हो सकता है। उसके भावों की शुद्धि हो सकती है। वैररूपी कैसर की गाँठ का समापन क्षमा से ही संभव है। वैर रखने से कोई लाभ नहीं होता। हम बिना कारण ही दुःखी होते हैं। वैर का त्याग करके ही सुख का अनुभव किया जा सकता है। दूसरे के प्रति यदि हमारे से भूल हुई है, तो क्षमायाचना कर लेना उसकी शुद्धि का सुन्दर उपाय है।

इस प्रकार पर्युषण पर्व की साधना के द्वारा हम आत्मविकास के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं। आत्मा की शुद्धि की यह महत्त्वपूर्ण साधना है। पर्युषण पर्व को पूर्ण समर्पण एवं सन्नद्धता से मनाकर ही हम अपने आत्म तत्त्व को पावनता एवं स्वस्थता से सम्पन्न बना सकते हैं।



आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 32, गाथा 4

अर्थ—समाधि की इच्छा रखने वाला तपस्वी श्रमण परिमित और एषणीय आहार की इच्छा करे। निपुणार्थ बुद्धि वाले साथी साधक की इच्छा करे। विविक्त-योग्य (स्त्री, पशु एवं नपुंसक के संसर्ग से रहित एकान्त) स्थान में रहने की इच्छा करे।

विवेचन—साधना में समाधि सहायक है। कोई भी साधक समाधि में रहकर ही साधना को सफल बना सकता है। समाधि में रहने का तात्पर्य है चित्त का व्यग्र न होना, अशान्त न होना। विषम परिस्थिति में भी चित्त में शान्ति बनी रहे तो वह समाधि है। ऐसे कई निमित्त होते हैं जो समाधि को भंग करने वाले होते हैं तथा साधना में विघ्न उत्पन्न करते हैं। साधक को उन निमित्तों से दूर रहना चाहिए। उन निमित्तों में से कुछ का उल्लेख उत्तराध्ययनसूत्र की प्रस्तुत गाथा में हुआ है।

इस गाथा में कहा गया है कि समाधि का अभिलाषी तपस्वी श्रमण एषणीय एवं परिमित आहार का सेवन करे। अधिक आहार आलस्य एवं प्रमाद को जन्म देता है। भिक्षाचर्या में पूर्ण गवेषणा करके एषणा समिति के नियमानुसार आहार लिया जाये। क्योंकि दोषपूर्ण आहार से चित्त में समाधि नहीं रह सकती। साधक के निमित्त से बना आहार तो दोषपूर्ण होता ही है, किन्तु आहार सम्बन्धी जिन 47 नियमों का उल्लेख आगमों में प्राप्त होता है, उनका परिहार करके ही आहार ग्रहण किया जाये। ऐसा आहार नहीं ले जो चित्त में विकार उत्पन्न करता हो। विकार उत्पन्न होने पर चित्त में समाधि नहीं रह पाती है। इसलिये साधक परिमित एवं निर्दोष आहार का सेवन करे, जिससे संयम यात्रा सुचारु

रूप से चल सके एवं ज्ञानाराधन, दर्शनाराधन, चारित्राराधन और तपाराधन सम्यक् प्रकार से हो सके।

गरिष्ठ एवं अधिक आहार भी चित्त को मलिन बनाता है तथा साधक को साधना से विचलित करता है। इसलिये शरीर की आवश्यकता के अनुसार आहार का सेवन किया जाना चाहिए। इस गाथा में श्रमण के साथ तपस्वी विशेषण लगाया गया है जो इस बात को सूचित करता है कि श्रमण रत्नत्रय की साधना के साथ प्रायः तपाराधन भी करते हैं। वह तपस्या आभ्यन्तर या बाह्य हो सकती है।

साधक को उन लोगों के साथ उठना-बैठना चाहिए जो निपुण बुद्धि वाले हों। निपुण बुद्धि से आशय यहाँ पर ऐसे साधुओं से है जो सिद्धान्त और तत्त्व के विशेषज्ञ हों। ऐसा यदि श्रावक भी हो तो उसका भी तत्त्व चर्चा में सहयोग लिया जा सकता है। व्यर्थ की बातों से चित्त में असमाधि उत्पन्न हो सकती है तथा साधक का चित्त साधना से डाँवाडोल हो सकता है। इसलिये जो विवेकशील तत्त्वज्ञ साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका हैं, यथायोग्य उनके पास बैठने से साधना में अभिवृद्धि होती है।

समाधि का अभिलाषी श्रमण ऐसे स्थान पर रहे जो विवेक योग्य हो। विवेक योग्य से तात्पर्य है ऐसा स्थान जो स्त्री, पशु एवं नपुंसक के संसर्ग से रहित हो तथा कामोत्तेजक नहीं हो। जहाँ पर साधना में मन लगे एवं बाधक तत्त्व न हों, वह स्थान साधना के लिए उपयोगी होता है। यहाँ विवेक शब्द विविक्तता अर्थात् पृथक्ता का द्योतक है। चित्त में विघ्न उत्पन्न करने वाले निमित्तों से दूर रहकर साधक अपने को सबल बना सकता है। इससे वह अपने विवेक बल को भी पुष्ट कर सकता है। विवेक या प्रज्ञा जाग्रत रहने पर साधक की साधना निर्विघ्न सम्पन्न होती है। विवेक के जागरण एवं पोषण हेतु विविक्तता उपादेय है।



दुःख निवारण के अनमोल सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- दुःख मिटाना चाहते हो तो जिन चीजों से दुःख होता है, उनके प्रति आसक्ति को ढीली कर दो। यह समझो कि यह चीज मेरी नहीं है। जो चीज आपकी होगी वह आपसे कभी अलग नहीं होगी। जो चीज आपसे अलग होने वाली है, वह आपकी नहीं है।
- दुःख और सन्ताप का कारण यदि कोई है तो ममता है। यह कार, यह कोठी, यह बगीचा, यह कुँआ मेरे नहीं हैं, मेरी नेश्राय में हैं। अपने विचारों में इतना-सा संशोधन भी कर लें, परिवर्तन कर लें तो कभी दुःख का पहाड़ अपने घर नहीं गिरेगा।
- जिस वस्तु पर हमारा ममत्व है वहाँ दुःख होता है, जिस पर ममत्व नहीं है वहाँ पर दुःख नहीं होता।
- जब कभी तुम्हारा मन साधना से चला जाय, भोग की वस्तुओं में लग जाय अथवा परिवार-जनों, पुत्र आदि में चला जाय अथवा अर्थ पर चला जाय तो सबसे पहले यह सोचो कि जिनको मैं अपना समझ रहा हूँ, वे मेरे नहीं हैं और मैं भी उनका नहीं हूँ।
- गृहपति भाई-बहिन यह समझ लें कि परिवार की देखभाल करना हमारा काम है। यह धन-दौलत तो किसी दूसरे की है। मेरे साथ चलने वाली नहीं है। मन की चञ्चलता को मिटाने का यह पहला उपाय है।
- राग को कम करना है तो आरामतलबीपना छोड़ो और आतापना लो।
- शास्त्रकार कहते हैं कि बाहर जाने वाले मन को यदि रोकना है तो बाहरी बातों से उसको हटाओ, ममता को समाप्त करो और विषय-कषायों से बचते रहो।
- जो आध्यात्मिक मार्ग की ओर आगे बढ़ाने की बजाय उससे पीछे मोड़ती है, उस कथा का नाम विकथा है।
- बाहरी वस्तु से जितनी-जितनी ममता होगी, राग होगा, स्नेह होगा उतना-उतना मन चञ्चल बनता जायेगा।
- राग बन्धन का कारण है और विराग बन्धन-मोचन का साधन। इनके बीच में एक कड़ी और होती है जो राग से खींचने वाली और विराग से जोड़ने वाली है। उसका नाम है- 'अनुराग।' देव, गुरु और धर्म तथा शास्त्र की ओर अनुराग होता है तो व्यक्ति राग से दूर होकर विराग की ओर बढ़ेगा।
- यदि सहिष्णुता पैदा हो गई तो शारीरिक कष्ट सामने आने पर भी मन में चञ्चलता नहीं आयेगी।
- जिसने अपने शरीर को साध रखा है, मन को मनाने की क्षमता है, उसको किसी भी परिस्थिति का सामना करने में कठिनाई नहीं होती।
- मन यदि सधा हुआ है तो आप जैसा मिला उसमें सन्तोष करोगे, राग-द्वेष नहीं होगा।
- एक-एक व्यक्ति अपने एक-एक साथी को प्रेरणा देकर स्वाध्याय के लिए तैयार करे। समाज का एक-एक श्रोता ऐसा सोचकर चले तो कितना काम हो जाय ?
- भय, लोभ, महिमा की चाह और राग का लुभावना आकर्षण-इन चार बातों से साधक साधना-मार्ग में कमजोरी से पैर इधर-उधर रखने लगता है। इन समस्याओं को हल करने के लिए उसको गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।
- दुःख दूर करने की कुञ्जी है-कामना को दूर करना। तन की भूख मिटाना आसान है, लेकिन मन की भूख मिटाना मुश्किल है। तन की भूख कोई दूसरा भी मिटा सकता है, लेकिन मन की भूख स्वयं ही मिटा सकता है।

आत्मवद् भाव से करें दयापालन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में सह सम्पादक श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

अज्ञान अन्धकार का समूल उच्छेद कर अनन्त ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करने वाले तीर्थंकर भगवन्त तथा जीव मात्र को अपने समान समझकर पाप के मार्ग से हटाकर धर्म पथ पर चरण बढ़ाने वाले परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की अनुपम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र प्रत्येक जीव के साथ आत्मवत् दृष्टि जगाने की प्रेरणा प्रदान कर रही है। आत्मवत् दृष्टि जगाने का अमर दृष्टान्त धर्मरुचि अनगार का है। मुनि धर्मरुचि गोचरी हेतु नागश्री ब्राह्मणी के घर पहुँचे। नागश्री ने उस दिन तुम्बे की सब्जी बनाई थी। लेकिन तुम्बे के ज़हरीले होने के कारण सारी सब्जी ही ज़हरीली हो गई। सासुजी के लड़ने के डर के कारण सारी ज़हरीली तुम्बे की सब्जी धर्मरुचि अनगार के पात्र में बहरा दी। भिक्षा ग्रहण करके धर्मरुचि मुनि साध्वाचार के नियमानुसार उसे अपने गुरु को दिखाने के लिए पहुँचे।

तुम्बे की कड़वी सब्जी की गन्ध महसूस करते ही गुरु ने शिष्य से कहा, यह तो विष है। इसे खाया नहीं जा सकता। जाओ, जहाँ कोई जीव-जन्तु न हों, ऐसे निरवद्य स्थान पर परठकर आओ। धर्मरुचि पात्र में भरी सब्जी लेकर उसे परठने गये। जंगल में जहाँ सुनसान एवं निर्जन स्थान था, वहाँ उन्होंने पात्र निकाला और सब्जी की कुछ बून्दें जमीन पर डालीं। सब्जी की बूंदों को ग्रहण करते ही अनेक चींटियों का प्राणान्त हो गया। यह देखकर धर्मरुचि का दिल दहल उठा। वे करुणा से द्रवित हो गये। सोचा, क्या करूँ, कहाँ डालूँ, जहाँ कोई प्राणी न आए। परन्तु उन्हें ऐसा कोई स्थान नज़र नहीं आया,

जहाँ कोई जीव-जन्तु या कीड़े-मकोड़े न आएँ। चिन्तन करते-करते उन्हें एक बात ध्यान में आई। उन्होंने सोचा, मेरा पेट एक ऐसी जगह है, जहाँ कोई प्राणी नहीं पहुँच सकता। बस क्या था, सारी सब्जी स्वयं ही खा गये। इतने में देखते ही देखते विष ने अपना प्रभाव दिखाया और धर्मरुचि के प्राण पखेरू उड़ गये। कीड़े-मकोड़े की रक्षा के लिए धर्मरुचि ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। यह है जीवरक्षा की जीवन्त घटना, जिसमें धर्मरुचि मुनि ने चींटियों के प्राणों को अपने समान समझा, क्योंकि वे सभी जीवों में आत्मवत् दृष्टि रखने वाले थे।

कोई भी शास्त्र हो, वह चाहे आचारांग नाम से हो, चाहे सूयङ्ग नाम से हो अथवा मूल सूत्र के नाम से हो, प्रत्येक आगम वाणी में आत्म-भाव जगाने की बात है। अपने समान दूसरों को समझने की बात है, लेकिन फिर भी जीवन में कुछ ऐसे अवगुण हैं, कुछ ऐसे दोष हैं जो प्राणी के साथ लगे हुए हैं, उन्हें आप प्रतिष्ठा के नाम से कहिये, नामवरी के नाम से कहिये, दिखावे के नाम से कहिये-ऐसे दुर्भावों में उलझकर भीतरी अहं का पोषण करने के लिए व्यक्ति दूसरों को परेशान करता है। भले ही वह दया धर्म की बात कहता है, अहिंसा आदि के नारे लगाता है; जीव मात्र को अपने समान समझने की बात भी कहता है, पर अपने जीवन में, अपने परिवार में, अपने समूह में इस बात पर नहीं चलता, तो इससे अहिंसा की प्रतिष्ठा नहीं होती। जब तक व्यक्ति स्वयं हिंसात्मक वस्तुओं का प्रयोग करेगा तब तक उसके मुख से 'अहिंसा परमो धर्मः' के नारे शोभा नहीं देंगे।

जिसकी हिंसा होती है, वह दुःखी होता है। यह

बात सभी जीवों पर घटित होती है। कबीरदासजी ने कहा है-

पीर सबन की एकसी मूरख जाने नाँहि।

अपना गला कटाय के, भिस्त बसै क्यों नाँहि॥

अज्ञान के कारण हिंसा की प्रवृत्ति वाले लोगों को यह सार तत्त्व ज्ञात नहीं होता कि हिंसा चाहे किसी भी जीव की हो, उसके लिए पीड़ादायक ही होती है। जो अपने फिजूल के शोक और आहार के लिए पशु हिंसा करते हैं, जब उनकी किसी के द्वारा हिंसा होती है, तो उन्हें भी उसी प्रकार की पीड़ा का अनुभव करना पड़ता है।

अहिंसक लोग पंचेन्द्रिय जीवों की घात से बने हुए पदार्थों का अपने जीवन-व्यवहार में उपयोग लेना जब तक नहीं छोड़ेंगे तब तक दूसरों पर इसका उपदेश लागू नहीं होगा। यहाँ तक कि हम अपने पुत्रों और परिवार वालों को भी अहिंसा की बात नहीं कह सकते।

जिनेन्द्र भगवान के उपासक होने से हमारा जीवन सादा है। प्रत्येक वस्तु के प्रयोग में अल्प से अल्पतम हिंसा से ही काम चलाने का हमारा भाव रहता है। हिंसा के बिना जीवन नहीं चलने के कारण ही जितना हो सके हिंसा से बचा जाय, ऐसी भावना रहती है। पेट भरने के लिए होने वाली हिंसा से बचा नहीं जा सकता, लेकिन रस लोलुपता के कारण भोजन के लिए अधिक हिंसा करना तो गलत ही कहा जायेगा। जीवन निर्वाह हेतु कुछ पदार्थों के बिना काम नहीं चलता, पर जो इन्द्रियों की तृप्ति हेतु हिंसावर्धक पदार्थ काम में लिये जा रहे हैं, उनसे अपने आपको बचाये रखना जरूरी है। इसलिये सबसे पहले संकल्प करें कि निरर्थक हिंसा नहीं हो और ऐसी वस्तुएँ भी काम में नहीं लें, जिससे हिंसा को बढ़ावा मिलता हो। बाह्य सुख की अपेक्षा कहा जा सकता है कि जब सुख-सुविधाओं का भोग होता है तब जीव को अच्छा लगता है, भले ही उसके कारण अन्य क्षुद्र प्राणियों की हिंसा ही क्यों नहीं हो रही हो।

बृहदालोयणा का दोहा भी प्रेरणा प्रदान करता है-

जीव हिंसा करताँ थकाँ, लागे मिष्ट अज्ञान।

ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान॥

अज्ञान के कारण लोग हिंसा करके भी खुशी मना रहे हैं, वे घोर कर्मों का बन्ध कर रहे हैं, लेकिन ज्ञानी इस हिंसा को विष से मिश्रित पकवान के समान समझकर वर्तमान के आकर्षणों से प्रभावित नहीं होता है।

जीवन निर्वाह के लिए श्रावक को अल्पारम्भी एवं अल्प परिग्रही होने की बात कही जाती है। वह प्रतिदिन काम आने वाली भी ऐसी वस्तुएँ काम में ले जिनसे कम से कम हिंसा हो। आज इस बात को प्रायः भुलाकर चला जा रहा है। इसके कारण श्रावक कहलाने पर भी प्रश्नचिह्न लग रहा है। इसके अतिरिक्त कहूँ-सादा जीवन चलाने वाले लोग भी आज अपने तन का बल बढ़ाने के लिए कैसे-कैसे पदार्थों का सेवन कर रहे हैं अथवा किन-किन वस्तुओं का सेवन कर रहे हैं, यह विचारणीय बात है। किसी भी व्यक्ति की आवाज में, उपदेश में बल तब आयेगा जब वह स्वयं पालन करेगा, स्वयं आचरण में लायेगा।

वर्तमान में अर्थोपार्जन की अन्धी दौड़ हिंसा को बढ़ाती जा रही है। गाय जैसा बहूपयोगी पशु जिसमें देवताओं का निवास स्थल माना जाता है, उसे भी कत्लखाने भेजा जा रहा है। उसके बछड़े को उसका दूध नहीं पिलाकर मशीन द्वारा पूरा दूध निकाला जा रहा है। बछड़ा जो कि अपनी माता गाय के दूध के सहारे जीता है, उसे दूध प्राप्त ही नहीं हो रहा है। जिसके सभी अंग एवं अवशिष्ट पदार्थ भी विशिष्ट काम के हैं, ऐसे उपयोगी जानवरों पर भी आज लोग हिंसा कर रहे हैं। आज आवश्यकता है ऐसे पशुओं की हत्याओं को रोकने की। जिस मात्रा में हत्या हो रही है, वह दर्दनाक है। कल एक भाई आया जो कि स्टेशन मास्टर है। वह कहने लगा कि रात के 11 बजे के बाद राजस्थान से अनेक ट्रक गायों और बछड़ों से भरकर पाकिस्तान की ओर जाते हैं। एक के बाद एक ट्रक का नम्बर लगा ही रहता है, यह कार्य मिलीभगत से होता है। धन के पीछे लोगों ने अपनी मर्यादा अपना अधिकार सब कुछ गिरवी रख दिया है। जिस संख्या में जीव हिंसा हो रही है, उसके परिणाम स्वरूप प्रकृति बदलेगी और आपको नुकसान और

खामियाजा भी भुगतना पड़ेगा। प्रकृति के कारण शरीर पर भी विपरीत तत्त्वों का प्रभाव पड़ता है। खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता भी नष्ट हो जाती है। अखाद्य पदार्थों के खाने से शरीर भी ज़हरीला हो जाता है। हिंसा के बढ़ते-बढ़ते रहने से एक दिन प्रकृति ऐसा सर्वनाश करेगी, जो कि कभी सोचा भी नहीं होगा।

आप सुखी हैं आप अपना जीवन सुखमय बिता रहे हैं तो आपको अहिंसा के लिए कुछ न कुछ उपक्रम करना चाहिए। दुःखी जितना प्रयत्न नहीं कर सकता, सामर्थ्यहीन जितना प्रयास नहीं कर पाता है, समर्थ और सुखी उससे अधिक कर सकता है। सामर्थ्यवान भी प्रयत्न नहीं करता है तो समझना चाहिये कि वह अपने पुरुषार्थ को छुपा कर चल रहा है। वह जिनशासन में चोर की संज्ञा से अभिहित हुआ है। आचार का आगम दशवैकालिकसूत्र व्याख्या कर रहा है-

तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे य जे णरे।

आयारभावतेणे य, कुव्वइ देवकिव्विसं।।

अर्थात् जो व्यक्ति तप का चोर, व्रत या वचन का चोर, रूप का चोर और आचार धर्म का चोर तथा भाव का चोर होता है, वह किल्बिषी देवों में उत्पन्न होता है।

शरीर में शक्ति होते हुए भी एक समय नहीं, अपितु चार समय खाता है और तप का समय आता है तो कमजोरी जाहिर करता है वह तप का चोर है। धर्म मार्ग में चलने का सामर्थ्य रखता है और यदि वह अपना सामर्थ्य छुपाता है तो वह आचार का चोर है अर्थात् आचरण का चोर है। अपने भावों को साकार नहीं करके आलसी रहता है, वह भावनाओं का चोर है। ऐसा जीव अपने पुरुषार्थ में हीन-हीन होकर आगे हीन जाति में उत्पन्न हो जाता है। धन में पुरुषार्थ, भोग में पुरुषार्थ फोड़ने वाले अहिंसा की जय-जयकार कर रहे हैं, जो कि असरकारक नहीं है। जब धर्म में पुरुषार्थ फोड़ने वालों की आवाज में बल आयेगा तब उसका असर लोगों पर होगा। अभी सन्त कह रहे थे कि एक बहिन का पुरुषार्थ रंग लाया और सरकार

को कत्ल खाने बंद करने पड़े। जो बिना लाइसेंस कत्लखाने चलते थे उनको बंद कराने का वचन दिया गया। आप भी एकजुट होकर प्रयास करें, तो अहिंसा के महायज्ञ में आहुति दे सकते हैं। आज जैन भाई इतने समर्थ हैं कि एक भाई भी 100 जानवर पाल सकता है और उनसे उसकी खुद की जरूरत ही नहीं, पूरे मोहल्ले की जरूरत भी पूरी हो सकती है। लेकिन आज अहिंसा धर्म की पालना की परवाह नहीं रही। आदमी का धर्म पर विश्वास छूट गया, इसलिए कुत्ता पाला जा रहा है, गायें नहीं।

आये दिन पढ़ते रहते हैं कि नौकर घर का सामान लेकर भाग गया, अमुक नौकर ने मालिक की हत्या कर दी। इन घटनाओं से आदमी पर तो विश्वास प्रायः खत्म हो गया। लेकिन भाई! कुत्ता मात्र स्वामी भक्ति के काम आता है, शेष कुछ काम नहीं आता। गाय बहूपयोगी है फिर भी गायों को पालने के लिए कोई तैयार नहीं है। यही सिलसिला चला तो 10 साल बाद देखने को ऐसे जानवर नहीं मिलेंगे।

दया करना आपका कर्तव्य है, दया पालना आपका धर्म है। इसलिये अपने परिजनों की तरह पशुओं की रक्षा कीजिये। किस दिन किसको किसकी, क्या दुआ लग जाय, कहा नहीं जा सकता। तपस्या के पारणे के दिन भाई मानचन्द हीरावत सन्तों के दर्शन करने आया। जो भाई कभी सन्तों के दर्शन के लिए उपस्थित नहीं होता था, वह भावना से दर्शन करने आया। सरल स्वभाव वाला था, वह बोला बाबजी! मुझे शीलव्रत अंगीकार करा दो। वह प्रतिदिन आने लगा। 25 दिन में ही उसके जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। दृष्टि बदलने की जरूरत है। न जाने किस आदमी को कब किसका उपदेश लग जाये। आप भी पुरुषार्थ करने का प्रयास करके स्वयं अहिंसक बनिये दूसरों को अहिंसक बनाइये। इस अहिंसाधर्म की आराधना करने वाले सुख और शान्ति को प्राप्त करते हैं।

☆

जीवन-निर्माण के कुशल शिल्पी आचार्यश्री शोभा

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा जैन स्कूल महामन्दिर, स्थानक, जोधपुर में 28 जुलाई, 2022 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

एक विचारक ने कहा-ज्येष्ठ और श्रेष्ठ गुरु वह होता है, जो अपने शिष्य को गुरुपद के योग्य बना देता है। गुरु मात्र शिष्य की बाह्य योग्यताओं का ही विकास नहीं करते, अपितु आन्तरिक योग्यताओं को बढ़ाने में भी सजग रहते हैं। गुरु मात्र शिष्य को जीवन-निर्माण का ही नहीं, जीवन को निर्वाण तक ले जाने का रास्ता बताते हैं। जो शिष्य अपने गुरु की आज्ञा और अनुशासन में रहता है, उसे गुरु भी अनुशास्ता बना देते हैं। इसलिए कहा है-

गुरु कुम्भकार सरीखा, घड़-घड़ काढ़े खोट।

भीतर से रक्षा करे, बाहर मारे चोट।।

गुरु भले ही बाहर से कठोर अनुशासन कर सकते हैं, शिष्य को उपालम्भ दे सकते हैं, लेकिन गुरु की भावना सदैव शिष्य को महान बनाने की होती है, शिष्य का जीवन उज्ज्वल बनाने की ही होती है।

आपने सूर्य, चन्द्र तथा दीपक तीनों को देखा है। आपसे प्रश्न पूछूँ कि तीनों में आपको क्या अन्तर दृष्टिगोचर होता है। आप अनेक प्रकार से अन्तर बता सकते हैं। चन्द्र और सूर्य के समक्ष दीपक का प्रकाश, प्रभाव, ऊर्जा नगण्य है, लेकिन एक विशेषता दीपक की मैं आपके समक्ष रखना चाहूँगा। चन्द्र-सूर्य भले ही कितने ही प्रकाशमान हों, लेकिन ये दोनों अन्य ग्रह-नक्षत्रों को चन्द्र-सूर्य नहीं बना सकते हैं, जबकि दूसरी ओर वह छोटा-सा दिखने वाला दीपक अनेक दीपकों को प्रज्वलित करने का सामर्थ्य अपने पास रखता है। इसलिए एक कहावत है-दीप से दीप जले। दीपक में

अनेक दीपक उत्पन्न करने का जो सामर्थ्य है, वह चन्द्र-सूर्य में नहीं है।

गुरु भी दीपक के समान होते हैं, जो अनेक शिष्यों के जीवन में रत्नत्रय का, सदगुणों का दीप प्रज्वलित कर उन्हें अपने सदृश प्रकाशमान दीपक बना देते हैं। गुरु में ही वह सामर्थ्य है जो भक्त को भगवान बना सकता है तथा शिष्य को गुरु बना सकता है। आज श्रावणी अमावस्या है जो हरियाली अमावस्या के नाम से भी जानी जाती है। आज के दिन हमें एक ऐसे सदगुरु के जीवन दर्शन के गुणगान करना है, जिन्होंने जिनशासन को, हमारे गौरवशाली रत्नसंघ को गुरु हस्ती जैसे महान आचार्य को प्रदान किया। आज जीवन-निर्माण के उन शिल्पकार के गुणगान का दिवस है, जिन्होंने आचार्य हस्ती जैसे अनमोल रत्न को तराशा है। एक लघुकाय और लघुवय के साधु में निहित विशाल योग्यता को परखा है। उन महापुरुष ने मात्र 15 वर्ष की लघुवय के शिष्य को आचार्य बनाने का दूरदृष्टिपूर्ण और साहसिक निर्णय लिया था। गुरुशोभा के इस अद्भुत निर्णय ने जिनशासन की शोभा में चार चाँद लगाये हैं।

आज आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का पुण्य-स्मृति दिवस है। उनके गुणगान करने के लिए और अपनी जिह्वा को पवित्र करने के लिए आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ मैं आपके सामने रखता हूँ-

माँ पार्वती के लाड़ले, जिनके पिता भगवान थे।
अवतार मेहता कुल लिया, 'शोभा' निराली शान थे,
जो पुष्प सम कोमल हृदय, अरु दृढ़ प्रतिज्ञावान थे,

निर्मल मति दुष्कर ब्रती, धीमान करुणा खान थे। गम्भीर सागर तुल्य गुरु, मम भक्त वंघ महान् थे। जो ब्रत नियम को पालने में, सदा दृढ़ चट्टान थे। सेवा सरलता सदगुणों से, आज जिनका नाम है, उन पूज्य शोभा मुनीश को, मम कोटि-कोटि प्रणाम है।

आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की जन्मदात्री माँ का नाम पार्वती था और पिता भगवानदासजी छाजेड थे। संसार में दास कई होते हैं। कोई लक्ष्मीदास होता है, कोई पत्नीदास होता है, लेकिन भगवान दास विरले ही होते हैं, उनका मात्र नाम ही नहीं था अपितु उन्होंने अपने पुत्र को भगवान बनने के मार्ग पर आगे बढ़ाया। गुरु शोभा का जन्म इसी मरुधरा की पावन भूमि जोधपुर में हुआ था। जोधपुर की पावन धरा का इतिहास अत्यन्त समृद्ध रहा है। इस धरा पर अनेक आचार्यों के अनेक चातुर्मास, जन्म-दीक्षा, आचार्य पदारोहण आदि सम्पन्न हुए हैं और वर्तमान में पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन सान्निध्य से यह क्षेत्र लाभान्वित हो रहा है।

विक्रम सम्वत् 1914 में कार्तिक शुक्ल पंचमी जो कि सौभाग्य पंचमी या ज्ञान पंचमी के नाम से जानी जाती है, उस विशिष्ट दिवस को आपका जन्म हुआ। इसलिए कहते हैं कि महापुरुष या तो विशिष्ट दिन को जन्म लेते हैं या अपने प्रेरक जीवन से उस दिन को विशिष्ट बना देते हैं।

आपश्री बचपन से ही गम्भीर स्वभाव वाले थे। सांसारिक कार्यों में आपके उदासीनता के ही भाव थे। माता-पिता द्वारा प्रदत्त संस्कारों द्वारा आपका बचपन व्यतीत हो रहा था। आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त कर आपका मन वैराग्य के रंग में रंग गया और माता-पिता की आज्ञा पाकर आपने मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में ही विक्रम सम्वत् 1927 में पूज्य श्री के पास संयम-जीवन अंगीकार कर लिया। दीक्षा लेने के साथ ही आपने मनोयोग से अपना सर्वस्व ज्ञान और सेवा हेतु समर्पित कर दिया। आपने अपने गुरुभाई पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. से विशिष्ट ज्ञान अर्जन किया।

आपने आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. की अग्लान भाव से खूब सेवा की तथा उनके स्वर्गगमन के पश्चात् आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की सेवा करके आदर्श उपस्थित किया। आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. को प्रदेश की राजधानी जयपुर में नेत्र ज्योति की मन्दता के कारण 14 साल तक विराजना पड़ा। उस समय पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने उनके आहार-प्रतिलेखन एवं अन्य सभी आवश्यक कार्यों में जो अग्लान भाव से सेवा की, वह अतुल्य थी। ऐसे प्रसंग इतिहास में दुर्लभ प्राप्त होते हैं। गुरु की सेवा करने वाले तो अनेक साधक मिल जाते हैं लेकिन गुरुभाई की गुरुसदृश सेवा भक्ति करने का आपने अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। आपने विनय, वैयावृत्य के साथ ज्ञानवृद्धि की तथा सरलता, समर्पण से आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. का विश्वास जीत लिया। आप दोनों गुरुभ्राता थे, लेकिन पूज्य श्री शोभा का विनयभाव देखकर अधिकांश लोग उन्हें गुरु-शिष्य मानते थे। गुरुभ्राता की समर्पित भाव से सेवा करने से आपने जिनशासन में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया तथा आज भी सभी साधकों के लिए आप आदर्श महापुरुष के रूप में स्मरण किये जाते हैं।

आपकी सेवा और पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. का आपके प्रति विश्वास सम्बन्धी अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं। सीमित समय में सभी प्रसंगों को रखना सम्भव नहीं है। कुछ प्रसंग आपके सामने रखना चाहूँगा। योग्य शिष्य ही योग्य गुरु बनता है। आपश्री एक योग्य शिष्य थे। एक बार जोधपुर श्रीसंघ आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. की सेवा में सन्तों के चातुर्मास हेतु उपस्थित हुआ। पूज्यश्री ने फरमाया-“भाई! शोभा को छोड़कर किसी को भी ले जाओ।” यह होता है- विश्वास और समर्पण। इन गुणों के बिना गुरु के हृदय में ऐसा स्थान नहीं बनता है। आपश्री नित्य व्याख्यान फरमाते थे। कई बार व्याख्यान के समय पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. को आपसे कोई कार्य होता तो आपश्री तत्काल व्याख्यान स्थगित कर सेवा कार्य हेतु

उपस्थित हो जाते थे। इसलिए कहते हैं- जिस शिष्य के हृदय में गुरु बसते हैं वह धन्य है तथा जो शिष्य गुरु के हृदय में बसता है तथा गुरु उसकी प्रशंसा करते हैं वह तो धन्य-धन्य है।

योग्य शिष्य होने के साथ ही आप एक महान गुरु भी थे। आप अपने शिष्यों का निर्माण प्रेम और अनुशासन से करते थे। शिष्यों को अध्ययन कराने में भी आपश्री बड़े विचक्षण थे। एक बार पूज्य श्री हस्ती को अध्ययन कराने के लिए पण्डित श्री दुःखमोचनजी झा उपस्थित हुए। पण्डितजी की मान्यता परमत की थी तो आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने पण्डितजी का परीक्षण करने के लिए कल्याणमन्दिर स्तोत्र के एक श्लोक का अर्थ, भावार्थ करवाया। तत्पश्चात् उन्हें योग्य जानकर ही पढ़ाने के लिए अवसर दिया गया। जिनके पास अध्ययन करके ही आचार्य श्री हस्ती ने संस्कृत भाषा पर अपना अधिकार जमाया तथा धाराप्रवाह संस्कृत में सम्भाषण करने में वे कुशल हो गये। इस तरह आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. शिष्यों का जीवन-निर्माण बड़ी कुशलता और दूरदृष्टि से करते थे।

एक बार आपश्री (आचार्यश्री शोभा) को एक सुश्रावक ने निवेदन किया “भगवन्त आपकी सेवा में लघुवय के नवदीक्षित सन्त हैं, आप उनके शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए गरिष्ठ पदार्थ जैसे दूध, दही, आदि दिया करो, जिससे उनका ज्ञान, क्षयोपशम अधिक बढ़ेगा।” तब पूज्य श्री ने फरमाया- “क्या पुराने सन्त ज्ञान-आराधना तथा जीवन का विकास नहीं करते थे? आप इनके लिए गलत मार्ग मत बताइये, ये गरिष्ठ आहार का सेवन करेंगे तो प्रमादी बन जायेंगे, मैंने प्रमाद करने के लिए इनको दीक्षा नहीं दी है। ये नित्य पौरुषी का तप करेंगे, फिर छाछ-खाखरा आदि का आहार करेंगे। जितना हल्का आहार करेंगे, अप्रभत्तभाव से संयम की आराधना करेंगे।”

इस तरह आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने अपने जीवन में अनेक आदर्श उदाहरण पेश किये तथा आपश्री की निर्मल चारित्र साधना से अनेक परम्पराओं

के सन्त-सती कहो या जैन-जैनेतर भाई कहो, हर कोई प्रभावित था। आपके पावन सान्निध्य को पाकर जैनेतर भाई मूलजी विश्नोई अनेक व्रत-नियमों को धारण कर उनका दृढ़ता से पालन करने लगा। वह रात्रिभोजन-त्यागी था। इस भाई की प्रशंसा हुक्मगच्छनायक आचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी म.सा. अपने प्रवचन आदि में अनेक बार करते थे।

इस जिनशासन की प्रभावना में अनेक ज्योतिर्धर आचार्यों, महापुरुषों का योगदान रहा है। सहयोग भाव से ही शासन चलता है। सभी के सहयोग से शासन-प्रभावना होती है। सभी साधु-साध्वी शासन के अंग हैं, उनका विकास ही शासन का विकास है। आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने गुरु हस्ती का जीवन-निर्माण किया। गुरु हस्ती ने गुरु हीरा को घड़ा। आज हमें इन महापुरुषों के पावन सान्निध्य में साधना करने का अनमोल अवसर प्राप्त हो रहा है। आपने थोड़े समय में आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की जीवन झाँकी सुनी है। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व और नेतृत्व आज भी हमें प्रेरणा दे रहा है। महापुरुष चले जाते हैं, पर उनका नाम सदा गाया जाता है। आचार्य श्री शोभा चले गये, गुरु हस्ती चले गये, पर उनका यशस्वी नाम लेते हुए आज भी गौरव की अनुभूति होती है। हम इन महापुरुषों के गुणगान के साथ गुणग्रहण का भाव भी रखें। गुरु हीरा कई बार अपने प्रवचन में फरमाते हैं- “गुण ग्रहण ही सम्यग्दर्शन है।” हम इन महापुरुषों के गुणों को ग्रहण करें, इनके उपदेश पर चलकर अपने सम्यग्दर्शन को पुष्ट करें। हम भी अपने जीवन में सेवा, सरलता, समर्पण आदि आत्मगुणों की अभिवृद्धि कर आत्मोन्नति के मार्ग को प्रशस्त करें।

आप, हम सब गुरु हीरा के साधनामय जीवन को देख रहे हैं। ये महापुरुष वृद्धावस्था में भी पूरी तन्मयता, एकाग्रता के साथ अपनी आत्मसाधना में निरन्तर प्रगति कर रहे हैं। हम भी इनके पावन सान्निध्य में अपने जीवन को पावन बनायें, इसी शुभ भावना के साथ।



सही दिशा में हो पुरुषार्थ

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा मानसरोवर, जयपुर चातुर्मास में 3 सितम्बर, 2021 को फरमाये गये इस प्रवचन का संकलन श्री पदमचन्द्रजी गाँधी एवं श्री अभिषेकजी जैन, जयपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

संसार का हर प्राणी कुछ न कुछ पुरुषार्थ अवश्य करता है, चाहे वह नारकी का जीव हो या देवगति का, तिर्यञ्च गति का हो या फिर मनुष्य गति का। पुरुषार्थ पराक्रम और शक्ति का परिचायक है। प्रत्येक जीव अपनी शक्ति को, अपने सामर्थ्य को तन, मन, वचन तथा इन्द्रियों के माध्यम से उपयोग में लाता है।

हर जीव के पुरुषार्थी होने पर भी सबके पुरुषार्थ में अन्तर है। एकेन्द्रिय जीव पाप कर्म का बन्ध अधिक नहीं कर सकता है। वह नारकी आदि संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के समान कर्मों का उत्कृष्ट बन्ध नहीं कर सकता है। क्योंकि एकेन्द्रिय के पास कर्म बन्ध के उतने साधन नहीं हैं, जितने पञ्चेन्द्रिय के पास हैं। संज्ञी तिर्यञ्च 8वें देवलोक तक तथा संज्ञी मनुष्य 12वें देवलोक तक जा सकता है, लेकिन असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय प्रथम नारकी से नीचे तथा भवनपति-वाणव्यन्तर के ऊपर के देवलोक में नहीं जा सकता, क्योंकि उसके पास मन रूपी साधन नहीं है। यह बात तो प्राप्त साधनों के आधार पर पुरुषार्थ करने की कही है, लेकिन समान साधन प्राप्त होने पर भी जीवों के पुरुषार्थ में अन्तर हो सकता है। कोई व्यक्ति बाग में आग लगाता है, तो कोई व्यक्ति आग में बाग लगाता है। कोई अनुपयोगी सामान, कचरा आदि को बाहर फेंकता है तो कोई उन्हीं से सुन्दर कलाकृति बना देता है। सुना है कि चण्डीगढ़ में अनुपयोगी सामान, कचरे आदि से बनी कलाकृतियों का एक पर्यटक स्थल बना दिया गया है, जिसे लोग देखने जाते हैं। एक व्यक्ति ने घर का कचरा निकालकर एक कोने में रख दिया और

दूसरे ने उसे फैला दिया। पुरुषार्थ दोनों ने किया है। इसलिए हमारी शक्ति, हमारा पुरुषार्थ किस कार्य में लगा है, यह विचार करने योग्य है। अपनी शक्ति का सदुपयोग होना चाहिए अन्यथा सामर्थ्य का दुरुपयोग आगामी भवों में सामर्थ्यहीन बना देगा।

एक साधक वीतरागी 11वें गुणस्थान में स्थित है। लेकिन वह परिपूर्ण सम्यक् पुरुषार्थ किये बिना ही आगे बढ़ गया। कषाय के अंश को क्षय करने की अपेक्षा दबाता चला गया। इस कारण आगे का मार्ग अवरुद्ध मिला और गिरकर पुनः नीचे के गुणस्थान में आ गया। इसलिए पुरुषार्थ करने में भी सावधानी रखना अनिवार्य है, वरना सावधानी हटने पर दुर्घटना घटते देर नहीं लगती है।

एक ट्रेन में बंगाली बाबू और पंजाबी सरदार यात्रा कर रहे थे। बंगाली बाबू के पास बड़ा बक्शा था। वह उस बक्शे को ऊपर रखना चाह रहा था, लेकिन भारी होने के कारण बक्शा उससे उठ नहीं रहा था। पंजाबी सरदार ने उसे उठाकर ऊपर रख दिया और अहंकारवश बोला- “रोटी खाया करो, चावल में ताकत नहीं होती।” पंजाबी अपनी शारीरिक शक्ति का अभिमानपूर्वक बखान करने लगा। बंगाली ने सोचा कि इसको अपनी ताकत का बड़ा घमण्ड है। इसका घमण्ड दूर करना चाहिए। पंजाबी सरदार को सबक सिखाने के लिए वह ट्रेन के कक्ष में लटक रही जञ्जीर को बार-बार हाथ लगाता और उसे खींचने का नाटक करता, लेकिन जञ्जीर खींचता नहीं। सरदार देख रहा था, वह बोला- “यह जञ्जीर खींचना जनानी का कार्य नहीं है, यह तो

मर्दों का कार्य है।” सरदारजी तुरन्त खड़े हुए और जञ्जीर खींच दी। जञ्जीर के खींचते ही ट्रेन रुक गयी। अफसर आया और उसने पूछा कि जञ्जीर किसने और क्यों खींची। सरदारजी बोले—“इससे खींची नहीं जा रही थी तो मैंने खींच दी।” बंगाली ने कहा कि मैं तो जञ्जीर खींच ही नहीं रहा था। सरदारजी पकड़े गये। एक माह की जेल तथा 500/-रुपये जुर्माना देना पड़ा। बात समझने की यह है कि पहली बात तो सही दिशा में पुरुषार्थ हो और दूसरा उस पर अहंकार कदापि नहीं हो।

ऐसे ही हम भी निरर्थक ही कर्मों को बान्धने का पुरुषार्थ करते हैं तो निश्चित रूप से कर्मों का परिपाक होने पर दण्ड अवश्य मिलता है। यही तो चिन्तन करना है कि हमारी शक्ति का उपयोग अर्थात् पुरुषार्थ किस ओर जा रहा है।

पर्युषण पर्व आ रहे हैं। ये पर्व हमारी संस्कृति के संवाहक हैं। हमारा पुरुषार्थ कर्म निर्जरा में हो, आस्रवद्वार बन्द करने में हो। यह मेरा पर्व है, ऐसा भाव रहे। इन दिनों में ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य और तप में पुरुषार्थ करने का लक्ष्य होना चाहिए। बालोतरा तेरापंथ समाज के 700 घर एवं मन्दिरमार्गी परम्परा के 400 घर चातुर्मास में गुरु हस्ती के उपदेशों का लाभ लेते थे। गुरुदेव ने धर्म का मर्म और आत्मशुद्धि के साधन बताये। उपदेशों को सुनकर बालोतरा के तीनों सम्प्रदाय के व्यापारियों ने मिलकर चिन्तन किया कि ऐसे महान् आचार्य की प्रेरणा मिली है, हमें पर्युषण के दिनों में सम्पूर्ण बाजार बन्द रखना चाहिए। परिणामस्वरूप पर्युषण में व्यापार नहीं करने का निर्णय लागू कर दिया। आज तक इस निर्णय की परिपालना हो रही है। कभी दो पर्युषण भी आ जाये तो 9-9 दिन दोनों माह में मिलाकर कुल 18 दिन तक व्यापार बन्द रखा जाता है। पीपाड़ के सुमतिजी मेहता 8 दिन तक अपनी दुकान नहीं खोलते हैं, चाहे पूरा बाजार ही खुले। एक बार आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने व्यसनमुक्ति पर प्रवचन दिया, प्रवचन के प्रभाव से सुमतिजी ने खड़े होकर उसी समय नशे की किसी भी तरह की वस्तु (बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, जर्दा) का सेवन

न करने तथा उसे नहीं बेचने का संकल्प कर लिया, जबकि उनकी कमाई का प्रमुख साधन ही देसाई बीड़ी की एजेन्सी थी, लेकिन दृढ़ संकल्प कर लिया था। यह है सम्यक् पुरुषार्थ का नजारा।

ईद के दिन मुसलमान को चाहे कितनी ही पगार देने का वादा कर दो, पर फिर भी उस दिन वह काम नहीं करता है। उसके मन में खुद के धर्म के प्रति अहोभाव है। वह कहता है कि आज ईद है, यह हमारा सबसे बड़ा त्यौहार है, हम आज व्यापार का अवकाश रखते हैं। पाँच सौ रुपये प्रतिदिन कमाने वाला मुसलमान पचास हजार मिलने पर भी ईद के दिन काम पर नहीं आता है। दूसरी ओर हम हैं, जो पर्युषण पर्व के दिनों में भी अपना संसारी काम जारी रखते हैं। सम्पत्ति और संवर-साधना में प्राथमिकता किसे देनी है, आप यह निर्धारित करें। कल्पना करो यदि संवर करते हुए अगले भव की आयु का बन्ध हो गया तो मुक्त होने में 15 भव से अधिक नहीं लगेंगे। ध्यान रखना, जब तक जीना है तब तक सीना है अर्थात् संसार के काम करना है। संसार के काम कभी समाप्त नहीं होते हैं, इसलिए जितना हो सके धर्म-ध्यान में अपने आपको लगाकर परभव की पूँजी तैयार कर लो। उत्तराध्ययनसूत्र भी यही प्रेरणा प्रदान कर रहा है-

जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्डइ।

जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।

जब तक वृद्धावस्था का आगमन नहीं हो, व्याधियों का आक्रमण नहीं हो, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं हो तब तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए। धर्म के आचरण के लिए समय का इन्तजार नहीं किया जाता है। धर्म करने का अवसर मिले अथवा न मिले, किन्तु धर्म करने का अवसर बना लेना चाहिए। जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमलजी म. सा. की प्रेरणा से पाली में 8 दिन तक बाजार बन्द रखे जाने लगे। यदि किसी ने दुकान खोल ली तो जैन समाज में उसके नाम की चिट्ठी घूम जाती तथा वर्षभर तक उस दुकान से कोई भी जैन भाई सामान नहीं खरीदता। हम भी शिक्षा ले सकते हैं और आने वाले पर्युषण पर्व को अपने लिए यादगार बना

सकते हैं।

तपस्या का सामर्थ्य रखने वाले तपस्या में पुरुषार्थ करें। सामायिक-संवर की आराधना करने वाले इनमें आगे बढ़े। यह भी याद रखें कि आहार करना पाप का कारण नहीं है, आस्रव पाप का कारण है। उपवास, तेला, अठाई तो कर रहे हैं, लेकिन कषाय पाल रहे हैं तो तप की महत्ता कम होती जाती है। हमारे पर्व आत्म-शुद्धि के हैं, गले मिलने तथा मिठाई बाँटने के नहीं। सभी आत्म-शुद्धि का लक्ष्य रखें।

आप प्राथमिकता निर्धारित करें कि कौनसा कार्य पहले करना है और कौन सा बाद में। एक नाई दर्जी के पास कपड़ा लेकर गया। दर्जी को कपड़ा देकर बोला कि इससे एक थैली और एक पेन्ट सिल देना। दर्जी ने कहा- “भाई साहब! कपड़ा कम है, दोनों में से एक ही चीज बनेगी।” नाई बोला- “भाई! दोनों ही बनानी है।” दर्जी ने पहले थैली बनाई और फिर पेन्ट बना दी। जब नाई ने आकर देखा कि पेन्ट नाप में छोटी और कमर में तंग थी तब वह बोला- “भाई! तूने पेन्ट बिगाड़ दी और मेरा कपड़ा खराब कर दिया।” दर्जी बोला- “मैंने तो आपको पहले ही बोला था कि दोनों में से एक ही बनेगी।” नाई ने कहा- “तू पहले पेन्ट बनाता और बाद में थैली। थैली छोटी भी हो जाती तो चल जाती, पर पेन्ट छोटी नहीं चल सकती।” दर्जी को दोनों में से किसे पहले बनाना है, ऐसी प्राथमिकता निर्धारित करना नहीं आया। दर्जी ने अपनी योग्यता से पुरुषार्थ भी किया और समय भी लगाया, लेकिन परिणाम सुखद नहीं आया। पर्युषण पर्व के दिवसों में आप भी सब कार्यों में आत्म-शुद्धि के कार्यों को प्रधानता से करने का लक्ष्य रखें।

आज हमारा पुरुषार्थ कैसा है, हम प्राथमिकता किसे देते हैं। आज स्थिति यह है कि “उठ बन्दा, कर धन्धा” और उसके बाद कुछ समय बचता है तो परिवार को देना होता है। सबके अन्त में यदि कुछ समय बचे तो अपने नौकरों को समय देते हैं। धार्मिक कार्यों का नम्बर सबके बाद में आता है। ऐसा करने से हम मुक्ति की मात्र कल्पना ही कर सकते हैं। क्योंकि बन्धे हुए हठीले कर्मों

को तो हठ करके ही हराना पड़ेगा। तभी जाकर कर्मों की छुट्टी और आत्मा की शुद्धि होगी। सुनहरा अवसर आपके सामने आया है, प्रबल सम्यक् पुरुषार्थ करने में पीछे मत रहना।

हमारे गुरु भगवन्त सम्यक् पुरुषार्थ के जीते-जागते उदाहरण हैं। देखो इन साधुओं को लोच करते हैं, कितनी ही धूप तेज हो सड़क पर या रेत पर नंगे पाँव चलते हैं। कड़कड़ाती सर्दी की भीषणता को सहते हैं, वर्षा के दिनों में यदि वर्षा लगातार हो रही हो तो दो-तीन दिन भी भूखे रह जाते हैं, रात्रि में मच्छरों के प्रकोप को सहते हैं, गर्मी में पसीने से तर-बतर रहते हैं। इतना सब सहते हुए भी संयम को श्रेष्ठ मानकर समता भाव में प्रसन्नतापूर्वक जीवन-यापन करते हैं। हमारे साधु प्रेरणा पुंज हैं, इनसे प्रेरणा लेकर हम सम्यक् पुरुषार्थ में कदम बढ़ा सकते हैं।

आप अपने आराम क्षेत्र (कम्फर्ट जॉन) से बाहर आओ और आस्रव के द्वार बन्द करने का प्रयास करो। अपनी शक्ति-सामर्थ्य का सदुपयोग करके प्रबल पुरुषार्थ का परिचय दो। संसार के काम कभी किसी के पूरे हुए नहीं और न ही किसी के कभी पूरे होंगे। जितना पुण्यार्जन करना है कर लो, समय को सार्थक करो, व्यर्थ मत गँवाओ। एक व्यक्ति ने जमीन खरीदी। कुछ ही समय बाद वहाँ एक बड़ी कम्पनी आ गई, इस कारण अल्प समय में ही उस जमीन के भाव बढ़ गये। वह व्यक्ति सामान्य श्रेणि से उठकर करोड़पति बन गया। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि पैसा इकट्ठा मत करो, पुण्यवानी इकट्ठी करो, क्योंकि पुण्यवानी होगी तो पैसा छप्पर फाड़ के आयेगा और यदि पुण्यवानी नहीं होगी तो पैसा तुम्हें ठोकर मारकर चला जायेगा।

हम उन भगवान महावीर के अनुयायी हैं, जिन्होंने प्रमाद के त्याग और सम्यक् पुरुषार्थ का उपदेश दिया है। हम हमारे समय को, बुद्धि को, शक्ति को इस प्रकार के पुरुषार्थ में नियोजित करें, जिससे इस भव में भी आनन्दपूर्वक रहें और परभव में भी सद्गति के अधिकारी बनें। इन्हीं भावनाओं के साथ.... ■

हर जीव में भगवान नज़र आ जाए

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा कटला, महामन्दिर, जोधपुर में 15 मई, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

प्रत्येक जीव की स्वाभाविक माँग एवं आवश्यकता है भगवान के स्वरूप को प्राप्त करना। आप भगवान के स्वरूप को मञ्जिल कहें, लक्ष्य कहें, साध्य कहें अथवा किसी भी नाम से पुकारें, परन्तु इसे प्राप्त करना प्रत्येक आत्मा का परम कर्तव्य है। भगवान का स्वरूप बीज रूप में हर क्षण हर आत्मा में विद्यमान है। जीव का यह स्वाभाविक गुण किसी भी विभाव के द्वारा पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता। उस गुण पर आवरण आ सकता है, उसका विस्मरण हो सकता है, उसका अपहरण हो सकता है, परन्तु गुण का नाश नहीं हो सकता है। गौर करना, उस पर कभी आवरण आ सकता है अर्थात् है तो सही, किन्तु ढका हुआ है। विस्मरण हो सकता है जैसे-मैं अपनी पूँजनी कहीं रखकर भूल गया अथवा चश्मा कहीं रखने में आ गया। विस्मरण होने से उसे ढूँढ़ना पड़ता है। वस्तु है, जिसे ढूँढ़ा जा रहा है। कभी कोई उठाकर ले जा सकता है। भूल से या जानबूझकर अपहरण हो सकता है। आवरण आने पर, विस्मरण हो जाने पर अथवा अपहरण हो जाने पर भी उस चीज की सत्ता में कोई अन्तर नहीं अर्थात् उसका अस्तित्व तो है ही।

आठ कर्म हैं। इनमें दो कर्म ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय 'आवरण' के हैं-एक कर्म मोहनीय 'विस्मरण' का है, 'अपहरण' का कर्म अन्तराय है-ये चारों घाती कर्म हैं। आप प्रतिक्रमण में अरिहन्त भगवान की वन्दना में बोलते हैं-अद्वारह दोषरहित, बारह गुणसहित। चार घाती कर्मों के नष्ट होने पर अद्वारह

दोषरहित स्थिति बनती है। ज्ञानावरणीय कर्म से रहित होने से अज्ञान दोष समाप्त होता है। दर्शनावरणीय कर्म से रहित होने पर निद्रा दोष चला जाता है। अन्तराय कर्म की पाँच प्रकृतियों की समाप्ति से दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय दोष नष्ट हो जाते हैं। मोहनीय कर्म के क्षय से ग्यारह दोष निकल जाते हैं। ये हैं-मिथ्यात्व, अव्रत, राग, द्वेष, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा एवं कामविकार।

हर व्यक्ति अपने दोषों को देखने का प्रयास करे। मेरे भीतर अद्वारह दोष हैं, मैं उन्हें नष्ट करने का प्रयास करूँ। पहला दोष है-अज्ञान। गुणों का सीमित अथवा विपरीत होना दोष है। सीमित अस्तित्व को सुरक्षित रखने का प्रयास व्यक्तित्व का मोह है। किसी को दो-चार थोकड़े क्या याद हो गए, वह टर्-टर् करता है, जो कि नहीं होना चाहिए। पूर्णता के पहले किसी को रुकना नहीं है। लक्ष्य प्राप्ति के पूर्व रुकने का अवसर नहीं है। अपने एक भी गुण का अभिमान होना दोष है। आपमें-हममें हर व्यक्ति की आत्मा में सिद्धों के सारे गुण रहे हुए हैं। ध्यान रखना बाहर से दोष आते हैं, गुण नहीं। गुण तो भीतर में विद्यमान हैं। बाहर से दोष नहीं आए, इसी का नाम संवर है। दोषों को हटाने को निर्जरा कहते हैं।

भारत स्वयं आजाद नहीं हुआ। देशभक्तों ने आन्दोलन किया कि-'अंग्रेजों! भारत छोड़ो।' इस आन्दोलन के फलस्वरूप भारत अंग्रेजों की 200 साल की गुलामी से आजाद हुआ। साधक को भी अनादि काल की कर्मों की गुलामी से आत्मा को यदि आजाद

कराना है तो कर्मों के विरुद्ध आन्दोलन करना होगा। संकल्प करना होगा कि-‘कर्म पुद्गलों आत्म-प्रदेशों को छोड़ो।’ इस संकल्प के अनुरूप कार्य करने पर ही यह आत्मा कर्मों से स्वतन्त्रता को प्राप्त हो सकती है। पंचसंग्रह ग्रन्थ के माध्यम से बताया है कि पुद्गल में जरा-सी भी शक्ति नहीं है। बाहर की कार्मणवर्गणा में अनुभाग नहीं है, स्थिति नहीं है, शक्ति भी नहीं है। जब तक कषाय की चिकनाई नहीं है, तब तक कोई कर्म अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। यह दीवार है। जब तक इसमें चिकनाहट का अभाव है, रेत दीवार पर लगेगी तो सही, किन्तु ठहर नहीं सकती। दीवार सूखी है तो रेत स्वतः झड़ जाएगी और यही दीवार गीली है, तो रेत चिपक जायेगी।

आप घर की पुताई करते हैं। कली में चेप होता है फिर भी गोंद डालते हैं। क्यों? इसलिए कि दीवारों पर की गई पुताई टिकी रहे। घर में लकड़ी को चिपकाने के लिए फेविकोल लगाते हैं। जैसे कली में गोंद एवं लकड़ी को चिपकाने हेतु फेविकोल प्रयोग में लिया जाता है। उसी प्रकार कर्म वर्गणा भी कषाय के लेप से ही आत्मा पर चिपकती है। कषाय की चिकनाई के बिना कार्मण वर्गणा चिपक ही नहीं सकती। सिद्धों के कषाय नहीं होती तो कर्म वर्गणा उनमें नहीं चिपकती है। तब ही तो कहते हैं-

कर्म न काया, मोह न माया, भूख न तिरखा, रंक न राया।
एक स्वरूप अरूप अगुरुलघु, निर्मल ज्योति महान।।

जय-जय-जय भगवान।

उपाध्याय अमरमुनिजी ने कहा-नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः। नमस्तुभ्यं का मतलब है- तुम्हें नमस्कार। एक बार नहीं, तीन बार आपको नमस्कार कहकर नमोमह्यं-नमोमह्यं-नमोमह्यं अर्थात् मेरे को नमस्कार कहा है।

विनयचन्द्र चौबीसी में आता है-

तू सो प्रभु, प्रभु सो तू है, द्वैत कल्पना मेटो।
सत् चेतन आनन्द विनयचन्द्र, परमात्म-पद भेटो रे।।
सुझानी जीवा, भज ले रे जिन....।।

‘परमात्मा’ शब्द में बहुव्रीहि समास होता है। ‘परम आत्मा यस्य स परमात्मा।’ परम है आत्मा जिसकी, वह है परमात्मा। महान् है आत्मा जिसकी वह है महात्मा। आपको-हमको बाहर का भगवान नज़र आए जीवन की पहली उपलब्धि। हमें हर जीव में भगवान नज़र आए यह जीवन की दूसरी उपलब्धि। शरीर में परायापन नज़र आए तथा परमात्म स्वरूप का अनुभव हो, यह है तीसरी उपलब्धि।

आप जोधपुर आए। स्टेशन पर उतरे। सुन रखा है कि जोधपुर में मावे की कचोरी प्रसिद्ध है। स्टेशन के बाहर जहाँ भी दुकान दिखाई दी, वहाँ से मावे की कचोरी ली और खा ली। अब किसी ने कहा कि यह तो स्टेशन के बाहर की दुकान की कचोरी है। प्रसिद्ध कचोरी तो रावत की है। आप वहाँ तक पहुँचे। कचोरी ली और खा ली। अब अन्य किसी ने कहा कि रावत की कचोरी से भी बढ़िया कचोरी तो जयराम की है। वहाँ भी पहुँच गए कचोरी खरीदी और खा ली। साधन है तो कहीं भी पहुँचा जा सकता है। खाने-पीने की चीज हो या कपड़े अथवा अन्य सामान ही क्यों न हो, जहाँ भी अच्छा देखा-सुना उसे लेने के लिए व्यक्ति पहुँचता ही है। जहाँ मन लगता है, मन को भाता है, वहाँ पहुँचना भारी नहीं होता। भगवान में मन लगता है, भगवान मन को भाते हैं तो भगवान तक भी पहुँचा जा सकता है। लेकिन श्रद्धा करनी होगी कि भगवान हैं, भगवान सर्वश्रेष्ठ हैं, भगवान अनन्त सुख और सौन्दर्य के भण्डार हैं, भगवान मेरे हैं। आप माला जपने बैठते हैं, प्रभु का नाम लेते हैं, तो मन भटकता क्यों है?

आप बोलते हैं-तित्थयरा मे पसीयंतु। बोलना अलग बात है, लगना अलग। जहाँ प्रियता होती है, वहाँ आत्मीयता होती है। जोधपुर में हजारों लोग रहते हैं। सबके साथ प्रियता नहीं है, इसलिए आत्मीयता नहीं है। वह मेरा भाई, वह मेरा बेटा आदि जहाँ अपनापन होता है, उसकी स्मृति रहती है। भगवान मेरे अपने हैं। अपने हैं तो फिर भजन हो या न भी हो, लेकिन भगवान की स्मृति सदैव रहेगी।

आप 'सेवो सिद्ध सदा जयकार' प्रार्थना बोलते हैं, पर उसका पूरा अर्थ प्रायः सबको नहीं आता। हाँ, कुछ हो सकते हैं, जिनको कुछ अर्थ ज्ञात हो।

जपे जाप योगीश रात-दिन, ध्यावे हृदय मँझार।
तीर्थकर हूँ प्रणमे उनको, जब होवे अणगार॥
सेवो सिद्ध सदा जयकार॥

'नमो सिद्धाणं' कहकर सिद्धों को नमस्कार करके ही तीर्थकर दीक्षा लेते हैं। सामायिक के पाठों में नमस्कार महामन्त्र, लोगस्स और नमोत्थु णं ये तीन पाठ भगवान की स्तुति के हैं। भगवान की वाणी में तो बहुत पहले कह दिया कि वनस्पति में जीव है। जगदीशचन्द्र वसु ने लगभग 125 साल पहले बताया कि वनस्पति में जीव है। अब प्रदूषण और पर्यावरण के नाम से कुछ चर्चाएँ चल रही हैं। वनस्पति में जीव है और वनस्पति में ही नहीं, हर जीव में भगवान के स्वरूप की सत्ता है। नमस्कार महामन्त्र, लोगस्स और नमोत्थु णं में भगवान की स्तुति है तो इच्छाकारणं और तस्स उत्तरी के पाठ में समता के धरातल में प्रवेश करना बताया है।

यह मानकर चलिए कि अपने को धोखा दिए बिना दूसरों को धोखा दिया ही नहीं जा सकता। बुराई के बदले भलाई करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करना ही वीरता की निशानी है। एक होती है- कायरता। कायरता क्या है? काय+रता अर्थात् अपनी काया में रत रहना कायरता है। काया की रतता में सहकारी बनते हैं राग और द्वेष। काया की ममता का त्याग करके ही आत्म-विकास किया जा सकता है। संघ के कार्याध्यक्ष अशोकजी ने संयम अंगीकार कर लिया। संघ उन्हें अध्यक्ष पद पर देखना चाहता था, किन्तु उन्होंने कह दिया-मुझे तो दीक्षा लेनी है। उनके प्रयास से पी. शिखरमलजी सुराना को यह दायित्व दिया गया। धूलिया चौमासे में सुरानाजी के पिताजी को संथारा आया। वह इनका टर्निंग पाइन्ट था। जब बचपन में थे तब माताजी की बीमारी के समाचार गुरु-सेवा में आए। बीमारी के पश्चात् उनका देहावसान हो गया। गुरु महाराज (पूज्य

श्री हस्तीमल जी म.सा.) ने इनके पिताजी श्री पारसमलजी से कह दिया-“अबे नवा-जूना मत करना।” उस समय इनके पिताजी की आयु छोटी थी, दूसरा विवाह हो सकता था, परन्तु गुरु महाराज के शब्दों पर श्रद्धा थी, इसलिए दूसरा विवाह नहीं किया।

पारसमलजी सुराना एक-एक महीने गुरु महाराज के विहार में सेवा करते। रास्ते में जो भी बच्चे मिलते, उन्हें गोली (टॉफी) देकर कहते-“पीछे गुरु महाराज पधार रहे हैं, उनको हाथ जोड़ना।”

ऐसे सेवाभावी श्रावक इस संघ में रहे हैं। वे चाहे पारसमलजी सुराना हो, कुन्दनमलजी भंसाली हों, दौलतजी चौपड़ा हों। सेवा करने वाले उस श्रावक रत्न शिखरमलजी ने व्रत का स्वरूप समझा और लगन के कारण प्रतिक्रमण सीख लिया। सन् 2005 के पूरे चातुर्मास में संवर-साधना में सजगता रखी।

जिसे हर जीव में भगवान नज़र आए, वह हिंसा नहीं कर सकता। वह तो 'अन्तरगत न्यारो रहे, ज्यूँ धाय खिलावे बाल,' सूक्ति को धारण करके निस्पृह जीवन जीता है। ऐसा सोचने वाला जब भी स्नान करने जाता है तो मन में आता है कि मैं पानी के असंख्य जीव जो कि कभी मेरे माता-पिता रहे हैं, उनकी हत्या कर रहा हूँ।

आपने नामदेव का नाम सुना होगा। वह पेड़ पर प्रहार करता तो उसे ऐसा लगता कि मैं कितने जीवों की हत्या कर रहा हूँ। जैसे मेरे में जीव है, वैसे ही पेड़ में भी जीव है। मेरे को जैसे दुःख पहुँचता है, पेड़ के जीवों को भी दुःख पहुँचता है। उसने अपने अंगूठे पर कहो या हाथ पर कुल्हाड़ी का प्रहार किया और उस वेदना से पेड़ की वेदना की तुलना करके सम्यक् उदाहरण प्रस्तुत किया।

भगवान महावीर के जीव ने कानों में कीले टुकवाए। उस समय भगवान महावीर का चिन्तन था कि मैंने पूर्व में उसे कष्ट दिया था, वह मेरे द्वारा किये पाप से मुझे मुक्त कर रहा है। भगवान की उदारता एवं क्षमाभावना हमें आज भी प्रेरणा देती है। न्याय अपने पर, क्षमा दूसरों पर करें। घृणा से कभी घृणा समाप्त नहीं

होती।

मोहम्मद साहब के समय में एक पुरुष की पचास-पचास तक शादियाँ होती थी। एक सिरफिरे ने मोहम्मद साहब का सिर कलम करने की भावना से तलवार हाथ में लेकर प्रण किया कि जब तक मोहम्मद साहब का सिर कलम नहीं करूँगा तब तक तलवार को म्यान में नहीं रखूँगा। वह चला गया मोहम्मद साहब को मारने। गर्मी का प्रकोप था तीव्र गर्मी में रेगिस्तान की रेत की तपन अलग। गर्मी में प्यास से कण्ठ सूख रहे थे। उसने पूछा- “कहाँ है मोहम्मद साहब? मोहम्मद साहब ने कहा- “अरे भाई! तुम गर्मी में आए हो थोड़ा विश्राम करो। इतना चलकर आए हो, पहले ठण्डा पानी पीओ।” उसे मटकी का ठण्डा पानी पीने को दिया। पास में बकरी बँधी हुई थी। बकरी ऐसा दुधारू प्राणी है कि इसको जब भी दूहो तो वह दूध देती ही है। बकरी का दूध निकाला और उसे गर्म करके उसमें ठण्डी रोटी चूर कर दी। अब उसका गुस्सा कुछ शान्त हुआ। शान्त होने के बाद उसने पूछा- “मोहम्मद साहब कहाँ है?”

जिसने गर्मी की तीव्रता में पीने को पानी दिया, रोटी खिलाई, थोड़ा विश्राम करने को कहा, वह व्यक्ति बोलता है- “मैं हूँ।”

तुम हो मोहम्मद साहब? पहले जो गुस्सा था, वह शान्त तो हुआ ही, साथ ही उनकी सहृदयता देखकर हत्या करने का मन अब पूर्णतया बदल गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर को कोई मारने आ गया। टैगोर ने कहा- “भाई थोड़ा रुक जाओ, मैं कविता पूरी कर लूँ, फिर मार देना।”

चम्पारन में गाँधीजी को मारने के लिए पूरी तैयारी कर ली गई। गाँधीजी को भी यह बात मालूम पड़ गई। गाँधीजी मारने वाले के घर रात को दस बजे पहुँच गए और बोले- “आपने गुण्डों को पैसे देकर मुझे मरवाने की सुपारी दी है। मैं आपके सामने खड़ा हूँ, आप मुझे मार सकते हो।” गाँधीजी की क्षमाभावना से वह मरवाने वाला व्यक्ति द्रवित हो गया।

आपको-हमको वीतराग वाणी मिली है। जैनधर्म बहुत ऊँचा है, इसकी जय-जयकार करके ही न रहे, इस ऊँचे धर्म को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करें। आपको बाहर का भगवान नज़र आए, हर व्यक्ति में भगवान नज़र आये और अपने अन्दर का भगवान भी नज़र आना चाहिए।

मैं कुछ नहीं.....।

पर्युषण पर्व

श्री मनोज कुमार जैन 'पाटोली'

1. आत्मदीप को प्रज्वलित करने का आध्यात्मिक अनुष्ठान है- पर्युषण पर्व।
2. आठ दिन जप-तप, ध्यान-स्वाध्याय, संयम की साधना है- पर्युषण पर्व।
3. आत्मा से परमात्मा बनने के लिए स्वयं को उस दिशा में अग्रसर करना है- पर्युषण पर्व।
4. आत्मदर्पण में स्वयं को देखने का अवसर है- पर्युषण पर्व।
5. दूसरों की प्रवृत्तियों का नहीं, अपनी वृत्तियों का निरीक्षण करना है- पर्युषण पर्व।

6. संयम, त्याग और आत्मचेतना को विकसित करने का महान् अवसर है- पर्युषण पर्व।
7. भीतर-बाहर से सरल होकर सरिता की तरह बहना है- पर्युषण पर्व।
8. आत्मोत्थान एवं जीवनोत्कर्ष के लिए अमोघ अस्त्र है- पर्युषण पर्व।
9. आत्मा पर चढ़ी भव-भव की कर्म-कालिमा को हटाना है- पर्युषण पर्व।
10. वर्षभर में कृत गलतियों के लिए क्षमा-प्रार्थना कर प्रेम, मैत्री, सदाचार और सद्विचार को गले लगाना है- पर्युषण पर्व।

-61/484, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

सम्यक् प्रणाम की महत्ता

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 24 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर, जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन स्थानीय संघाध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर के द्वारा करवाया गया। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

भारतीय संस्कृति धर्मप्राण संस्कृति है। यहाँ के कण-कण में, रग-रग में, अणु-अणु में धर्म समाया हुआ है। यहाँ की संस्कृति अकड़कर चलने वालों को उखाड़ कर फैंक देती है और झुककर चलने वालों को सरताज बना देती है।

यहाँ प्रातः काल की शुभवेला में प्रायः दो कार्य प्रतिदिन किये जाते हैं-प्रणाम और प्राणायाम। प्रणाम करने से मन स्वस्थ रहता है और प्राणायाम करने से तन स्वस्थ रहता है।

प्रणाम, मन के मेल को धोता है, अहं को गलाता है, रिशतों को मधुर बनाता है, अन्तर को शुद्ध करता है और एक-दूसरे को ऊर्जावान् बनाता है।

प्रणाम का वर्णन आगमों में अलग-अलग रूपों में देखने को मिलता है। जैसे-नमस्कार के रूप में, वन्दना के रूप में, विनय के रूप में, अनुमति के रूप में।

प्रणाम करने से दुआएँ मिलती हैं और दुआएँ अपने आपमें दौलत का काम करती है। कहावत भी है-जब दवा काम नहीं आती तब दुआ ही दवा का काम कर जाती है।

प्रणाम करने से माता-पिता-गुरुजनों से व्यक्ति को आशीर्वाद प्राप्त होता है और आशीर्वाद हमेशा व्यक्ति को आशावादी और आदर्श पथ पर चलने हेतु संकल्पित करता है। जीवन में कुछ ऐसे पल, कुछ ऐसे क्षण, कुछ ऐसे मोड़ आते हैं जब कोई सहारा नज़र नहीं आता। तब आश्रय निराश्रय में, आधार निराधार में और विश्वास अविश्वास में बदलता नज़र आता है उस समय

माता-पिता-गुरुजनों के द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद नीरस जीवन को सरस बनाने में, विकृत मन को सुकृत में लगाने में, चञ्चल मन को स्थिर करने में, बिगड़े काम को बनाने में, रूठे को मनाने और टूटे को जोड़ने में आशा का नव-सञ्चार करता है।

याद रखें-माता-पिता का आशीर्वाद भाग्यवान और गुरुजनों का आशीर्वाद गुणवान बनाता है। माता-पिता-गुरुजन का आशीर्वाद प्रणाम करने पर ही मिलता है।

जीवन में सफल होने के लिए सबसे पहले जरूरत होती है-बड़ों के आशीर्वाद की और बिना प्रणाम किये आशीर्वाद नहीं मिलता, इसलिए पहले प्रणाम होता है फिर आशीर्वाद रूप परिणाम प्राप्त होता है।

करेंगे प्रणाम तो पाएँगे अच्छे परिणाम

बन्धुओं! प्रणाम करने से मन के परिणाम अच्छे रहते हैं। जब मन के परिणाम श्रेष्ठ होते हैं उस समय किए गए किसी भी कार्य का परिणाम भी श्रेष्ठ ही आता है। इससे जीवन प्रामाणिक बनता है। इसलिए हम मन के परिणामों को शुभ करने हेतु, कार्य का परिणाम (रिजल्ट) पाने हेतु और जीवन को प्रामाणिक बनाने के लिए उपकारी जनों के चरणों में प्रतिदिन प्रणाम करें।

बन्धुओं! प्रणाम दो प्रकार का होता है-1. सामान्य प्रणाम और 2. सम्यक् प्रणाम। सामान्य प्रणाम वह होता है जिसमें प्रणाम करने की मात्र औपचारिकताएँ निभाई जाती हैं। भाव-शून्य होकर श्रद्धा-विहीन होकर शिष्टाचार हेतु जो प्रणाम किया जाता है वह सामान्य प्रणाम कहलाता है, जो कि आज व्यवहार-जगत में

बहुत प्रचलित है। जिसमें प्रणाम का हेतु क्या है? प्रणाम की विधि क्या है? प्रणाम का प्रयोजन क्या है? प्रणाम का प्रारूप क्या है? इन सबको जाने बिना शिष्टाचार निभाने हेतु किया जाता है, वह सामान्य प्रणाम कहलाता है।

वर्तमान में सामान्य प्रणाम भी विकृत होता जा रहा है, जिसमें मात्र घुटने तक हाथ झुकाने को ही प्रणाम का रूप समझ लिया जाता है।

सामान्य प्रणाम में ऊर्जा का संचार और संग्रहण नहीं होता है, क्योंकि हमारे शरीर से ऊर्जा का प्रवाह पैरों और हाथों की दस-दस अंगुलियों से होता है। जब हम बड़ों के पैरों के अंगूठे को आज्ञा-केन्द्र से संस्पर्शित करते हैं तब हमको सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। बड़ों का हाथ हमारे सिर पर आशीर्वाद रूप में प्राप्त होने पर हाथों की अंगुलियों से ऊर्जा का संग्रहण होता है, इसलिए सामान्य प्रणाम नहीं, सम्यक् प्रणाम करें।

सम्यक् प्रणाम में भावों की शुद्धि है, साधना की वृद्धि है और यह ही प्रणाम की सही विधि है।

आचार्य मानतुङ्ग ने अपनी कालजयी कृति भक्तामर स्तोत्र में भगवान आदिनाथ की स्तुति करते हुए सामान्य प्रणाम नहीं, अपितु सम्यक् प्रणाम किया। भक्तामर स्तोत्र की प्रथम गाथा में कहा-सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादौ अर्थात् युग की आदि करने वाले जिनेन्द्र भगवान के जिन-पाद में सम्यक् प्रणाम।

सम्यक् प्रणाम में माथा ही नहीं, मन भी झुकता है और मन ही नहीं मान भी झुकता है। इसलिए जब हम उपकारी जनों के चरणों में प्रणाम करें तब माथा, मन और मान तीनों झुकाकर सम्यक् प्रणाम करें।

सम्यक् प्रणाम में श्रद्धेय के प्रति श्रद्धा-भाव, आराध्य के प्रति आस्था-भाव, उपकारी के प्रति कृतज्ञता-भाव, बड़ों के प्रति आदर-भाव समाहित होता है, जिसके फलस्वरूप वह बाह्य रूप में माता-पिता, गुरु-वृद्धजनों के चरणों में घुटने टेककर, सादर शीष झुकाकर, बड़ों से आशीष की प्राप्ति करता है। सम्यक् प्रणाम से उसका जीवन फलता-फूलता है।

आन्तरिक रूप में वन्दे तद् गुण लब्धये- आपके गुण के समान मैं भी आन्तरिक रूप से गुण-सम्पन्न बनूँ, गुण-धारण कर गुणी बनूँ, यह संकल्प करता है।

सम्यक् प्रणाम करके जो माता-पिता के चरणों में घुटने टेक देता है उस व्यक्ति को अन्य कहीं घुटने टेकने की नौबत नहीं आती, क्योंकि उसका जीवन खुशहाल हो जाता है।

सम्यक् प्रणाम भीतर में ऋजुभाव लाता है, ऋजुभाव ही भविष्य में ऋजु गति (मोक्ष गति) कराने में निमित्तभूत बनता है।

जो प्रभु के सामने झुकता है वह सबको अच्छा लगता है और जो गुणी जनों और उपकारी जनों के सामने झुकता है वह वास्तव में अच्छा होता है। जब हम सम्यक् प्रणाम करते हैं तब हमारे भाव (आन्तरिक) और हाव-भाव (बाह्य) दोनों श्रेष्ठ होते हैं, दोनों शुद्ध होते हैं, इसलिए हम संकल्प करें कि सामान्य प्रणाम नहीं, सम्यक् प्रणाम करेंगे।

आधुनिक युग में प्रणाम की प्रणाली धूमिल सी होती जा रही है। प्रणाम के संस्कारों का घर-परिवारों में अन्तिम संस्कार होता जा रहा है। छोटे होने पर यदा-कदा प्रणाम करने की प्रथा देखी जाती है मगर बड़े होने पर, शादी-शुदा होने पर, योग्यता प्राप्त करने पर व्यक्ति प्रणाम करने में संकोच-सा अनुभव करता है, अपमान-सा महसूस करता है। यह अहंकार युक्त, दम्भ युक्त मानसिकता का संसूचक है।

जो पिता के चरण-स्पर्श करे वह कभी सम्पत्तिहीन नहीं होता। जो माता के चरण-स्पर्श करे वह कभी संवेदनहीन नहीं होता। जो भाई के पैरों को छूता है वह कभी गमगीन नहीं होता। जो बहन के पैरों को छूता है वह कभी चरित्रहीन नहीं होता, जो गुरु के पैरों को छूता है उस जैसा कोई खुशनसीब नहीं होता।

सम्यक् प्रणाम एक ऐसा सेतु है जो आत्मा को अध्यात्म भावों से जोड़ता है। सम्यक् प्रणाम एक ऐसा प्रेरणा पुञ्ज है जो पाप का विनाश और धर्म का विकास

करता है। सम्यक् प्रणाम एक ऐसा आध्यात्मिक मार्ग है जो व्यक्ति को नैतिक, धार्मिक, आन्तरिक भावों से जोड़ता है। सम्यक् प्रणाम वे बिन्दु हैं जिनमें साधना जगत का सिन्धु समाया हुआ है। सम्यक् प्रणाम करने से आराध्य और हमारे बीच की दूरी घट जाती है, समाप्त हो जाती है।

प्रणाम के पाँच प्रकार हैं-1. एकाङ्ग-सिर झुकाना, 2. द्व्यङ्ग-दोनों हाथ जोड़ना, 3. त्र्यङ्ग-दोनों हाथ एवं मस्तक झुकाना, 4. चतुरङ्ग-दोनों घुटने एवं दोनों हाथ नमाना और 5. पञ्चाङ्ग-दो हाथ, दो पाँव और सिर झुकाना। जैनदर्शन में पञ्चाङ्गयुक्त विधि सहित वन्दन-नमस्कार करने का प्रावधान है।

सारा जहाँ उसी का है जो मुस्कुराना जानता है, रोशनी उसी की है जो शमाँ जलाना जानता है। हर जगह मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और जैन स्थानक हैं, लेकिन भगवान उसी का है जो झुकना जानता है। सर झुकाने की खूबसूरती भी क्या कमाल की होती है। धरती पर सर रखो, दुआ आसमान में कबूल हो जाती है।

पहले व्यक्ति घर से जब किसी काम से गाँव के बाहर जाता था तब बड़ों के चरण-स्पर्श और प्रभु का स्मरण करके जाता था। परन्तु आज व्यक्ति घर से बाहर निकलने पर मोबाइल की बैट्री चार्ज है या नहीं, यह देखकर निकलता है। पहले मन की बैट्री को (प्रणाम से) चार्ज करते थे आज मोबाइल की बैट्री को चार्ज कर रहे हैं, इसलिए आज व्यक्ति की जब में मोबाइल तो मिल जाता है, मगर चेहरे से स्माइल गायब होती जा रही है।

भारतीय आर्य संस्कृति को यदि हम पुनः जीवित करना चाहते हैं तो यह संकल्प करें कि हम गुणी जनों,

उपकारीजनों को नित्य प्रति प्रणाम करेंगे। प्रश्न है- महाराज सा.! हम तो खुद ही घर में बड़े हैं, माता-पिता है नहीं, फिर प्रणाम किसको करें? तो देखिए-माता-पिता शरीर की दृष्टि से भौतिक पिण्ड रूप में आपके सामने नहीं हैं, आपके साथ नहीं है, मगर उपकार की दृष्टि से माता-पिता-गुरुजन हमेशा जीवित रहते हैं। हम उनके उपकारों को नमन करें। हम उपकारों को स्मरण कर कृतज्ञता ज्ञापित करें, यह भी प्रणाम की एक प्रणाली है।

हम देखते हैं-पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को, जो आज हम सबके पूज्य हैं, श्रद्धा के आयाम हैं, संघ के नायक हैं, आचार्य हैं, आचार्य होते हुए भी प्रतिदिन प्रातःकाल अरिहन्त भगवान के 12 गुणों को भावपूर्वक 12 वन्दना करते हैं।

जिस घर में बड़ों में प्रणाम की व्यवस्था रहती है उस घर में छोटों में भी वही संस्कार विरासत में आते चले जाते हैं। इसलिए आज मैं सबसे पहले बड़ों से यह कहना चाहता हूँ कि सम्यक् प्रणाम की शुरुआत स्वयं से करें। स्वयं का किया गया एक प्रणाम अनेकों के लिए स्वतः प्रेरणास्पद बन जाता है।

प्रणाम की महत्ता एवं विशदता का संगान आप सभी ने सहृदयता से, श्रद्धा-भक्ति से श्रवण किया। आप घर-परिवार में जाकर प्रणाम कैसे करें? प्रणाम के प्रकार और प्रणाम की विवेचना को बताने का प्रयास करें, साथ ही आज से अपने जीवन के प्रत्येक उपकारी के प्रति कृतज्ञता भाव से नत-प्रणत होकर प्रणिपात करें ताकि हम प्राणातिपात अर्थात् जीवों की भाव-हिंसा से, अनादर के भाव से बच सकें। इन्हीं शुभभावों के साथ.....

जिनवाणी पर अभिमत

श्री अर्जित भण्डारी

जिनवाणी मई 2023 में श्रीमती अंशुजी सुराणा, जयपुर का हृदयस्पर्शी लेख भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के गुणों के सम्बन्ध में पढ़ा, मन

को इतना आनन्द और प्रसन्नता प्राप्त हुई, उसे शब्दों में लिखना सम्भव नहीं। पढ़कर मन अत्यन्त गद्गद और भावुक हो गया। भावी आचार्यश्री के जितने गुण ज्ञात थे, उससे कई गुना गुण लेखनी से ज्ञात हुए।

-दास्या हाउस, जोधपुर (राजस्थान)

संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान

संकलित

जिज्ञासा— आगम को मूल पाठ के रूप में याद करना क्यों आवश्यक है? उनका मात्र अर्थ पढ़ें और उसका चिन्तन करें तो क्या पर्याप्त नहीं है?

समाधान—मूल पाठ याद करने के अनेक लाभ हैं—

- ◆ मूल पाठ याद हो तो अनुप्रेक्षा करना सरल है। एक गाथा का अन्य गाथाओं से तुलनात्मक अध्ययन, अनुप्रेक्षण आदि कर सकते हैं।
- ◆ मूल पाठ को याद करके ही प्रभु की मूल वाणी की परावर्तना की जा सकती है।
- ◆ मूल भाषा प्रभु की भाषा है। भक्त के लिए भगवान की हर चीज भक्ति का माध्यम बनती है। उनकी देहाकृति, उनकी भाषा, उनके अतिशय, उनके गुण, उनकी देशना, भगवान से जुड़ी हुई सभी अवस्थाएँ भक्त के हृदय में श्रद्धा के तार को झंकृत करने में उपादेय निमित्त बनती हैं।
- ◆ मूल पाठ का बार-बार परावर्तन होने पर ऐसे संस्कार बनते हैं कि देवगति में भी वे संस्कार साथ जाते हैं। वहाँ भी उनका परावर्तन करते हुए भोगों से अनासक्त रह सकते हैं।
- ◆ मूल पाठ कण्ठस्थ रहने से श्रुत की परम्परा अविच्छिन्न रहती है।
- ◆ मूल आगम का स्वाध्याय ही शुद्ध है, जो कि गणधर भगवन्तों के द्वारा प्रथित है। भगवान के मुख से निःसृत वाणी सीधी गणधर भगवन्तों द्वारा श्रवण की जाती है और वे ही मूल आगम वाणी की रचना करते हैं। हमारी पुण्यवानी है कि हमें इतनी शुद्ध मूल वाणी का स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हुआ है।
- ◆ कुछ भी धारणा बनाने एवं सिद्धान्त को समझने में मूल पाठ को ही प्राथमिक माना जाता है। अर्थ की अपेक्षा मूल पाठ को ही हर सम्प्रदाय के द्वारा

प्राथमिक रूप से मान्य किया जाता है।

- ◆ मूल पाठ के स्वाध्याय से प्रायश्चित पूर्ण करने में सहयोग रहता है।
- ◆ आगम की अध्ययन विधि में पहले मूल कंठस्थ करना बताया गया है, फिर सामान्यार्थ, फिर विशेषार्थ की बात कही है।
- ◆ प्रथम प्रहर में स्वाध्याय में मूल सूत्र पाठ की ही प्राथमिक रूप से जिज्ञासा है। मूल आगम स्वभावतः ही आनन्द प्रदाता एवं रसदाता अधिक होता है।
- ◆ मूल आगम औषधिवत् है, जो भव-भव के रोग को मिटाता है। मूल में ही अनन्त गम एवं अनन्त पर्यव छुपे हुए हैं। अर्थ तो सीमित होता है।
- ◆ मूल श्रुत रूपी वृक्ष का मूल है, तो अर्थ उस वृक्ष के पत्ते हैं।

जिन्हें मूल पाठ कण्ठस्थ नहीं होता अथवा उग्र अधिक हो गई है, वे साधक अर्थ की स्वाध्याय से भी अपनी ज्ञानाराधना का विकास कर सकते हैं। अर्थरहित मूल भी विशेष निर्जरा का हेतु नहीं बन पाता है। अतः अर्थ सहित मूल का अभ्यास ही साधक के लिए श्रेष्ठ है। अर्थ के बिना भी मनोरथ सिद्ध नहीं होता। जिनशासन उपासक को मूल एवं अर्थ दोनों के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखकर पुरुषार्थरत रहना चाहिए।

जिज्ञासा— संयम की गुणवत्ता (Quality) को बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए?

समाधान— अंग्रेजी में एक पंक्ति है— If you will not grow you will die. अर्थात् अगर आप बढ़ते नहीं हैं तो आप जीते नहीं हैं। जीने के लिए बढ़ना जरूरी है। वृक्ष के पास दो विकल्प हैं या तो वह बढ़ता है, फलता-फूलता है अथवा वह मुरझाकर झड़ जाता है। आगमानुसार भी अवस्थित परिणाम तो 7 समय ही रहते

हैं, उससे अधिक समय होने पर परिणाम या तो वर्धमान होते हैं या हीयमान होते हैं। अवस्थित अधिक समय तक नहीं रह सकते। हीयमान हमें होना नहीं है तो वर्धमान ही एकमात्र विकल्प हमारे पास अवशेष रहता है।

इस पथ को अपनाने वाली हर जीवात्मा बढ़ना तो चाहती है, पर बढ़ना कैसे? यह एक बड़ा प्रश्न उनका रहता है। उसके अनेक उपाय ज्ञानी भगवन्तों के ज्ञान में हैं, यहाँ मात्र कुछ निवेदन है-

स्व-निरीक्षण-5 महाव्रत, 5 समिति, 3 गुप्ति, साधु के 27 गुण आदि किसी भी विषय को लेकर हम हमारी कमियों की सूची (List) बनाते हैं तो हमें हमारे अवरोध समझ में आते हैं।

स्वपरीक्षण-उपर्युक्त विषयों में हम स्वयं को अंक (Marks) दें कि कितने नियम ऐसे हैं, जिन्हें हम हर हाल में पालते हैं, कितने में तकलीफ आने पर कमजोरी आ जाती है और कहाँ-कहाँ हम प्रमादी ही बने हुए हैं।

लक्ष्य निर्धारण-अपनी 3 कमियों को हर माह लक्ष्य रखकर दूर करने का पूरा-पूरा ईमानदारी से प्रयास करें तो निर्दोषता प्रकट होती है।

गुण-ग्राहकता-हर साधक में गुण देखें एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयास भी करते रहें।

प्रेरणा लें-जिस साधक का कोई दोष दिखता है, वह दोष हमें अच्छा नहीं लगता तो उसके प्रति संकल्प करें कि हम अपने जीवन में उस दोष से पूरा बचाव करेंगे।

आलोचना-प्रायश्चित्त-अपनी गलती अर्थात् विचार सम्बन्धी, वचन सम्बन्धी और काया सम्बन्धी सभी गलतियों को प्रतिदिन पारदर्शी बनकर गुरुदेव को कहें एवं उसका प्रायश्चित्त लें। प्रायश्चित्त उतारकर उन्हें निवेदन करें कि आपके द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त ग्रहण कर आपकी कृपा से दोष-निवृत्ति हो गई है।

गुरु पृच्छा-15-20 दिन में एक बार आराध्य गुरुदेव से शिक्षा की पृच्छा करें। उस शिक्षा को लिखकर रखें और जब तक नई शिक्षा न मिले तब तक प्रतिदिन उसे पढ़कर जीने का प्रयास करें।

स्वाध्याय-गुर्वाज्ञा होने पर आध्यात्मिकता की पुष्टि हो, ऐसी पुस्तकों का स्वाध्याय करें। एक घण्टा पढ़कर मुख्य सार रूप शिक्षा क्या मिली, उसे लिख लें और रात में सोने से पूर्व उसका चिन्तन-मनन करें। मुख्यतः आगम की 5 गाथा की चिन्तना प्रतिदिन करें।

जीवनी वाचन-संयम में सफल साधकों की प्रतिवर्ष कम से कम एक जीवनी तो अवश्य पढ़ें। उससे हमारे संयम-जीवन में भी उत्साह बढ़ता है।

एकान्त सेवन-गुरु आज्ञा लेकर प्रतिदिन आधा घण्टा कुछ प्रवृत्ति न करके स्वयं के साथ रहें। स्वयं के विचारों की अनुप्रेक्षा करें, स्वयं की स्थिति को पढ़ें।

सत्संगति-जिनकी संगति से संयम के प्रति उत्साह बढ़ता है, उनकी संगति गुरु आज्ञा से करें और संयम के प्रति अनुत्साह वालों की संगति से दूर रहें।

कल्पना करें-आँख बन्द करके हम स्वयं को उस उच्च दशा में अनुभव करें, जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं। जिसे हम प्रतिदिन देखते हैं, वहाँ हम पहुँच जाते हैं।

समर्पण-मिट्टी कुम्भकार को समर्पित होती है, पाषाण शिल्पी को समर्पित होता है, रत्न जौहरी को समर्पित होते हैं, फलस्वरूप वे मूल्यवान और श्रेष्ठता को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार हमें अपने आराध्यों के चरणों में विकल्प रहित समर्पण रखना चाहिए। विकास स्वतः होने लगेगा।

तीव्र पिपासा-प्यास सच्ची हो तो प्यासे को सागर मिल ही जाता है अथवा सागर स्वयं प्यासे के पास आ जाता है। आज नहीं तो कल लहर को किनारे तो आना ही पड़ेगा। उसी प्रकार प्यास सच्ची रखेंगे तो हम भी अपने मनोरथ को अवश्य पूर्ण करेंगे।

हृदय से प्रार्थना-भोले बालक बनकर स्वयं के असामर्थ्य का अनुभव करके हृदय से भगवान की प्रार्थना करें, निर्दोष बनाने की विनति करें तो सफलता मिलती है।

ये मात्र कुछ उपाय हैं। ज्ञानी भगवन्त जो विकसित हैं, विशेष तो उनसे ही हमें मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

■

जैन ग्रन्थों में मुद्रा और विनिमय

डॉ. दिलीप धींग

समाज में हर व्यक्ति हर कार्य नहीं कर सकता है। सबमें सब योग्यताएँ नहीं होती हैं। बहुत योग्यताएँ रखने वाला भी सारे कार्य अकेला नहीं कर सकता है। हर जगह हर चीज उपलब्ध भी नहीं होती है। यहीं पर समाज का जन्म होता है और समाज की इन व्यवस्थाओं को नियमित और नियन्त्रित करने के लिए अर्थशास्त्र का जन्म होता है।

पारस्परिक निर्भरता का सिद्धान्त

आर्थिक और गैर-आर्थिक, जीवन और जगत का सारा व्यापार-व्यवहार 'पारस्परिक निर्भरता के सिद्धान्त' पर चलता है। जैन प्रतीक के साथ प्रयुक्त तत्त्वार्थसूत्र का बोध-वाक्य 'परस्परपग्रहो जीवानाम्' पारस्परिक निर्भरता का ही स्वर्णिम सिद्धान्त है। अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में यह सिद्धान्त बड़ा मूल्यवान और अर्थपूर्ण है। आध्यात्मिक जीवन में भी किसी न किसी रूप में पारस्परिक निर्भरता रहती है। वन में जाकर साधना करने वाला भी निरपेक्ष रूप से स्व-निर्भर नहीं हो सकता है। योगी को भी सहयोगी की आवश्यकता होती है।

पारस्परिक निर्भरता का सिद्धान्त विकास और समृद्धि का मूल है। यदि इसे निष्ठा और ईमानदारी से निभाया जाए तो यह सुव्यवस्था और शान्ति का हेतु भी है। इस सिद्धान्त का आरम्भ आर्थिक जगत में वस्तुओं की अदला-बदली के रूप में हुआ, जिसे वस्तु-विनिमय कहा जाता है। वस्तु-विनिमय, विनिमय की आरम्भिक प्रणाली थी, जो आगम युग में भी विद्यमान थी। परन्तु, इसके साथ ही आगम युग में मुद्रा का प्रचलन भी विद्यमान था।

मुद्रा का आविष्कार

जैसे विज्ञान के विकास में चक्र का आविष्कार

महत्त्वपूर्ण था, उसी प्रकार वाणिज्य के विकास में मुद्रा का आविष्कार महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा ने वस्तु विनिमय की सारी बाधाओं और सीमाओं को पार कर लिया। मुद्रा से व्यापार, वाणिज्य, सभ्यता और संस्कृति के विकास में गतिशीलता आ गई। के.सी. जैन के अनुसार ईस्वी पूर्व छठी शताब्दी में यानी भगवान महावीर के युग में पंचमार्क सिक्के प्रचलित थे।¹ ए. कनिंघम के अनुसार ईस्वी पूर्व 1000 में, तदनुसार भगवान पार्श्वनाथ के युग में भी पंचमार्क सिक्के प्रचलित थे।² ये सिक्के ढालकर बनाये जाते थे। धातु को कूटकर या काटकर भी सिक्के बनाये जाते थे। उपाध्याय विनयविजय के अनुसार राज्य के अलावा राज्य की अनुमति से विभिन्न संस्थान और निगम इन सिक्कों को जारी करते थे।³

मुद्रा

सूत्रकृताङ्गसूत्र और उत्तराध्ययनसूत्र के अनुसार मास, अर्धमास और रुवग क्रय-विक्रय के साधन थे।⁴ उपासकदशांग और ज्ञाताधर्मकथांग में हिरण्य और सुवर्ण शब्दों का एक साथ प्रयोग हुआ है, जबकि निशीथ सूत्र में सुवर्ण शब्द स्वतन्त्र रूप से आया है।⁵ नासिक गुफा लेख (सन् 120) के अनुसार एक सुवर्ण 35 रजत-कार्षापण के बराबर होता था। वासुदेव उपाध्याय ने हिरण्य को स्वर्ण-पिण्ड (बुलियन) कहा जबकि चिति स्वर्ण-सिक्कों को सुवर्ण कहा है। छोटे सिक्कों को सुवर्णमासक (सुवर्णमाषक) कहा जाता था।⁶ डॉ. भण्डारकर ने सुवर्णमासक का वजन एक मासा बताया है।⁷ एक ही प्रकार की मुद्रा का विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न नाम तथा भिन्न मूल्य होता था। ऐसा मुद्रा की क्रय-शक्ति, क्षेत्र-विशेष की भाषा और क्षेत्रीय राज्य के कारण होती थी। मुद्रा की क्रय-शक्ति के आधार पर राज्य की समृद्धि का आँकलन होता था।

स्वर्ण-सिक्के एवं दीनार

स्वर्ण-सिक्कों को सुवर्ण कहा गया है, जो 32 रत्ती के होते थे। कल्पसूत्र के अनुसार भगवान महावीर की माता को चौदह स्वप्न आते हैं। उनमें एक है-लक्ष्मी। लक्ष्मी के वर्णन में बताया गया कि लक्ष्मी के वक्षस्थल पर स्वर्ण मुद्राओं का हार शोभित हो रहा था। यहाँ स्वर्णमुद्रा के लिए 'दीणार' शब्द भी प्रयुक्त है।⁸ स्वर्णमुद्रा के लिए दीनार शब्द सदियों तक विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों में प्रयुक्त होता रहा। निशीथचूर्णि के अनुसार मयूरांक राजा ने अपने नाम से चिह्नित दीनार चलाये थे।⁹ उत्तराध्ययनचूर्णि में वर्णित एक प्रसंग में एक व्यापारी एक गणिका को 800 दीनार देता है।¹⁰ आवश्यकचूर्णि में राजा कर्पाटिक को एक युगलवस्त्र और दीनार भेंट स्वरूप देता है।¹¹ दशवैकालिकचूर्णि में भी दीनार का उल्लेख है।¹² चूर्णिसाहित्य में दीनारों के माध्यम से लेन-देन के उल्लेखों से पता चलता है कि उस समय की स्वर्ण-मुहरों में दीनार मुख्य था। दीनार शब्द रोम तक भी पहुँचा। वहाँ सिक्के के लिए प्रयुक्त 'डिनेरियस' शब्द दीनार का रूपान्तरण माना जाता है।¹³

रजत-सिक्के

सूत्रकृताङ्गसूत्र में रुवग का उल्लेख चाँदी के सिक्कों के लिए हुआ है। रुवग के लिए रुप्य शब्द भी मिलता है। राजस्थानी में 'रूपा' शब्द चाँदी का पर्याय है। वर्तमान में हिन्दी एवं अंग्रेजी में मुद्रा के लिए प्रचलित शब्द 'रुपया' का उद्गम रुवग से हुआ है। मूल्य की दृष्टि से सोने के बाद चाँदी ही ऐसी धातु है जिसका मुद्रा ढालने में बहुत उपयोग हुआ। प्रचलन की दृष्टि से रजत-सिक्के स्वर्ण-सिक्कों से अधिक विस्तृत क्षेत्र में और दीर्घ अवधि तक चलन में रहे। इसकी वजह स्वर्ण की तुलना में चाँदी की कम कीमत और अधिक सुलभता है। खुदाइयों में भी प्राचीन काल के प्रचुर रजत-सिक्के मिले हैं। रुवग के अलावा चाँदी के सिक्कों में कार्षापण, अर्द्ध-कार्षापण (आधे मूल्य का कार्षापण), पाद-कार्षापण (चौथाई मूल्य का कार्षापण), माश-कार्षापण (16वें मूल्य का

कार्षापण), सुभाग, नेलग, द्रम्म आदि के उल्लेख मिलते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र (20/42) में खोटे कार्षापण (कूडकहावणे) का उल्लेख मिलता है। अनधिकृत तौर पर लोग खोटे सिक्के (कूड कहावण) भी चला देते थे।¹⁴ प्रश्नव्याकरणसूत्र में उन्हें 'कूडकहावणोवजीवी' कहा गया है।¹⁵ बेशक, वे दण्ड के भागी होते थे।¹⁶

ताम्र एवं अन्य मुद्रा

कार्षापण के अन्तर्गत ताम्र-कार्षापण भी हुआ करते थे। इनमें भी पण और माश हुआ करते थे। इनके अलावा काकिणी का उल्लेख मिलता है। चूर्णि-साहित्य में ताम्र सिक्कों के उल्लेख मिलते हैं। इनके अलावा कौड़ियों का भी मुद्रा के रूप में चलन था। बृहत्कल्पभाष्य¹⁷ और निशीथचूर्णि¹⁸ में कौड़ी को 'कवडुक' कहा है। छोटे-छोटे दैनिक व्यवहार में इन मुद्राओं का बहुतायत से प्रयोग होता था। उपासकदशांगसूत्र के विवेचन में आचार्य आत्मारामजी महाराज ने सभी प्रकार की मुद्राओं को चौदह श्रेणियों में वर्गीकृत किया है।¹⁹ प्राचीन जैन ग्रन्थों में स्वर्ण सिक्कों के लिए भी केवड़िक या केवड़िग शब्द मिलता है। इतिहास प्रसिद्ध दानवीर भामाशाह 'कावड़िया' गौत्रीय जैन थे। इतिहासकारों ने उनकी सम्पन्नता की दृष्टि से यह अनुमान किया कि केवड़िक स्वर्ण सिक्कों की प्रचुरता के कारण 'कावड़िया' गौत्र का उद्गम हुआ होगा।²⁰

जैन सिक्के

जैन धर्मानुयायी तथा जैनधर्म से प्रभावित राजाओं ने अपने राज्य में और शासन-काल में जो मुद्राएँ जारी की, उन पर विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से जैनधर्म की भावनाएँ अंकित की हैं। ऐसे जैन धर्म के चिह्नों और प्रतीकों से युक्त मुद्राओं को 'जैन सिक्कों' के अन्तर्गत परिगणित किया गया है। जैसे, सम्राट् चन्द्रगुप्त (ईस्वी पूर्व चौथी सदी) द्वारा जारी जैन धार्मिक प्रतीक-युक्त सिक्के प्राप्त होते हैं। देश-विदेश में खुदाई और अन्य माध्यमों से प्राप्त सिक्कों पर विभिन्न जैन प्रतीकों से जैनधर्म के इतिहास और आर्थिक विकास में उसके

योगदान पर महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री ने 'प्राचीन जैन सिक्कों का अध्ययन' विषयक निबन्ध में ऐसे अनेक जैन सिक्कों पर प्रकाश डाला है।²¹ कुछ उल्लेख द्रष्टव्य हैं -

1. ईस्वी पूर्व प्रथम और दूसरी सदी के उज्जयिनी के ताम्र-सिक्कों पर एक ओर वृषभ और दूसरी ओर सुमेरु अंकित है। दोनों प्रतीक जैन परम्परानुसार हैं।
2. पंजाब के वन्नु जिले में सिन्धु नदी के पश्चिमी तट पर लीडिया के राजा क्रीसस का स्वर्ण-सिक्का मिला है। इस सिक्के में एक ओर वृषभ और सिंह का मुँह बना है तथा दूसरी ओर एक छोटा और एक बड़ा पंचमार्क अंकित है। राजा ने इस सिक्के पर जैनधर्म के प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के चिह्न अंकित कर अपनी भावाभिव्यक्ति की है। विद्वानों के अनुसार ईस्वी सन् की कई शताब्दियों पूर्व यूनान, रोम, मिस्र, ब्रह्मा, श्याम, अफ्रीका, सुमात्रा, जावा, बोर्नियो आदि देशों में जैनधर्म का प्रचार था।
3. रैप्सन ने अपने 'भारतीय सिक्के' नामक ग्रन्थ और रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका के अनेक निबन्धों में भारतीय यूनानी नरेशों के सिक्कों का विवरण दिया है। अनुमान है कि अनेक यूनानी राजाओं पर जैनधर्म का प्रभाव था। जिसकी वजह से उन्होंने अपने सिक्कों पर जैन प्रतीकों को अंकित करवाया। इन सिक्कों पर वृषभ, हाथी और अश्व अंकित हैं, जो प्रथम, द्वितीय और तृतीय तीर्थंकरों के चिह्न हैं।
4. जनपद और गणराज्यों के प्राप्त सिक्के उदम्बर जाति के माने जाते हैं। डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री ने प्रथम प्रकार के सिक्कों को किसी जैन धर्मानुयायी राजा का माना है। जिन पर एक ओर हाथी, घेरे में बोधिवृक्ष या अशोक वृक्ष एवं नीचे एक साँप है तथा दूसरी ओर स्तम्भ के ऊपर स्वस्तिक और धर्म-चक्र है।
5. मालव जाति के कई सिक्के जैन हैं। जिन पर

अशोक वृक्ष, कलश, सिंह, वृषभ आदि अंकित हैं। इस जाति के यम, मय और जायक जैनधर्म के प्रति श्रद्धावान थे। यम आचार्य सुधर्मा के संघ में जैन मुनि बन गये थे।

6. यौधेय जाति के सिक्के तीन भागों में विभक्त हैं। उनमें से प्रथम प्रकार के सिक्के प्राचीन हैं और उन्हें जैन सिक्के माना गया है। उन पर वृषभ एवं हाथी का अंकन है।
7. ईस्वी की पहली सदी के राजा भूमिकस और इनके उत्तराधिकारी क्षत्रप नहपान जैन थे तथा उन्होंने जैन प्रतीकों के अंकन से युक्त सिक्के जारी किये थे।
8. गौतमीपुत्र राजा शातकर्णी (प्रथम शती) को व्रती श्रावक माना जाता है। उनके सिक्कों में जैन प्रतीक अंकित हैं।
9. आन्द्रवंशी तथा पल्लववंशी राजाओं ने भी जैन प्रतीकों से युक्त सिक्के जारी किये थे। पल्लववंश का राजा महेन्द्रवर्मन जैन धर्मानुयायी था।

इसी प्रकार मध्यकाल के अनेक राजाओं ने जैन प्रतीकों से युक्त सिक्के जारी करके जैनधर्म और उसके सिद्धान्तों के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की है। कई राजाओं के शासनकाल का कोई भी सिक्का आज उपलब्ध नहीं है। अनेक राजाओं के शासनकाल के एक-दो या कुछ सिक्के ही वर्तमान में प्राप्त होते हैं। अनुमान है कि आगम युग और उससे पूर्व में हुए शासकों ने भी अपनी मुद्राओं पर अपनी धर्म-भावनाएँ अंकित की होंगी। हजारों वर्षों के दीर्घ कालखण्ड में उस समय की मुद्राओं का उपलब्ध नहीं होना स्वाभाविक भी है। जैनधर्म के प्रतीकों से युक्त मुद्रा की प्रबल सम्भावना इसलिए भी है कि उस काल में जैनधर्म का नेतृत्व क्षत्रिय और शासक वर्ग के हाथों में था एवं सभी वर्णों और वर्गों के व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के जैनधर्म के उपासक थे। इन तथ्यों से समता और अहिंसामूलक अर्थव्यवस्था की मौजूदगी का अनुमान लगाया जा सकता है।

क्रय-शक्ति

मुद्रा की क्रय-शक्ति वस्तुओं की उपलब्धता पर

निर्भर करती है। सुलभ वस्तुएँ थोड़ी मुद्रा से अधिक मात्रा में मिल सकती हैं। जबकि कम सुलभ या दुर्लभ वस्तुओं के लिए अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है। अलग अलग देशों/राज्यों की मुद्राओं की क्रय-शक्ति अलग अलग होती थी। ऐसा सम्बन्धित देशों/राज्यों की आर्थिक स्थिति के कारण होता था। बृहत्कल्पभाष्य में बताया गया है कि दक्षिणापथ के दो रुवगों का मूल्य उत्तरापथ के एक रुवग के बराबर तथा उत्तरापथ के दो रुवगों का मूल्य पाटलिपुत्र के एक रुवग के बराबर था। इसी प्रकार दक्षिणापथ के दो रुवगों का मूल्य कांचीपुरम के एक नेलक के मूल्य के बराबर तथा कांचीपुरम के दो नेलकों का मूल्य पाटलिपुत्र के एक रुवग के मूल्य के बराबर था।²² आगम युग में रोजमर्रा की चीजें सर्वसुलभ थीं। प्रजा की क्रय-शक्ति कुछ लोगों या वर्गों तक केन्द्रित नहीं थी। समाज में भगवान महावीर की व्रत व्यवस्था का सुप्रभाव था। इसलिए जनसामान्य का जीवन सुखी था। दुष्काल की विभीषिका के अतिरिक्त भुखमरी की सूचना आगम ग्रन्थों में नहीं मिलती है।

माप-तौल

आगम युग का मानव व्यापार वाणिज्य में कुशल था। वाणिज्यिक विकास और आर्थिक समृद्धि के लिए वह व्यापार को व्यापार के तरीकों और नियमों से करता था। वस्तुओं को मापने और तौलने के लिए विभिन्न मापकों का उल्लेख आगमों में मिलता है। ज्ञातार्थकथांगसूत्र (8/66) में चार प्रकार की माप-प्रणालियाँ बताई गई हैं—गणिम, धरिम, मेय और परिच्छ।

1. गणिम—गिनकर बेची जाने वाली वस्तुएँ गणिम कहलाती थी अथवा गणिम के द्वारा वस्तुओं को गिनकर बेचा जाता था। इसके अन्तर्गत एक से लगाकर एक करोड़ तक की गिनती की जाती थी।

2. धरिम—इसके अन्तर्गत वस्तुओं को तौलकर बेचा जाता था। कर्ष, अर्धकर्ष, पल, अर्धपल, भार, अर्धभार, तुला आदि तौलने के माध्यम थे।

3. मेय या मान—इसके अन्तर्गत वस्तुएँ माप कर बेची जाती थी। वस्तुओं के स्वभाव के अनुसार अलग-अलग वस्तुओं के मापक अलग-अलग हुआ करते थे। ये तीन थे—धान्यमान, रसमान और अवमान। धान्यमान के अन्तर्गत विभिन्न माध्यमों से कोठारों में भरे अनाज का माप किया जाता था। तरल पदार्थों को मापने के लिए रसमान होते थे, जिनमें अनेक आकारों के उपकरण थे। अवमान के अन्तर्गत हाथ, दण्ड, नलिका, धनुष, युग, अक्ष, मूसल आदि माध्यम थे, जिनसे खेत, भूखण्ड, घर, भित्ति, कुएँ, खाई, कपड़ा, चटाई जैसी वस्तुओं को मापा जाता था। विभिन्न क्षेत्रों में ये मापक प्रचलित थे।

4. परिच्छ/प्रतिमान—जिन वस्तुओं में गुणवत्ता की परीक्षा के साथ व्यवहार किया जाता हो, उन्हें परिच्छ कहा गया। इनके अन्तर्गत बहुमूल्य धातुएँ स्वर्ण, रजत और रत्न, मणि, मुक्ता आदि आते हैं। अनुयोगद्वारसूत्र (14/188-191) के अनुसार गुंजा-रती, कांकणी, निश्पाव, कर्ममाषक, मण्डल, सुवर्ण आदि प्रतिमानों से इनका तौल होता था।

इनके अलावा अंगुल, वितस्ति, रत्नि, कुक्षि, धनुष और गव्यूत आदि का उपयोग दूरी मापने के लिए किया जाता था। परमाणु, त्रसरेणु, रथरेणु, बालाग्र, लिक्षा, यूका, यव आदि का उपयोग लम्बाई मापने के लिए किया जाता था। अनुयोगद्वारसूत्र (132-133) के अनुसार समय की गणना समय, आवलिका, श्वास, उच्छ्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, वर्षशत (शताब्दी) से लेकर शीर्षप्रहेलिका आदि से की जाती थी। आगम युग के अनेक माप आज भी प्रचलित हैं।

वित्तीय प्रणालियाँ

आगम साहित्य में स्थानीय व्यापार, विदेश व्यापार, समुद्री व्यापार, वाणिज्य, कृषि, उद्योग आदि की पर्याप्त सूचनाएँ मिलती हैं। इस आधार पर यह सिद्ध होता है कि उस समय वित्त प्रणालियाँ सुव्यवस्थित थीं।

देशी बैंकर्स और पारम्परिक वित्तीय प्रणालियों की तत्कालीन समय में महत्वपूर्ण भूमिका थी। श्रेष्ठी, सार्थवाह और वणिक वर्ग के सम्पन्न व्यक्ति बैंकिंग का व्यवसाय करते थे। आधुनिक बैंकिंग प्रणाली को उसी का विकसित रूप कहा जा सकता है। बैंकिंग के लिए आधारभूत बातें हैं—ऋण के लिए कोष की उपलब्धता, ऋण देना और जमाएँ स्वीकार करना।

कोश की उपलब्धता

उपासकदशांगसूत्र के अनुसार वाणियगाम (वाणिज्यग्राम) के गाथापति आनन्द तथा अन्य श्रावक अपनी सम्पत्ति को तीन हिस्सों में नियोजित करते थे—तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्ण-कोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया...।²³ चार करोड़ हिरण्य निधि कोश या खजाने में, चार करोड़ हिरण्य व्यापार व्यवसाय में और चार करोड़ हिरण्य गृह-सामग्री में नियोजित किया जाता था। भगवान महावीर से अणुव्रत ग्रहण के उपरान्त उनके द्वारा अतिरिक्त आय को परमार्थ में नियोजित किया जाता था। तब धन का वर्गीकरण चार भागों में हो गया था। धन का व्यापार में निवेश करने से रोजगार का सृजन होता था। श्रावक आनन्द ने चार करोड़ और चुलनीपिता और महाशतक ने आठ-आठ करोड़ का हिरण्य व्यवसाय में लगाया और इतना ही निधि में भी रखा।²⁴ जैनाचार में अपव्यय पर अंकुश और बचत को प्रोत्साहन की प्रवृत्ति से मुद्रा-स्फीति नहीं बढ़ती थी और वस्तुओं की कीमतें नियन्त्रित रहती थीं। सकल राष्ट्रीय उत्पाद पर इसका अनुकूल असर होता था। इससे समस्त प्रजा लाभान्वित होती थी।

ऋण देना

तत्कालीन समय में समाज का धनाढ्य वर्ग बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करता था। बैंकिंग का कार्य अन्य व्यवसायों की भाँति प्रतिष्ठा प्राप्त था। वणिक, श्रेष्ठी, गाथापति आदि ऋण देने का कार्य करते थे।

उपासकदशांग के गाथापति ऋण देने का कार्य करते थे। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा सम्पादित उवासगदसाओ में व्यापार में नियोजित धन को ब्याज आदि पर देना लिखा है।²⁵ अनुमान है कि निधि में संगृहीत धन के कुछ भाग को भी ब्याज पर दिया जाता होगा। भगवतीसूत्र के अनुसार तुंगिया ग्राम के श्रावक सम्पन्न थे तथा वे बैंकिंग का कार्य भी करते थे।²⁶ इस प्रकार वित्त-व्यवसाय अथवा बैंकिंग-व्यवसाय के सञ्चालन की सूचनाएँ मिलती हैं।

चूँकि बिना लिखा-पढ़ी के बैंकिंग कार्य सम्भव नहीं है, इसलिए ऋण देते समय पूरी तरह से लिखा-पढ़ी की जाती, किसी की साक्षी ली जाती अथवा गवाह के हस्ताक्षर करवाये जाते। श्रावक के अणुव्रत में झूठी साक्षी का निषेध किया गया है। स्पष्ट है कि तत्कालीन समय में लेखांकन प्रणाली थी, जिसके अन्तर्गत लेखा-पुस्तकें, बहियाँ आदि रखी जाती थी। इन बहियों के आधार पर ही ऋण न चुकाये जाने की दशा में अथवा मुख्य ऋणी के दिवंगत हो जाने पर उसके उत्तराधिकारी पर ऋण चुकाने का दायित्व रहता था। सूत्रकृतांग में ऐसे ऋण को पैतृक ऋण कहा गया है।²⁷

ज्ञाताधर्मकथांग के अनुसार धन्य सार्थवाह ने घोषणा की थी कि जो भी व्यापारी उसके सार्थ के साथ चलना चाहे और यदि उसके पास धन नहीं हो तो उसे व्यापार के लिए अग्रिम तौर पर उधार दिया जायेगा। राजगृह के सार्थवाह ऋण के रूप में भी धन देते थे।²⁸ विशेष परिस्थितियों में ऋणी को ऋण-मुक्त करने की सूचनाएँ भी मिलती हैं। वणिक न्याय के अनुसार यदि ऋण लेने वाला स्वदेश में हो तो उसे अनिवार्य रूप से ऋण चुकाना होता था किन्तु यदि वह समुद्र-यात्रा से विदेश गया हो और उसके साथ कोई हादसा हो गया हो और किसी तरह वह प्राण-रक्षा करके लौटा हो तो उसका कर्ज माफ कर दिया जाता था। बृहत्कल्प भाष्य के अनुसार किसी की पूरा ऋण चुकाने की क्षमता नहीं रही हो तो उसका आंशिक रूप से ऋण माफ किया जाता

था।²⁹ ऋण और अग्रिम के साथ बीमा यानी हादसे पर राहत का विचार भी देखने को मिलता है। ऋण निर्धारित दर, निर्धारित अवधि और निश्चित उद्देश्य के लिए दिये जाते थे। व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक दोनों उद्देश्यों के लिए ऋण दिये जाते थे। परिस्थितियों के अनुसार ऋण पर ब्याज की दर और अवधि परिवर्तित होती रहती थी। श्रावक की व्रत व्यवस्था में अनुचित और ऊँची ब्याज दर का निषेध किया गया है।

जमाएँ स्वीकार करना

जमाएँ स्वीकार करने का अर्थ है-ऋण देने के लिए ऋण लेना। इसमें कम ब्याज दर पर ऋण लिया जाता है और अधिक ब्याज दर पर उसे दिया जाता है। यह प्रक्रिया बैंकिंग व्यवसाय के लिए सामान्य बात है। आगम-युग में बैंकिंग व्यवसाय सम्पन्न वर्ग के हाथ में था। जो लोग सामान्य तौर पर उधारी का कार्य नहीं करते थे, वे अपने अतिरिक्त धन से अतिरिक्त आय के लिए उसे विश्वस्त व्यक्तियों के हाथों में सौंप देते थे। निशीथ चूर्णि में इस व्यवहार को निक्षेपण (निक्खेवग) कहा गया है।³⁰ कभी-कभी ऐसे मामलों में जमाएँ स्वीकार करने वालों की नियत खराब हो जाती थी तो वे धन लौटाने से मना कर देते। इसके लिए वे बही खातों में हेर-फेर कर देते और जमाएँ स्वीकार करने के साक्ष्यों को पलट देते थे। इससे बैंकिंग और व्यवसाय जगत को धक्का लगता था। लोग धन को खजानों, दीवारों और जमीन में निधि के रूप में सुरक्षित रखते थे।³¹

जैन परम्परा द्वारा अचौर्य, सत्य, अपरिग्रह आदि व्रतों के माध्यम से सभी प्रकार की अनैतिक व अहितकारी घटनाओं का प्रतिवाद किया जा रहा था। इससे व्यवसाय जगत में विश्वसनीयता की प्रतिष्ठा हुई। विश्वास की बुनियाद पर ही बैंकिंग व्यवसाय प्रगति कर सका। समस्त वित्तीय और वाणिज्यिक गतिविधियों को विश्वसनीय बनाने और बनाए रखने में भगवान महावीर

की व्रत व्यवस्था का ऐतिहासिक योगदान है।

सन्दर्भ

1. जैन, के.सी., लॉर्ड महावीर एंड हिज टाइम्स, पृ.-306
2. कनिंघम, ए., कॉइंस ऑफ एंशेंट इण्डिया पृ.-43
3. विनय विजय, उपाध्याय, भारतीय सिक्के, पृ.-6
4. कय-विककय-मास-अद्धमास-रुवग संववहाराओ-सूत्रकृतांग, 1/2/7/3 एवं देखें, उत्तराध्ययन सूत्र 8/17
5. उपासकदशांग, ज्ञाताधर्मकथांग प्रथम अध्ययन तथा निशीथ सूत्र 5.35
6. उत्तराध्ययनसूत्र, 8वाँ अध्ययन और प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ.-10
7. भण्डारकर (डॉ.), ऐंशिण्ट इंडियन न्यूमिस्मेटिक्स पृ.-63
8. उरत्थ-दीणार-मालिय-विरइणं - कल्पसूत्र 38
9. निशीथचूर्णि, 3.4316
10. उत्तराध्ययन चूर्णि, 4/119
11. आवश्यकचूर्णि, भाग 2
12. दशवैकालिकचूर्णि, पृ.-42
13. जैन, जगदीशचन्द्र (डॉ.), जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज, पृ.-188
14. उत्तराध्ययनसूत्र, 20/42 (कूडकहावणे) एवं 8/17 (दोमास-कयं कज्जं, कोडिए वि न निद्वियं)
15. प्रश्नव्याकरणसूत्र, 2/3
16. कौटिलीय अर्थशास्त्र, 4/1/76
17. बृहत्कल्पभाष्य, 2.1969
18. निशीथचूर्णि, 3.3070
19. आत्मारामजी, आचार्य, श्री उपासकदशांग सूत्रम्, परिशिष्ट, पृष्ठ-394
20. जिनवाणी (दिसम्बर 2011) में प्रकाशित डॉ. दिलीप धींग का लेख 'दान के पर्याय भामाशाह'
21. शास्त्री, नेमिचन्द्र (डॉ.) 'भारतीय संस्कृति के विकास में जैन वाङ्मय का अवदान' खण्ड द्वितीय अध्याय बारहवाँ।
22. बृहत्कल्पभाष्य, 4.3891-92 एवं निशीथचूर्णि 2.959
23. उपासकदशांग, प्रथम अध्ययन, सूत्र 12
24. हिरण्य के अनेक अर्थ हैं- सोना, चाँदी, मूल्यवान धातु और इनसे बनी वस्तुएँ आदि। जहाँ अकेले हिरण्य शब्द का प्रयोग है, वहाँ इसका अर्थ है सोना और जहाँ 'हिरण्य-सुवर्ण' ऐसा प्रयोग है, वहाँ हिरण्य का अर्थ है चाँदी और

- सुवर्ण का अर्थ है सोना। देखें, जैन विश्व भारती से 2010 में प्रकाशित उवासगदसाओ, पृष्ठ 21
25. जैन विश्व भारती से 2010 में प्रकाशित उवासगदसाओ, पृष्ठ 21
26. व्याख्याप्रज्ञप्ति, 2.5.106
27. सूत्रकृतांग, 1/2/2/179
28. देखें, ज्ञाताधर्मकथांग, पन्द्रहवाँ एवं दूसरा अध्ययन
29. बृहत्कल्पभाष्य, 1.2690, 6.6309
30. निशीथ चूर्णि, 1.5.292
31. निशीथ चूर्णि, 3.5.4312. उपासकदशांगसूत्र के अनुसार निधि के रूप में धन को सुरक्षित रखा जाता था।
-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002
(राजस्थान)

कर्मों की धूल हटाने को

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: जब कोई बात बिगड़ जाए....)

कर्मों की धूल हटाने को, आत्मा शुद्ध बनाने को,
आया पर्व पर्युषण आया, हमें जगाने को॥
मिथ्यात्व का कलिमल धोने, यह ज्ञान की गंगा लाया,
जो डूबा इस गंगा में, उसने ही किनारा पाया,
आत्म चेतन अवलोकन, प्रभु से करवाने को मिलन,
आया पर्व पर्युषण आया.....॥1॥

ये मस्तक नहीं कोई श्रीफल, हर दर पे चढ़ाया जाए,
देव, गुरु और सत्य धर्म पर, हम बलिहारी जाएँ,
दर्शन विशुद्ध बनाने को, श्रद्धा में दृढ़ता लाने को,
आया पर्व पर्युषण आया.....॥2॥

चारित्र की चाँदनी से, अन्तर चमकाना है,
तप में करके पुरुषार्थ, कर्मों को खपाना है,
विजय रसना पे हो कैसे? युक्ति ये समझाने हमको,
आया पर्व पर्युषण आया.....॥3॥

दान की महिमा क्या है? यह हमको बतलाता,
ब्रह्मचर्य पालन के भाव, मन में है जगाता,
गुरु चरणों का हो सुमिरण, समर्पण यह जीवन उनको,
आया पर्व पर्युषण आया.....॥4॥

खामेमि सव्वे जीवा, उद्घोष गुञ्जाता है,
मिक्ती मे सव्व भूएसु, मैत्री भाव बढ़ाता है,
क्षमा वीरों का भूषण है, धारो इसे वैर मिटाने को,
आया पर्व पर्युषण आया.....॥5॥

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर

अभी और बहुत कुछ पाना है

श्री राजेन्द्र कुमार जैन 'राजा'

अन्तिम पड़ाव तक जग में,
यहाँ कौन साथ चल पाया है।
पीर न देखी पाँवों की जिसने,
उसने ही मञ्जिल को पाया है॥

ये दौलत, शोहरत, कोठी बंगला,
स्वप्न एक सलौना है।
दौड़ रहे हैं चाहत में फिर भी,
अभी ओर बहुत कुछ पाना है॥

फिक्र करता है कोई तो समझो,
रिश्तों में अपनापन है।
वरना कितनों की सूनी आँखों में,
अहसासों का वीरानापन है॥

क्या खोया, क्या पाया हमने,
यह सोचना ही फिजूल है।
प्राप्त का उपयोग कर लिया,
तो समझो पैसा वसूल है॥

सब ठाट धरे रह जाते हैं मित्रों,
जब बुलावा आता है।
खाली हाथ ही आता है,
मनुज और खाली हाथ ही जाता है॥

-44/221, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

(राजस्थान)

रात्रिभोजन-त्याग केवल हमारी परम्परा ही नहीं, पहचान भी है

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

आज विजयजी के घर के पास वाले स्थानक में सन्त-मुनिराजों का पदार्पण हुआ था। बचपन से ही उन्होंने माता-पिता को प्रवचन, गोचरी, विहार सेवा का लाभ लेते देखा था। इसलिये बचपन के संस्कारों के कारण हृदय में धर्म की क्यारी हरी थी। अवसर मिलने पर वे भी प्रवचन सुनने अवश्य जाते थे।

सन्त मुनिराज पाट पर विराजमान हो चुके थे। अपनी ओजस्वी वाणी में जन-जन को जाग्रत करने वाली जिनवाणी का उपदेश दे रहे थे। आज उनके प्रवचन में दशवैकालिकसूत्र के चौथे अध्ययन का सार समझाया जा रहा था। पाँच महाव्रतों के सार के बाद छठे व्रत रात्रिभोजन-त्याग का हार्द बताया गया। मुनिराज ने यह बताया कि साधुजी के लिए पंच महाव्रतों की पालना तो अनिवार्य है ही, साथ ही रात्रिभोजन-त्याग भी अनिवार्य है। छठे रात्रिभोजन-त्याग को महाव्रत की संज्ञा नहीं देकर व्रत की संज्ञा दी गई है, परन्तु वह पाँचों महाव्रतों के पालने में विशेष सहयोगी है और उतना ही महत्त्वपूर्ण भी है।

रात्रिभोजन-त्याग हम जैनियों की पहचान है। हजारों, लाखों, करोड़ों में से आप वेशभूषा से, रुतबे से, पद से, नाक-नक्शे से नहीं पहचान सकते कि यह व्यक्ति किस जाति विशेष का है, पर जो सूर्यास्त होने से पहले आपको ट्रेन, हवाईजहाज, समारोह विशेष में भोजन करता दिख जाता है, तो लोग अनुमान लगा ही लेते हैं कि-हो न हो यह जैन है। फिर सन्त-भगवन्त ने रात्रिभोजन-त्याग की महिमा, आवश्यकता और रात्रिभोजन की हानियों से परिषद् को अवगत कराया। मांगलिक प्रदान की। सबने वन्दना की और सभी अपने-अपने घर लौट गए।

बहुत ही प्रभावक उपदेश था। बहुत सी बातें विजयजी के मस्तिष्क में पूरे दिन चिंतन का विषय बनी रही। शाम को दुकान से आये और अपने रोजमर्रा के कार्यों से निवृत्त होकर अपने शयन कक्ष में आराम करने चले गये। कुछ देर बाद उन्हें खिड़की के पास से कुछ आवाजें, कुछ हलन-चलन महसूस हुआ। अधखुली आँखों से उन्हें कुछ जीवों की आकृतियाँ दिखाई दीं। आकृतियाँ उनके कुछ और पास आ गई, वे मुरझाये हुए चेहरे और रोनी सूरत वाले थे। विजयजी ने पूछा-तुम कौन हो? उत्तर मिला कि कल जब आप अपने परिवार के साथ शाम को होटल में खाना खाने जा रहे थे, तब आपकी कार के नीचे कुछ चींटी, मकोड़े आकर काल कवलित हो गए थे, हम सब वही जीव हैं। हम आपको यह बताने आए हैं कि हम भी कभी मनुष्य रूप में ही थे, पर प्रभु महावीर के सिद्धान्तों का पालन नहीं करने से हमारी यह दुर्दशा हुई। हमने न कभी व्रतों का पालन किया, न रात्रिभोजन-त्याग किया। हमने अनमोल मानव-भव को व्यर्थ ही बिता दिया। उनके करुण क्रन्दन से विजयजी की आत्मा दहल गई? उन्हें सान्त्वना देने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाया वे आकृतियाँ गायब हो गईं। अचानक से विजयजी की आँख खुल गई। अरे! यह तो सपना था, पर अब इस सपने ने उनकी निद्रा का हरण कर लिया था, मन में उथल-पुथल मचा दी थी। कुछ विचार जो उनके मन में आए वे इस तरह के थे-

1. यह ज़िन्दगी बहुत छोटी है। पाँचवें आरे में 100 वर्ष झांझेरी जितनी दीर्घ आयु तो किसी-किसी को ही मिलती है। बाकी आज के जमाने में तो 60 से ऊपर की उम्र Bonus ही समझो। इस ज़िन्दगी का भी एक बड़ा हिस्सा गुज़र चुका और कुछ भाग ही शेष

है। क्या अब भी हमें केवलज्ञानियों ने जो अपने ज्ञान में देखा और देशना दी, उन सिद्धान्तों के मार्ग पर नहीं चलना चाहिए। रात्रिभोजन-त्याग की प्रेरणा भी तो उन सिद्धान्तों का ही हिस्सा है।

2. रात्रिभोजन करना प्रभु आज्ञा के विरुद्ध है। मजबूरी की बात छोड़ दें, पर क्या सामान्यतया हमें यह बात याद रहती है? जब कभी ऐसी स्थिति आ जाए, जहाँ अचानक सूर्यास्त पूर्व भोजन का बन्दोबस्त न हो पाए और प्यासा भी रहना पड़े तब याद करें उन निर्ग्रन्थ गुरु भगवन्तों को जो तपते सूरज, तपती ज़मीन पर नंगे पैर भूखे-प्यासे चल पड़ते हैं। कभी आहार-पानी मिलता है, कभी नहीं। वे हमारे आदर्श हैं। उन्हें ऐसी परिस्थितियों का सामना बहुत बार करना पड़ता है। हम भी कभी-कभी ऐसी परिस्थितियों में दृढ़ रहेंगे तो आत्मा के आनन्द की सच्ची अनुभूति होगी। ऐसा सोचें कि धन्य हुआ आज का दिन जो सहज में ही ऊनोदरी तप हो गया।
3. आज परिस्थितियाँ ऐसी बन गई हैं कि अधिकांश जैनी रात्रिभोजन करने लगे हैं। होटल संस्कृति भी अपने पैर पसार रही है। ऐसा लगता है कि पैसों की चमक ने उन्हें संवेदनाहीन कर दिया है। लेकिन हमारी जैन संस्कृति को बचाना है तो रात्रिभोजन-त्याग की सिकुड़ती अवस्था को रोकना ही होगा। किसी को मारना, झूठ बोलना, चोरी करना, अनैतिक सम्बन्ध रखना तो हमें पाप लगते हैं, क्योंकि पकड़े जाने पर कोर्ट में इन सबकी सजा का प्रावधान है, परन्तु रात्रिभोजन तो हमें पाप लगता ही नहीं है, पर याद रखना पाप तो पाप है। केवलज्ञानियों ने तो पहले ही हमें सावचेत कर दिया है। कर्मों के कोर्ट में तो इस पाप की भी पेशी होगी। जब हमसे जाने-अनजाने कोई गलत काम हो जाता है, तब आत्मा कितनी तड़पती है, हमें वह पाप भार स्वरूप लगता है, पर क्या रात्रि भोजन करने पर भी आत्मा वैसे ही तड़पती है? सोचें?
4. आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में हमारे खान-पान

के समय में परिवर्तन आया है। हमारा सुबह का भोजन इतना देरी से होता है कि सूर्यास्त के समय भूख नहीं लगती, उसके बाद में लगती है। इसलिए रात्रिभोजन-त्याग करना कठिन हो जाता है, पर यदि हम चाहे तो हमारी दिनचर्या में परिवर्तन करने से, सुबह जल्दी उठने से इस समस्या से निजात मिल सकती है। वैसे भी भूख का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है, जो समय हम नियुक्त कर लेते हैं, थोड़े से अभ्यास के बाद उसी समय भूख लगने लग जाती है।

5. आज हम अपने बच्चों को स्कूल से आने के बाद प्रायः ट्यूशन क्लासेस, हॉबी क्लासेज आदि में भेजते हैं। बच्चे सूर्यास्त के बाद जब घर आते हैं और तब वे काफी थक चुके होते हैं और प्रायः मोबाइल या टी.वी. देखते हुए शाम का भोजन करते हैं। यदि हम बचपन से ही उनमें सद्गुण विकसित करें, उन्हें आत्मा के हित के बारे में समझायें, दिन में भोजन की आदत डालें तो एक अच्छे वातावरण का निर्माण हो सकता है, क्योंकि बचपन में डाले गये संस्कार ताउम्र साथ रहते हैं। हाँ, आज प्रतिस्पर्धा का युग है, बच्चों को हर क्षेत्र में आगे रहना जरूरी है, पर इस चक्कर में जैनत्व के संस्कार ही कहीं खत्म न हो जाएँ, ऐसा ध्यान रखना भी जरूरी है। यदि हमें अपने बच्चों को सही मार्ग से भटकने से रोकना है तो सबसे पहले हमें हमारे सुनहरे इतिहास, परम्पराओं को खुद सहेजना होगा, तभी भावी पीढ़ी इसका अनुसरण करेगी। आज भी दिगम्बर और मन्दिरमार्गी परम्परा विशेषकर गुजराती जैनियों के ऐसे बहुत से घर हैं, जहाँ छोटे-छोटे बच्चे भी रात्रि में भोजन नहीं करते। स्थानकवासियों में यह परम्परा कम होती जा रही है। यह विचारणीय प्रश्न है?
6. आज हम धन की दौड़ में लगे हुए हैं। व्यापार, धन्धों, नौकरी में इतने मशगूल हैं कि प्रतिदिन तो क्या अष्टमी, चौदस, पक्खी और कोई-कोई तो

पर्युषण के दिनों में भी रात्रि में आहार कर रहे हैं? जबकि आयुष्य का हर क्षण समय के बीतने के साथ बीतता जा रहा है, मृत्यु नजदीक आ रही है, तब क्या ये पैसा हमारे साथ चलेगा? नहीं। तो केवल इस पैसे के पीछे पागल बनकर प्रभु ने जो नियम फरमाये, उन्हें दरकिनार कर देना उचित नहीं है? रात्रिभोजनत्याग से मन भी मस्त, तन भी स्वस्थ और जीवन भी चुस्त और परभव भी दुरुस्त होता है।

7. रात्रिभोजन से मात्र आत्मा का ही अहित नहीं, अपितु शारीरिक स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचती है। अपाचन, अनिद्रा, अजीर्ण, अम्लपित्त आदि विकारों का प्रमुख कारण रात्रिभोजन ही है। रात्रिभोजन से हमारे विचारों पर भी कुप्रभाव पड़ता है, जिससे धीरे-धीरे भविष्य में पतन की आकांक्षा बढ़ जाती है। हमारे शरीर के नाभि कमल की संरचना ही ऐसी है, जो दिन के भोजन के लिए ही उपयुक्त है।
8. हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कभी ऐसे परिवार के यहाँ रात्रि विश्राम का अवसर हो, जहाँ कोई भी रात्रिभोजन नहीं करता हो तब वहाँ हमें भी रात्रिभोजन नहीं करना चाहिए। नहीं तो शर्माशर्मा में मेजबान हमें मना नहीं कर पाएँगे और परेशान भी होंगे।
9. ऐसी पार्टियों में नहीं जाएँ जहाँ सूर्यास्त पूर्व भोजन की व्यवस्था न हो। यदि किसी कारण से जाना भी पड़े तो स्पष्ट शब्दों में विनम्रता के साथ निवेदन करें कि मेरे रात्रिभोजन का त्याग है।

विजयजी सोच रहे थे कि-आज सन्त-मुनिराजों के प्रवचन ने मेरी आँखे खोल दी। अगर इच्छा शक्ति प्रबल हो तो हम हर व्रत-पचक्खाण की पालना कर सकते हैं। कल सवेरा होते ही मैं गुरु भगवन्तों के दर्शन करने जाऊँगा और आजीवन रात्रिभोजन-त्याग का संकल्प करूँगा। जब तक मैं छोटा था, माता-पिता मुझे दिन में खाना खिला देते थे। पर गाँव से शहर की

भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में कदम रखते ही मात्र पैसे, रुतबे, जमीन-जायदाद की होड़ ने मुझे अपनी संस्कृति और धर्म की जड़ों से अलग कर दिया। पर आज म.सा. के प्रेरणास्पद वाक्यों ने मुझे भीतर तक झकझोर दिया। अब तक जो हुआ सो हुआ। पर अब नहीं। जब जागो तभी सवेरा।

विजयजी की आँखें तो खुल गई, आत्मा जाग्रत हो गई। पर हमारी सोई हुई आत्मा को भी जगाना ही होगा। रात्रिभोजन-त्याग प्रभु द्वारा प्ररूपित नियम है, जैनत्व की पहचान है, आत्महित में सहयोगी है, अनेकानेक जीवों का रक्षक है। हमारी संस्कृति और भावी पीढ़ी को सुरक्षित रखना है, तो इसे अपनाना ही होगा। मुझसे नहीं होगा, हम नहीं कर सकते, कैसे करूँ? मात्र बहाना है, जो वीर होते हैं वे बहाने नहीं बनाते, अपितु कार्य कर गुजरते हैं।

हम भी महावीर के अनुयायी हैं, महावीर के अनुयायी कभी कायर हो ही नहीं सकते, वे वीर ही होते हैं। इसलिए हर प्रतिज्ञा का पालन शुद्धता से कर सकते हैं, हम भी वीर हैं, इसलिए रात्रिभोजन-त्याग की हमारी धरोहर को अक्षुण्ण रखना हमारा कर्तव्य है। पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से एक वाक्य बार-बार सुना है-“जो जैन होता है वह रात्रि में नहीं खाता और जो रात्रि में खाता है, वह जैन नहीं होता।”

हमें मात्र जन्म से नहीं, अपितु कर्म से भी जैन बनना है। रात्रिभोजन-त्याग जो हमारी पहचान है, उसे जीवन्त रखना है। रात्रिभोजन हमारे समाज में आई एक कुरीति है, जिसे अपनी इच्छा शक्ति के बल से दूर करना है। यदि हमें अपने तीनों मनोरथ सफल करने हैं, मानवभव का सार निकालना है, तो रात्रिभोजन का त्याग आवश्यक समझना ही होगा।

जो लोग रात्रिभोजन-त्याग को बेबुनियाद मानकर यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि जब पुराने जमाने में बिजली का आविष्कार नहीं हुआ था, तब अन्धकार में जीव-जन्तु की विराधना की सम्भावना से यह नियम

बना दिया गया होगा। पर आज की परिस्थितियाँ अलग हैं, विज्ञान नित नये प्रयोग कर रहा है। सूर्यास्त के बाद भी जब लाइटों का उपयोग करके चाहे जितना प्रकाश कर सकते हैं, तब विराधना की सम्भावना ही कहाँ है? कुछ लोग ऐसा तर्क देते हैं। लेकिन सूर्य के प्रकाश में जहाँ ताप होता है, वहाँ सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति नहीं होती, अन्य जीव-जन्तुओं का भी प्रकोप इतना नहीं होता कि भोजन आदि में गिरकर विराधना हो। तर्क देने वालों को ऐसा ज्ञात होना चाहिए कि लाइट के प्रकाश से तो सूक्ष्म जीव और मच्छर आदि जन्तु खींचे चले आते हैं। जब कभी हमें कमरे में से मच्छरों को भगाना होता है, तो हम वहाँ अन्धकार करते हैं और अन्य जगह प्रकाश ताकि मच्छर वहाँ चले जाएँ। इसलिए सूर्य के प्रकाश से लाइट के प्रकाश की तुलना उचित नहीं। यह भी अनुभव किया ही होगा कि धान्य, फल, सब्जी का विकास सूर्य के प्रकाश में होता है, न कि कृत्रिम प्रकाश में। खुले मैदानों में शाम को होने वाले भोजन में तो इतने बहुतायत

छोटे-छोटे मच्छर आदि जीव गिरते ही रहते हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई भी देते हैं। क्या ऐसे भोजन को करने से हमारा जैनत्व कायम रह पाएगा? चिन्तन का विषय है। आत्मा को जितना हो सके कर्मों से बचाने का प्रयत्न करें। घर में, समाज में रात्रिभोजन-त्याग को बढ़ावा दें। सन्त-भगवन्तों के जितना त्याग हर किसी के बस की बात नहीं, पर रात्रिभोजन-त्याग के लिए तो प्रयत्न किया ही जा सकता है, यही उन निर्ग्रन्थ मुनिराजों के प्रति हमारी आस्था की भेंट है।

रात्रिभोजन की आदत को अब रोकना ही होगा, भटकते हुए इस मन को अब टोकना ही होगा। कर्मों की जलती भट्टी में आत्मा को नहीं झोंकना है अगर, तो हमारी संस्कृति की जड़ों की ओर लौटना ही होगा।।

एक कोशिश, एक शुरुआत

नहीं खाएँगे जब होगी रात।।

-एस् 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018
(राजस्थान)

हमारी पहचान

श्री दिलीप गाँधी

कभी माँ से कभी पिता से तो कभी,
जाति से होती है हमारी पहचान।
कभी धर्म से कभी कर्म से तो कभी,
संस्कार से होती है हमारी पहचान।
कभी खेल से कभी साहित्य से तो कभी,
गीत संगीत से होती है हमारी पहचान।
कभी पद से कभी प्रतिष्ठा से तो कभी,
सिंहासन से होती है हमारी पहचान।
कभी ज्ञान से कभी विज्ञान से तो कभी,
अनुसन्धान से होती है हमारी पहचान।
कभी गाँव से कभी शहर से तो कभी,
देश-प्रदेश से भी होती हमारी पहचान।
हम सभी जीते हैं सिर्फ हमारी,

एक अपनी पहचान के लिए
ऊँची सोच .. ऊँचे विचार रखने होते हैं।

अपनी पहचान के लिए।
संघर्ष करने की ललक जब तक,
रहती तन में,
तब तक होती है हमारी पहचान।

विरासत में दौलत-शोहरत तो मिल जाया करती है,
खुद को ही बनानी पड़ती है हमारी पहचान।
हे मनुज! तेरी औकात कुछ भी नहीं इस जहा में,
तेरी ऊँची सोच ऊँचे विचार ही बस
याद रखेगी दुनिया
बस! यही है हमारी पहचान।
बस! यही है हमारी पहचान।

-117, कैलाशपुरी, निम्बाहेड़ा रोड़, चित्तौड़गढ़-
312001 (राजस्थान)

हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेगे भगवान

श्री पदमचन्द गाँधी

भारतीय संस्कृति ने पूरे विश्व को इस सोच से अवगत कराया है कि इन्सान की सच्ची कीमत बाहर की सफलता से नहीं वरन् भीतर की पात्रता से आती है। आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए पात्रता एक सच्ची कसौटी है। सफलता बिना पात्रता की परीक्षा दिये नहीं मिलती। भारतीय चिन्तन ने इस बात को गहराई के साथ अनुभव किया कि पात्रता का अभिवर्द्धन ही आध्यात्मिक उन्नति का एक मात्र आधार है। आध्यात्मिक पात्रता मन में संवेदना जगाये बिना नहीं मिलती और अन्तरङ्ग का परिष्कार किए बिना भी नहीं मिलती। यदि हम अन्तरङ्ग का परिष्कार कर पाते हैं तो हमारा मनमन्दिर धन्य हो जाता है। गङ्गा में डुबकी लगाने से हमारे मन का मैल नहीं निकलता, किन्तु हम गङ्गा को मैला जरूर कर देते हैं। अतः प्रभु को अगर पाना है तो अपने भीतर के आँगन को बुहारने की, मलिनता को साफ करने की पात्रता जगाना आवश्यक है। अस्तु हम अपनी आत्मा के आँगन में नित्य झाड़ू लगाते रहें, सफाई करें। इसके लिए आवश्यक है हमारी श्रद्धा, निष्ठा, धैर्य, ईमानदारी, संयम, मन की उदारता तथा सरलता। नियमित रूप से ऐसी साधना करते रहने से प्रभु हमारे अन्दर प्रेम, ज्ञान एवं भाव संवेदनाओं के रूप में अवतरित हो सकते हैं। मन का आँगन साफ हो तो प्रभु आनन्द के रूप में प्रकट हो सकते हैं। बशर्ते कि साधक देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित हो, दृढ़ श्रद्धावान हो और उसकी साधना में नियमितता हो, धैर्य हो, गति एवं तीव्रता हो।

आज की भौतिकवादी उपभोग वृत्ति की दुनिया में लोग 'प्राप्त' को 'पर्याप्त' नहीं मानते। वे केवल 'अर्थ' के लिए दिन-रात दौड़ते रहते हैं। ऐसी वृत्ति के लोग प्रभु के प्रति आस्था भी रखते हैं, परन्तु उन्हें पाने के लिए सच्चे मन से प्रयास नहीं करते। लेकिन प्रभु सहजता से नहीं साधना से मिलते हैं। प्रभु को पाने के लिए 'प्यास'

को जगाना पड़ता है। प्यास की पूर्ति के लिए 'पात्रता' को उत्पन्न करना जरूरी है। प्यास ऐसी हो कि मुझे अरिहन्त बनना है, मुझे आराधक बनना है, मुझे सम्यक्त्वी बनना है, ऐसा दृढ़ विश्वास जगे कि मुझमें अनन्त शक्ति है, मैं सिद्धों का वासी हूँ। मैं सिद्ध स्वरूपी आत्मा हूँ। ऐसी प्यास से पात्रता को उजागर करना है। भगवतीसूत्र में कहा है-प्रत्याख्यान सुप्रत्याख्यान तब कहलाता है, जब आत्मबोध हो। स्वयं को जानना आत्मबोध है। तुम स्वयं अपने निर्माता हो। इसके लिए वर्तमान को सुधारना है, वर्तमान में जीना है। कल क्या था और कल क्या होगा? इसके स्थान पर आज का चिन्तन करना है, क्योंकि ज्ञानीजन कहते हैं- "हम इतने अमीर नहीं है कि भूतकाल खरीद सकें, लेकिन हम इतने गरीब भी नहीं हैं कि वर्तमान को सुधार नहीं सकें।" प्रभु महावीर कहते हैं- "यदि वर्तमान सुधारना है, आत्मबोध करना है तो स्वयं को जानना जरूरी है।" कवि कहता है-

देखो अपने आपको, समझो अपने आप।

अपने को देखे बिना, मिटे न भव सन्ताप।।

शास्त्र साक्षी है, आँगन बुहारने से प्रभु प्रकट होते हैं, सती चन्दना को देखो, कष्टों को समताभाव से सहते हुए तेले की तपस्या, हाथ में हथकड़ी, पाँव में बेड़ियाँ, सर मुण्डा हुआ और छाजले में उड़द के बाकले लिए पारणा करने से पहले प्रभु के आगमन की भावना भाती है, प्रभु आते हैं, लेकिन देखकर पुनः चले जाते हैं, चन्दना व्यथित हो जाती है, आँखों से अश्रुधारा फूट पड़ती है, रोती है, आसूँओं की करुण पुकार प्रभु को पुनः बुला लेती है, प्रभु आते हैं और चन्दना से आहार (बाकले) ग्रहण करते हैं तथा उसे अपना शिष्यत्व प्रदान करते हैं।

धर्म के प्रति कामदेव एवं आनन्द की सच्ची श्रद्धा

ने देवों के द्वारा उपस्थापित उपसर्गों को परास्त कर दिया। धर्म दृढ़ता के कारण गृहस्थ अवस्था में आराधकता को अपनाया। चूलनीपिता मातृ वध की धमकी से नहीं डरे। सुरादेव 16 महारोग उत्पन्न होने की धमकी से तथा चुल्लशतक सम्पत्ति बिखेरने की धमकी से नहीं डरे। देव मारने की भावना से उठे जरूर थे, लेकिन मार नहीं सके। ऐसी दृढ़ता यह प्रेरणा देती है कि दृढ़धर्मिता हमारी रक्षा करती है।

मन की मलिनता हटाने तथा मन रूपी आँगन को बुहारने के लिए जो तत्त्व अनिवार्य होते हैं, जिनसे हम हमारी पात्रता को जगा सकते हैं, वे निम्नांकित हैं—

(1) श्रद्धा—प्रभु को पाने के लिए श्रद्धा का होना जरूरी है। श्रद्धा वह प्रकाश है जो आत्मा के लिए सत्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। जब भी मनुष्य एक क्षण के लिए सांसारिक मोह, माया, लौकिक चमक-दमक तथा कंचन-कामिनी के पाश में आबद्ध होने लगता है तो श्रद्धा ही माता की तरह ठण्डे जल के छींटे डालकर मोहग्रस्त जीवात्मा को जगाती है। इस प्रकार श्रद्धा भवसागर से पार लगाने वाली एक अलौकिक शक्ति है।

श्रद्धा व्यक्तित्व में सद्गुणों की ऐसी महक जगाती है जो चहुँदिसाओं को अपनी खुशबू से सुवासित कर देती है। श्रद्धा-सम्पन्न का व्यक्तित्व अथाह गहराई लिए होता है, जिसके ऐश्वर्य स्वरूप की थाह बुद्धि द्वारा नहीं पाई जा सकती है। इसे तो सरल, सहज एवं संवेदनशील हृदय द्वारा अनुभव मात्र किया जा सकता है। निःसन्देह श्रद्धा में वह शक्ति है जो सत्य की सीमा तक साधक को साधे रहती है, सम्भाले रहती है।

श्रद्धा तर्क, विवेक से परे मर्यादित विचारों के पार अनुभूतियों के दिव्य क्षेत्र में प्रवेश कराती है। विवेक बुद्धि द्वारा उचित का विश्लेषण करता है। लेकिन कुतर्क एवं अन्ध श्रद्धा आध्यात्मिक एवं लौकिक जीवन के लिए घातक बन जाती है। अतः श्रद्धा की परख हो।

(2) प्रज्ञा—प्रज्ञा से वह दिव्यदृष्टि प्राप्त होती है, जो जीवन के तिमिर के बीच अपनी प्रकाशपूर्ण राह खोज

लेती है। हेय, ज्ञेय, उपादेय का ज्ञान कर दूरदर्शी परिणामों को देखती है और अपनी आत्मा की ओर उन्मुख करती है। इस तरह प्रज्ञावान को आत्मा के दर्शन हो पाते हैं। प्रज्ञा ही साधक में इतनी सूझ, समझ एवं साहस प्रदान करती है कि उत्कृष्टता के शिखर पर वह अकेले ही आरोहण कर सकता है। पूरा संसार भी विरोध में क्यों न खड़ा हो जाए प्रज्ञावान अपनी जाग्रत प्रज्ञा के बल पर मार्ग का अनुसन्धान करता है तथा अपना मार्ग प्रशस्त करता है।

मन एवं बुद्धि के रहते हुए भी प्रज्ञा के अभाव में व्यक्ति अपनी लौकिक सीमाओं में आबद्ध होने के कारण वासना, विलासिता, अहंता, संकीर्णता, स्वार्थपरकता जैसी हेय प्रवृत्तियों में लिप्त रहता है। प्रज्ञा का आलोक ही इस स्थिति से उबरने में सहायता करता है।

(3) निष्ठा—निष्ठा अर्थात् ध्येय में स्थिरता। इससे आदर्शों के प्रति समर्पित रहने का ऐसा संकल्प जुड़ा होता है जो कठिन समय में भी सीना ताने खड़ा रखता है। निष्ठावान जीवन में प्रलोभनों, आकर्षणों और दवाबों में झुकना नहीं जानता। वस्तुतः निष्ठा आत्मा की गहराई से उठने वाली शक्ति है, जिसे 'आदर्श' प्राण प्रिय होते हैं।

(4) सद्गुरु—सद्गुरु की कृपा और महिमा अनन्त और असीमित है, लेकिन यह उन्हीं पर होती है जिसने शिष्यत्व की कठिन साधना की है तथा जो अपने गुरु की प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरता हो। गुरु वह है जो अज्ञान का नाश करके ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित करते हैं। गुरु मात्र ज्ञान नहीं देते वरन् अपनी कृपा से शिष्य को सब पापों से बचाते हैं तथा मुक्ति प्रदान करते हैं।

जब हमारे अन्दर अपनी कोई इच्छाएँ, वासनाएँ नहीं रह जातीं तब हमारे जीवन में गुरु तत्त्व का उदय होता है। यही शिष्यत्व की पात्रता है, इसे जाग्रत करना चाहिए।

(5) आत्मबल—लौकिक साधन, भौतिक सम्पदाएँ और शारीरिक सामर्थ्य मनुष्य को मात्र सुरक्षित जीवन-निर्वाह की क्षमता प्रदान करते हैं, परन्तु यदि

प्रसुप्त आत्मबल जाग जाता है तो मनुष्य अति मानवीय क्षमताओं का जागरण कर सकता है। मानव से महामानव बनने का सौभाग्य आत्मबल के जागरण से होता है। आत्मबल प्राप्ति की चाहना वाले साधकों को चेतना एवं एकात्मकता का भाव विकसित करना अनिवार्य होता है। जो एकात्मक भाव को विकसित कर पाते हैं उनका आत्मबल इस ऋदर विकसित होता है कि वे प्रवाह को पलटने की, तूफानों को थाम लेने की और आँधियों का रुख मोड़ देने की क्षमता रखते हैं।

(6) निरन्तर साधना—साधना को परम पुरुषार्थ कहा गया है, क्योंकि यह समाधान की कुञ्जी है। इसके मिलने वाले फल के आगे संसार की बड़ी से बड़ी उपलब्धि भी छोटी हो जाती है। सांसारिक उपलब्धियाँ नश्वर होती हैं जबकि साधना से प्राप्त आत्मिक उपलब्धि स्थायी होती है, टिकाऊ होती है। साधना की आवश्यकता इसलिए होती है कि व्यक्ति विषयभोगों में लिप्त रहता है तथा जीवन उन्नतिहीन कुचक्रों में उलझा रहता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, अहंकार जैसे षड्रिपु पग-पग पर व्यक्ति को सांसारिक जंजाल में उलझाये रखते हैं। बाह्य रूप से वह धनाढ्य हो सकता है, लेकिन आन्तरिक रूप से उसमें विपन्नता ही रहती है। अतः साधना के द्वारा मन को निर्मल बनाया जा सकता है।

संयम से ऊर्जा का संरक्षण होता है। स्वाध्याय अपने अस्तित्व की श्रेष्ठ सम्भावनाओं के साथ हठीले कुसंस्कारों एवं विकृत दृष्टिकोण से परिचय करवाता है तथा इनका परिशोधन करते हुए चित्त शुद्धि की प्रक्रिया को सम्पन्न करता है। इसके लिए निरन्तरता एवं नियमित अभ्यास आवश्यक है। माँजने से बर्तन चमकते हैं, वैसे ही आत्मा की तेजस्विता और चित्त की शुद्धि के लिए निरन्तरता जरूरी है। चलते रहोगे तो मञ्जिल मिलेगी, खड़े रहे तो वहीं रह जाओगे।

(7) सरलता—आज समाज में सच्चे लोग दूँढ़ना कठिन है, लेकिन जटिल मनोग्रन्थियों से युक्त व्यक्तियों की बहुलता है। जीवन इतना भी कठिन नहीं है

जितना हमने बना दिया है। हमें इसे सरल बनाने का प्रयास करना है। इसके लिए जरूरी है अपेक्षाओं, आकांक्षाओं के पीछे न दौड़ें तथा किसी से तुलना नहीं करें। स्वयं को स्वीकार करें तथा नकारात्मक विचारों को सकारात्मकता की ओर ले जायें और प्रतिकूलताओं में अनुकूलता का अनुभव करें।

अमेरिका में प्रत्येक 12 जुलाई को सादगी दिवस मनाया जाता है जिसका श्रेय मशहूर लेखक कवि, पर्यावरणविद् इतिहासकार और दर्शनशास्त्री हेनरी डेविड को जाता है। क्योंकि उन्होंने दुनिया को सादगी के साथ जीने का सन्देश दिया। लेकिन प्रभु महावीर ने तो लगभग 2600 वर्ष पूर्व सरलता एवं सादगी पूर्ण जीने की कला एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। विनय को धर्म बताया। व्यक्ति जितना विनयवान होगा, वह उतना ही सरल होगा, सादगी पूर्ण होगा।

(8) समर्पण—नदी जब हजारों कठिनाइयों, बाधाओं को पार करती हुई अनन्त सागर में विलीन हो जाती है तो उसका विस्तार सागर के रूप में हो जाता है। जब नदी का अस्तित्व सागर में बदल जाता है तब सरिता से सागर बनने का जो आनन्द है वह निराला है। ऐसे ही स्वयं का विस्तार, स्वयं में समाने से है जिसे केवल महसूस किया जा सकता है। जो साधना के पथ पर अविराम बढ़ते हैं, वे मुश्किलों से, बाधाओं से सामना करते हुए अपनी वासनाओं, कामनाओं, इच्छाओं को दरकिनार करते हुए पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ आगे बढ़ जाते हैं, क्योंकि उनका अर्पण ही समर्पण होता है। पूर्ण समर्पण के बाद साधक कोरा कागज बन जाता है। कोरा कागज बनने का अर्थ है स्वयं को पूर्ण रूप से खाली कर देना, मन को हल्का एवं निर्मल बना देना।

उपर्युक्त सभी तथ्य आत्मतत्त्व को तथा सिद्धत्व को प्राप्त करने की पात्रता को जगाने वाले हैं। आँगन बुहार कर प्रभुता को प्रकट करने वाले हैं।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

***Santhārā*-Jaina Practice of Fasting unto Peaceful Death is not a Suicide**

Dr. Samani Shashi Prajnā

Santhārā is a Jain technical word which means the voluntary, step by step termination of body with full awareness, wisdom and insight. The 24th *Tīrthankara* Mahāvīra was great religious preacher who not only paved the path of leading an artistic life by implementing the great and small vows but also showed us the path of ending the life journey very artistically through the process of *Santhārā*. The basic concept underlying the vow of *Santhārā* is that a man who is the master of his own destiny should resolve himself/herself to follow the best method of leaving the body. *Santhārā* is considered as the king of all the vows and it is the highest spiritual vow rather than the ritual.

The Jaina Practice of *Sallekhanā*

Sallekhanā or Holy Death can be seen as an integral part of the Jaina Path. Stated baldly, it is the gradual fasting till death of an aspirant seeking liberation (*moksa*) within the Jaina tradition. The practice originally was done principally by mendicants at their own discretion. However, through the evolutionary development of the practice, restrictions were put in place, no doubt in part to help regulate its expanded usage by laypersons as well. Within the tradition four reasons or circumstances are mentioned that qualify for permission to begin the *sallekhanā* process. First, someone who has contracted a terminal illness and whose death is imminent (*nihpratikararuja*) may perform *sallekhanā*; second, a person who will likely be unable to perform one's vows due to dwindling capacities from advanced years (*jarā*), i.e.,

immobility, poor eyesight, forgetfulness, mental incompetence, etc. can start to fast till death; third, when there is a great shortage of acceptable food (*durbhikṣa*), such as during a famine, a person can stop eating; and fourth, when a person is thrust into a terrible calamity (*upasarga*) where one will compromise one's vows (e.g., severely wounded in battle or captured by the enemy), fasting to death is also permissible.

The Jains distinguish between pure or acceptable grounds for initiating a process that will eventually end one's life, practiced by a wise man (*pāṇḍiya*) and that act or process that ends of life that is impure or unacceptable and done by a fool (*bāla*). In regards to the latter expression of suicide, Mahavira is unwavering in his condemnation of suicide that is brought about by drowning, burning, poisoning, use of a weapon, jumping off a cliff. Presumably one reason for this condemnation is the inherent violence in these acts, not only to oneself, but also to the other living beings might be harmed by one's violent act. Additionally, these latter types of acts involve extreme passion that again "contaminates" the purity and spiritual merits of the action. In contrast *sallekhanā* does not harm another being; in fact, it can and should be considered a supreme act of nonviolence, as one is no longer harming another being through the process of harvesting, storing, cooking, and consuming food. Further, *sallekhanā* requires dispassion on the part of the person who is allowed to engage in the process. Part of the screening process by the religious supervisor involves deciding whether the practitioner is truly ready

to take on the long process of fasting to death and has had enough experience with fasting through his/her life to deal with the pain involved. Usually the process first involves cutting down on food gradually until one is eventually only consuming water every day. It is not meant to be a radical or swift exit, but rather a ritualistic, and solemn spiritual practice. Depending on the aspirant's physical and mental condition, it can take weeks, even months to perform before death.

In terms of what the Jainas would call "spiritual advancement," there is a wide range of individuals who partake in the practice. Some laypersons may take the vow of *sallekhanā* (*sallekhanāvrata*) long before they would actually commit to the practice, in the chance they might become ill or near death suddenly and then at least fast their last days, retake the five sacred vows, and confess to their harmful deed and repent, and finally die in a meditative state. But others, particularly mendicants or monks who have advance along in their spiritual quest, may approach and experience the process in a much more detached and embracing fashion.

Importance of *Santhārā*

It is a religious fast unto death on the pretext that when all purpose of life have been served, or when the body is unable to serve any purpose of life. Acharaya Samantbhadra in his text, *MrityuMahotsava* highlights the essence of *Santhārā* with the following *sūtra*:

Taptasyatapasashecāpipālitasyavratsya ca. Pathitasyasrutasyāpiphalamrtyusamādhinā.

It means all religious observances, fastings and austerities would be unavailing, if at the last moment of life, at the time of approaching death, if one does not undertake *Santhārā*. It is not only the spiritual welcome to death, but also a way of meeting the challenge of death undauntedly. This happy embracement of death has been calculated to carry the spiritual dispositions to the next

birth. Such a kind of peaceful spiritual death cannot be regarded as the suicide at any cost because here we have a logic and spiritual reason behind the acceptance of *Santhārā*.

It is very often seen that the self has more attachment with one's own body; he cares for it with all hooks and crooks. But during *Santhārā* period, the practitioner realizes that body and passions are the main causes of inflow of *karmas*. So prior to the acceptance of the vow, one is required to give up all feelings of hatred, companionship and worldly attachments with a pure and calm mind. He/she should obtain permission from the Guru and householders from their nearest relatives and ask forgiveness from one's kinsmen and from others with all humanity at the same time forgiving them sincerely. Death by *Santhārā* according to scriptural rules is the victory of the soul over *karmas* and other infirmities of the mind and body.

This systematic process of *Samādhi marana* influenced even Vinoba Bhave to such an extent that once he commented I wish to die according to the Jain system of peaceful death. So *Santhārā* is a Jain religious injection essential for shedding of *karmas* and purification of soul. So such an auspicious death can never be compared with suicide. Sri Ravi Shankar comments that those people who are not familiar to Jaina vows, views, various practices and rituals claim that *Santhārā* is suicide. A man of less intellect only commits suicide to get rid of one's physical diseases, mental disorders and other unfavourable situation that is why, it is rightly said that "Suicide is the temporary solution to the permanent problem." While a man of intellect observes *Santhārā* to get rid of *bhavavyadhi* i.e. wandering disease which is material cause of all the problems. So let us proceed to explain the difference between the *Santhārā* and Suicide through the table.

Difference Between *Santhārā* and Suicide

<i>Santhārā</i>	Suicide
1. <i>Santhārā</i> is a Jain technical word which means facing Peaceful Death through Fasting by an ascetic or a householder voluntarily and step by step termination of body with full awareness, wisdom and insight.	Suicide (<i>ātmaghāta</i> or <i>ātmahatyā</i> (self-destruction) is killing oneself by means employed by oneself and it is normally a misfortune of one's own making. A victim of suicide is either a victim of his/her mental weaknesses or of external circumstances, which he is not able to circumvent.
2. The main intention behind this spiritual practice is the attainment of self-realization through the shedding off karmas and to stop the wandering in the cycle of birth and death.	The main intention of committing suicide is to escape from the consequences of certain acts or events; disgrace, agony, punishment, social stigma or tyranny of treatment etc.
3. It is purely spiritual and religious practice of Jaina philosophy.	The kind of death is far away from religious or spiritual considerations.
4. It is simply the internal austerity of thinning the passions and the external austerity of reducing the diet and an auspicious way of achieving death.	It is an emotional immaturity being the most powerful factor compelling a man to choose suicide as the only solution to seemingly insurmountable difficulties.
5. A person abide by the vow of <i>Santhārā</i> is not afraid of leaving the body just as the traveller leaves an hotel without a thought. He courageously and bravely faces death just as the warrior in the battlefield.	A person who commits suicide fears from death.
6. When the body does not cooperate to help in living meaningfully any more, the person should resolve for <i>Santhārā</i> . As per the Jaina religion the body is called a boat, the soul is a boatman, the worldly existence is an ocean which the great sages cross over through the pious practice of <i>Santhārā</i> .	But in suicide, the body is healthy, all the organs of the body are well functional and some unfavourable situation which he/she feels to be incapable of facing it courageously, ends one's life merely to elope from the life situations.
7. <i>Santhārā</i> is undertaken with positive thinking and perfect understanding of the purpose of human life.	While suicide is the result of negative thinking and deluded world view towards the purpose of human life.
8. In many cases of <i>Santhārā</i> , many	Whereas in suicide due to absence of such

mysterious incidents occur. Moreover a shower of incense of saffron (<i>kesarbarsaat</i>) is experienced due to purity of soul.	purity, no such mysticism takes place.
9. The observer achieves extra sensory knowledge and foretells that I am going to take birth in a particular realm.	The agent of suicide doesnot achieve such outstanding knowledge.
10. By confessing one's sins frankly and honestly before guru , he repents for all the misdeeds performed in the present life.	No such confession and repentance before guru for any act committed during the life.
11. The agent of <i>Santhārā</i> does not adopt any external weapons/aids for self-killing but he withdraws himself from food and water intake knowing clearly that body is no more assisting in digesting the food and water.	The common methods adopted by the agent for committing suicides are, jumping from heights, jumping in wells or deep water, jumping or lying down before a running train, shooting, hanging, poisoning by use insecticide or other drugs, burning oneself with the use of kerosene or petrol or the use of electrical wires (live) etc.
12. It is done patiently and by minimising the attachment and aversion towards all the nearest and dearest family members and towards one's possession.	Whereas in suicide, both the reasons attachment and aversion, are available and it is done in impatience.
13. Practice of <i>Santhārā</i> is based on the Double-effect theory. The death is exactly an incidental product that accompanies the spiritual purity through the elimination of karmas exactly as chaff is an incidental growth accompanying the corn which is the essential product of the seed .	It is not based on such theory but it is a sort of pessimistic thought process leading towards the painful death.
14. Man of <i>Santhārā</i> has an eye on his upward journey (liberation) and does not think of the external objects i.e., worldly pleasures. He should protect his body for annihilating the past karmas.	But it is not the case with the suicide, as it is done when the person is unable to enjoy the worldly pleasures and such an act leads to the bondage of new <i>karmas</i> .
15. The ācārya (spiritual mentor) in a Jain sect is the responsible authority who decides when and under which situations one should be allowed for such a great vow .	Here man committing suicide is morally responsible for his /her act. He/she themselves decide under which situations it is to be committed.

<p>16. <i>Santhārā</i> is adopted by monks and nuns after the due permission of guru before the huge audience with the positive mind of forgiveness and compassion towards all. Lay persons have to acquire permission from their guru and as well as from relatives.</p>	<p>Suicide is committed without such permission of parents, his /her , consent and is done with impure mind set ,with feelings of negativity, in mental stress and tension, emotional excitements and in isolation.</p>
<p>17 There is a systematic methodology of <i>Santhārā</i> in canonical literature which takes the life span of twelve years of gradual limitation of food, water etc. and minimisation of passions.</p>	<p>It is an instant death committed out of passionate mental state by adoption of questionable devices at once .</p>
<p>18. The seven conditions under which a person can adopt <i>Santhārā</i> are, 1. incurable disease, 2. old age, 3. If human, infernal, animals cause <i>upasarga</i> (hardships), 4. when a favourable situation are present before the monk for deviation from conduct, 5. due to calamity if pure means of acquiring alms becomes impossible, 6. in furious forest if monks seeks no secured place, 7. the visual power, hearing power decreases and legs do not help in walking, <i>Santhārā</i> can be adopted.</p>	<p>Whereas suicide is committed instantly due to the disappointment and frustration in personal life, emotional or sentimental breakdown in married life or love affairs, unexpected and unbearable economic loss in trade or business, sudden and heart breaking grief brought on by the death of the nearest and dearest, appearance of some disease which is incurable or socially reprehensible, sudden development of melancholia or depression either due to heredity or other hidden causes, public disgrace or dishonour of one's self or the family, an unexpected shock due to failure to realize an ambition and many other unusual factors may be regarded, either individually or cumulatively, are causes driving an individual to commit suicide.</p>
<p>19. <i>Santhārā</i> is adopted voluntarily with high spirit of self-awareness, self-confession, self-repentance, leading towards the self-purification.</p>	<p>Although it is also adopted voluntarily but with high level of negativity committed out of emotional immaturity and in psychological depression leading towards the self-destruction.</p>
<p>20. It is also claimed by the scholars that <i>Santhārā</i> is parallel to the practice of passive euthanasia. Jainism, as it is basically a non-violent religion is in opposition with this kind of mercy killing or death through euthanasia.</p>	<p>As euthanasia is a kind of suicide ,whether it is active or passive ways of attaining death, is actually a violent act and a kind of murder even not permitted by IPC too.</p>

There is thus radical difference between suicide and *Santhārā* as regards intention, situation, means adopted and the consequences of death. So it should be clearly kept in mind, that since the milk of a cow and milk taken out of the particular plant '*dhatūra* / cactus' seems equal, but one is nectar i.e. nourishes the body, the other is poison which destroys the body i.e. takes away the life. Likewise there is a great difference between suicide and *samlekhana*.

Here it is essential clarify that Mahavira had far insight in propagating any practice. He was well aware of the fact that in the era of the fifth epoch the physical strength and stamina of the body will deteriorate gradually so he gave the freedom that one should undergo any spiritual activity after testing one's own capacity. So in all the prescriptions and injections of the vows, he gave freedom of choice as quoted in canons as follows, *jahasuham devanupiya*. Although the vow of *Santhārā* is an essential part of jain religious practice, still one should judge one's own discretion while undertaking any practice. So all the jains have their own freedom of choice to abide by this vow of *Santhārā* whenever he/she feels fit for to practice this vow of worldly detachment through self-detachment.

Conclusion :

In nutshell, it can be concluded that it is a well-planned spiritual death inspired by the highest ideal of self-realization to ward off further entanglement in the bondages of karmas. As per the judge claim that there is no proof of the practice of *Santhārā* before the independence. There are hundreds of instances of *Santhārā* have been recorded in the inscriptions found in different parts of the State of Karnataka and collected in twelve volumes of *Ephigraphia Carnatica* published by the state government and many scriptural and documental evidences are authentic

sources to prove logically the age old ancient tradition of *Santhārā* being practiced in the court as.

It is emphatically denied that *Santhārā* is a voluntary suicide. *Sallekhanā* (*Santhārā*) is arbitrarily equated with the offence of suicide or Sati or euthanasia by IPC. It is submitted that a voluntary fast unto death is an act of self-destruction, which amounts to "suicide", which is a criminal offence and is punishable under section 309 by Rajasthan Court. But there is a radical difference between the *Santhārā* and suicide, Sati Pratha and Euthanasia, so it cannot be equated in any way with the above mentioned concepts philosophically, conceptually, and conventionally. I am very much convinced with the view of Abhishek Singhvi's view presented logically and strongly claiming rectification of the High Court Jaipur judgement, published in Times of India, entitled *Santhārā is not Suicide* dated on 28.8, 2015.

Moreover the tradition of *Sati Pratha* which is radically different from *Santhārā* from all angles of human understanding. The emerging concept of euthanasia needs to be further studied as few Western and Eastern scholars both relate it with the passive euthanasia but it is not so because the intention behind the vow of *Santhārā*, the situation, the means adopted and the consequences of death everything must be taken into the consideration before arriving at final judgement. So the need of the hour is to reinvestigate the entire procedure of pious death of *Santhārā* comprehensively. Moreover the case history study of the persons who have undergone such a practice of pure meditation and self-introspection with Supreme forgiveness towards one and all must be taken into consideration for better clarification of the fact.

Thus the basic concept of undertaking

the vow of *Santhārā* as *Samādhi marana* is that a man who is the master of his own destiny should resolve himself to follow the best method of leaving the body happily, peacefully and artistically. It can be finally concluded that *Sallekhanā* is a retreat to peace in true sense, to be yourself entirely free from all distractions for pure contemplation and introspection. It is a noblest way to die in the pursuit of immortality.

Bibliography Original Texts

1. *AcarangaBhashyam*. Ed. Acharya Mahaprajna. With text, Sanskrit commentary, Hindi translation, Comparative notes, Topic in text and commentary and Various appendices. Ladnun : Jain Vishva Bharati Institute.1994.
2. *Antakrtadashānga Sutra*. Ed., MadhukarMuni *Shri Agam Prakashan Samiti*, Beawar, 2011.
3. *BhagvatīSūtra*. Ed. Mishrimalji Maharaj. Beawar : Āgam Prakāshan Samiti. 1991.
4. *BhagavatiAaradhana*. Acharya Shivarya. Ed. Kailash Chandra Siddhantashastri, Jaina Samskriti Samrakshak Samgha, Sholapur, 1978.
5. *DashvaikalikaSutra*. Ed. Mishrimalji Maharaj. Beawar : Agam Prakashan Samiti. 1991.
6. *DharmāmntaSāgār* of Āśādhār. Ed. Kailash Chandra Shastri. Delhi : Bhāratīya Jñānāpith Prakaśan.1978.
7. *EpigraphiaCarnatica*, Vol.II, Inscription. I. Jacobi, Hermann M. Sacred Book of the East. Ed. F. Max Müller, JainaSūtrās. Delhi : M.B.D. Part-II, vol.-45. 1994. *Mlcra* of Vattakera. Ed. Kailash Chandra Shastri, New Delhi : Bharatiya Jyanapitha. 2000.
8. *PurusharthaSiddhupaya of AmitChandra*. Ed.

Pandit AjitaPrasad.Lucknow : The Central Jaina Publishing House.1933.

9. *RatnakarandakSrāvākācāra* of Samantabhadra. Ed. Manikchanda. Bombay: Digambara Jain Granthamālā. 1982.
10. *Sarvarthasiddhi* of Pujiyapada. Ed. and trans. by Phoolchandra Shastri. Murtidevi Jain Grantham Sanskrit Series-13. Delhi : Bhratyā Jnaptha. 13th edn. 2005.
11. *Saman Suttam*. Ed. Sagarmal Jain, Trans. T.K. Tukul and K.K. Dixit. Bhagavan Mahavir Memorial Samiti. Bhagavan Mahavira Kendra. Delhi, IST edn. 1993, II edn. 1999.
12. *TattvaarthaSutra* of Umasvati. Ed. Nathmal Tatia, "That Which Is". English Translation with the Combined commentaries of Umasvati, Pujiyapada and Siddhasena Gani. America : Collins Publications. 1994.
14. *UttarādhyayanaSūtra*. Ed. Muni Mishrimalji Maharaj. Trans. Muni Rajendra. Beawar : Āgam Prakāshan Samiti. 1991.
15. *Uttarajjayanani*. Ed. Yuvacharya Mahaprajna. With Prakrit Text, Sanskrit rendering, Hindi translation, Comparative notes and Various appendices. Ladnun : Jain Vishva Bharati Institute. Vol.-I, 1990, Vol.-II, 1993.

Secondary Books

1. Upendranath Thakur, *The History of Suicide in India*, Delhi: Munshiram Manoharlal Oriental Publishers, 1963.
2. T. K. Tukul, *Sallekhanā is Not Suicide*, L.D. Institute of Indology, L.D. Series-55, Ahmedabad, 1976.

Associate Professor in Deptt of Jainology and comparative Religion and Philosophy, Jain Vishva Bharati University, Ladnun-341306
jainism13@gmail.com

जीवन-निर्माण रश्मियाँ

संकलनकर्ता : श्री राजेन्द्र पारख

- ❧ वाणी मनुष्य का पहचान पत्र है। मनुष्य शब्द (बोली) से ही पहचाना जाता है। जुबान थर्मामीटर है। डॉक्टर को भी शरीर का ताप मापने के लिए थर्मामीटर को जीभ के नीचे ही रखना पड़ता है।
- ❧ मनुष्य के संस्कार और खानदान का माप जिह्वा से ही होता है।

❧ जीवन की हर परिस्थिति में स्वयं को खुश रखना चाहते हो तो मार्केटिंग डायरेक्टर जिह्वा को अपने वश में रखना होगा।

❧ अधिकार जब भी बोलेगा, तब विनाश की बाढ़ आयेगी और जब अनुभव बोलेगा तब प्रसन्नता छा जायेगी। इसलिए जिह्वा की सफाई हेतु विवेक का टंग क्लीनर प्रयोग में लेना चाहिए।

-103, वर्द्धमान स्ट्रीट, पावटा बी रोड, जोधपुर
(राजस्थान)

कृपया ध्यान दीजिये

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

जय जिनेन्द्र! सिर्फ मेरी ही नहीं बल्कि अनेकों पाठकगण की यह शिकायत (समस्या) रहती है कि जिनवाणी पत्रिका जयपुर से निकलती तो है, लेकिन हम तक नहीं पहुँचती। सिर्फ जिनवाणी ही नहीं बल्कि अनेक पोस्ट..जो रेगुलर पोस्ट में मिलनी होती है वह नहीं मिलती ...इसका एक मुख्य कारण यह भी सम्भावित है कि रेगुलर पोस्ट की डिलीवरी करने के लिए पोस्टमैन के ऊपर कोई followup नहीं है। पत्रिकाएँ हमें भी नहीं मिलती और न ही भिजवाने वाली संस्था को लौटती हैं ...तो वे पत्रिकाएँ आखिर जाती कहाँ है? सोचियेगा..! कहीं न कहीं हमको न मिलने वाली पत्रिकाएँ..पोस्टमैन द्वारा रद्दी की दुकानों में बेचे जाने की भी प्रबल सम्भावना है ..चूँकि पोस्टमैन को अपने इलाके में हर महीने सैकड़ों-हजारों पत्रिकाएँ..घर-घर जाकर पहुँचाने के बहुत बड़े कार्य भार या झंझट से भी मुक्ति मिल जाती है और रद्दी में बेचकर उसकी जेब भी भारी हो जाती है। पिछले कई महीनों से मुझे जिनवाणी पत्रिका नहीं मिल रही थी ..पोस्ट ऑफिस में जाकर शिकायत करने पर भी निराशाजनक प्रतिक्रिया ही मिली। फिर मैंने सोशल मीडिया का सदुपयोग करते हुए Twitter पर शिकायत की ..और जो काम महीनों से नहीं हो रहा था वह कुछ ही दिनों में हो गया और अब वह ही पोस्टमैन हर महीने समय पर सभी पत्रिकाएँ पहुँचा रहा है ..इस डर से कि कही Twitter पर फिर से उसकी शिकायत न दर्ज हो जाए (अधिकतर सरकारी कर्मचारी सिर्फ ऊपर की गई शिकायत से ही डरते हैं)। युवा पाठक तो सोशल मीडिया पर जागरूक हैं ही ..पर बुजुर्ग पाठकों से नम्र निवेदन है कि यदि आपको पत्रिकाएँ नहीं मिल रही ..तो घर के सदस्य से Twitter पर.. निम्नलिखित प्रारूप में (आपकी सुविधा के लिए उपलब्ध) पिनकोड सहित

अपनी शिकायत दर्ज करवायें..जिससे बिना विलम्ब अथवा बिना बाधा के आपको पत्रिकाएँ निरन्तर मिल सकें एवं अपनी जागरूकता से ...पोस्टमैन (यदि दोषी है तो) भी चोरी के पाप से और अज्ञानवश की जा रही ज्ञान की आशातना से बच सकें।

Twitter@IndiaPostOffice

halo sir / mam ...postman is not delivering monthly magazines from many months ...plz do the needful ..TARUN JAIN, CHENNAI 600002 . (May 2, 2023, 5:06 PM)

SAMPLE MAGAZINE ...photo (May 2, 2023, 5:15 PM)

We're sorry for the trouble faced by you. Please allow us some time to look into your issue, our team will assist you. (May 2, 2023, 5:42 PM)

Okay (May 3, 2023, 4:22 PM)

Sir/Madam, Letters and magazines received through Ordinary Post are being delivered on the same day of receipt at Anna Road HPO. The Postman has reported that this particular magazine was not received by Anna Road HPO for the past six months. Hence, you are requested to check with office of posting end. (May 9, 2023, 11:28 AM)

Sir /madam not only this magazine but also we are not receiving any book by regular post from past many months. This magazine has been posted every month at Jaipur post office but the postman from Anna road HPO is not doing his delivery duty properly. Please do the needful. Thanks in advance. (May 9, 2023, 12:50 PM)

Sir/Madam, Letters and magazines received through Ordinary Post are being delivered on the same day of receipt at Anna

Road HPO. The Postman has reported that magazines and letters received for the said customer are being delivered without any delay. However suitable instructions are being issued to the Postmen for prompt delivery of articles. (May 12, 2023, 3:56 PM)

Problem solved ! Postman Mr Narsimhan has started delivering all regular posts. Thanks for fast and prompt response. (May 16, 2023, 12:15 PM)

- 'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

जीव-कर्म संवाद

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'

भव सागर गति चार रुले,
अनन्ता कष्ट उठाया है।
शुभ पुण्य जगे तब ही हमने,
ये भव मानव का पाया है।।
ऐ जीव! मेरे क्यों कर्मों के, तूने इतने उत्पात सहे,
सम्यक् पुरुषार्थ जगाया नहीं,
फिर भी क्या तेरी बात कहें।।
घातक शत्रु तेरे अन्तर के, बाहर शत्रु बनवाते हैं।
तू समझ पा रहा नहीं इन्हें,
जो तुझको मूर्ख बनाते हैं।।
चौरासी में भटकाया, तुझे गतियों में अटकाया,
सुअवसर है अब आया, दस बोलों को भी पाया,
कर ले जंग कर्मों से आत्मा।।1।।
सुन लो कर्मों! तुमने मुझपे,
अब तक जितने भी जुल्म किये।
अज्ञान, मोह और राग-द्वेष में,
फँसकर मैंने सहन किये।।
घर मोक्ष स्थायी है मेरा,
फिर भी मैं मुमुक्षु बन न सका।
कर्मों तुमने हर बार मुझे,
सन्मार्ग-गमन से रोक रखा।।
कभी विषयों में ललचाया,
या कषायों को भड़काया।
साधना से दूर रखने को मुझे।
चलवाई मोह की आँधी,

न रखी है कसर कोई बाकी,
किया विचलित मुक्ति-पथ से है मुझे।।2।।
हावी जब मुझपे कषाय हुए,
उन्हें समता का पाठ पढ़ा न सका।
मन और इन्द्रियों को भी अपने,
संयम की लगाम लगा न सका।।
जो भाव नकारात्मक आये,
उनको भी मैं अपनाता गया।
निज आत्मा में कर्मों के पुद्गल,
इसी तरह मैं बढ़ाता गया।
कर्म बँधते आसानी से, पर छूटे परेशानी से,
बन्ध से तू दूर रहना आत्मा।
ऐसे झटके ये देते हैं, पल में सब हर लेते हैं,
भोगे बिन छुटकारा मिले ना।।3।।
ये तेरी नहीं और मेरी नहीं, हम सब की कहानी है,
कर्मों से द्वन्द्व करने को हमें, निर्जरा अपनानी है।
सम्यक् पुरुषार्थ से कर्मों का,
हम पर फिर कोई हक नहीं होगा,
आत्मा से साथ इनका फिर हम,
न मोक्ष जायें तब तक होगा।।
अनन्त शक्ति का हूँ स्वामी,
मुक्ति पथ का हूँ राही, कर्मों न रोक पाओगे मुझे।
बेअसर है मोह अब मुझपे,
न चले कोई दावँ अब मुझपे,
यूँ हरा न पाओगे तुम अब मुझे।।4।।

- 'प्रसंजिक' सी-16/1, कृष्णकुञ्ज, हलेड रोड,
भीलवाड़ा (राजस्थान)

बुद्धिमान्नी से सेवा करें

संकल्पिता : श्री एस. कन्हैयालाल गोलेछा

एक लड़की विवाह करके ससुराल में आयी। घर में एक तो उसका पति था, एक सास थी और एक दादी सास थी। वहाँ आकर उस लड़की ने देखा कि दादी सास का बड़ा अपमान एवं तिरस्कार हो रहा है। छोटी सास उसको ठोकर मार देती और गाली भी दे देती थी। यह देखकर उसको बड़ा बुरा लगा और दया भी आयी। उसने विचार किया कि अगर मैं सास से कहूँ कि आप अपनी सास का तिरस्कार मत किया करो तो वह कहेगी कि कल की छोकरी आकर मुझे उपदेश देती है। अतः उसने अपनी सास से कुछ नहीं कहा। उसने एक उपाय सोचा। वह रोज गृहकार्य करके दादी सास के पास जाकर बैठ जाती और उसके पैर दबाती। जब वह वहाँ अधिक बैठने लगी तो यह सास को सुहाया नहीं। एक दिन सास ने उससे पूछा कि-“बहू! वहाँ क्यों जा बैठी?” लड़की ने कहा कि-“बोलो, काम बताओ।” सास बोली कि काम क्या बतायें, तू वहाँ क्यों जा बैठी? लड़की बोली कि-“मेरे पिताजी ने कहा था कि जो घर में बड़े-बूढ़े हों, उनके पास बैठना, उनसे शिक्षा लेना। वहाँ पर यहाँ जैसी रिवाज नहीं चलेगी, वहाँ तो तेरे ससुराल की रिवाज चलेगी। इस प्रकार मेरे पिताजी ने मुझे शिक्षा दी है।” बहू आगे कहने लगी-“मेरे को यहाँ की रिवाज सीखनी है, इसलिए मैं दादी सास से पूछती हूँ कि मेरी सास आपकी सेवा कैसे करती है?” बहू के ऐसा कहने पर सास ने पूछा-“बुद्धिया ने क्या कहा?” वह बोली कि-“दादीजी कहती हैं कि यह मेरे को ठोकर नहीं मारे, गाली नहीं दे तो मैं सेवा ही मान लूँ।” सास बोली कि-“क्या तू भी ऐसा ही करेगी?” वह बोली कि-“मैं ऐसा नहीं कहती हूँ, मेरे पिताजी ने कहा है कि बड़ों से ससुराल की रीति सीखना।”

सास डरने लग गयी कि मैं अपनी सास के साथ

जो बर्ताव करूँगी, वही बर्ताव मेरे साथ होने लग जायेगा। एक जगह कोने में ठीकरी इकट्ठी पड़ी थीं। सास ने पूछा-“बहू! ये ठीकरी क्यों इकट्ठी की है?”

बहू ने कहा-“आप दादीजी को ठीकरी में भोजन दिया करती हो, इसलिए मैंने पहले ही जमा कर ली।”

सास बोली-“तू मेरे को ठीकरी में भोजन करायेगी क्या?”

बहू-“मेरे पिताजी ने कहा है कि तेरे वहाँ की रीति चलेगी।”

सास-“यह रीति थोड़े ही है।”

बहू-“तो फिर आप ठीकरी में क्यों देती हो?”

सास-“थाली कौन माँजे?”

बहू-“थाली तो मैं माँज दूँगी।”

सास-“तो तू थाली में दिया कर, ठीकरी उठाकर बाहर फेंक।”

अब बूढ़ी माँजी को थाली में भोजन मिलने लगा। सबको भोजन देने के बाद जो बाकी बचे, वह खिचड़ी की खुरचन, कंकड़ वाली दाल माँ जी को दी जाती थी, लेकिन अब सास उसको हाथ में लाकर देने लगी। सास ने पूछा-“बहू! क्या देखती हो?”

बहू-“मैं देखती हूँ कि बड़ों को भोजन कैसा दिया जाय।”

सास-“ऐसा भोजन देने की कोई रीति थोड़े ही है।”

बहू-“तो फिर आप ऐसा भोजन क्यों देती हो?”

सास-“पहले भोजन कौन दे?”

बहू-“आप आज्ञा दो तो मैं दे दूँगी।”

सास-“तो तू पहले भोजन दे दिया कर।”

बहू-“अच्छी बात है।”

अब बूढ़ी माँजी को बढ़िया भोजन मिलने लगा। रसोई बनते ही बहू ताजी खिचड़ी, ताजा फुलका, दाल-साग ले जाकर माँजी को दे देती। माँजी तो मन-ही-मन आशीर्वाद देने लगी। माँजी दिनभर एक खटिया में पड़ी रहती। खटिया टूटी हुई थी। उसमें से बन्दनवार की तरह मूँज नीचे लटकती थी। लड़की उस खटिया को देख रही थी। सास बोली कि-“क्या देखती हो?”

बहू-“देखती हूँ कि बड़ों को खाट कैसे दी जाय।”

सास-“ऐसी खाट थोड़े ही दी जाती है। यह तो टूट जाने से ऐसी हो गयी।”

बहू-“तो दूसरी क्यों नहीं बिछाती हैं?”

सास-“तू बिछा दे दूसरी।”

बहू-“आप आज्ञा दो तो दूसरी खाट बिछा दूँ।”

अब माँ जी के लिए निवार की खाट लाकर बिछा दी गयी। एक दिन कपड़े धोते समय वह बहू माँजी के

कपड़े देखने लगी। कपड़े छलनी हो रखे थे। सास ने पूछा कि-“क्या देखती हो?”

बहू-“देखती हूँ कि बूढ़ों को कपड़े कैसे दिये जाय।”

सास-“फिर वही बात, कपड़ा ऐसा थोड़े ही दिया जाता है? यह तो पुराना होने पर ऐसा हो जाता है।”

बहू-“फिर वही कपड़ा रहने दें क्या?”

सास-“तू बदल दे।”

अब बहू ने माँजी का कपड़े, चादर, बिछौना आदि सब बदल दिये। उसकी चतुराई से बूढ़ी माँजी का जीवन अच्छा बन गया।

अगर वह बहू सास को कोरा उपदेश देती तो क्या वह उसकी बात मान लेती? बातों का असर नहीं पड़ता, आचरण का असर पड़ता है। इसलिए प्रत्येक को चाहिए कि ऐसी बुद्धिमानी से सेवा करें और सबको खुश रखें।

-7/25, कामराज साले आर.ए. पुरम, चेन्नई-600028

कुछ सोये लोगों को जगाना

श्री त्रिलोकचन्द जैन

कुछ सोये लोगों को जगाना है,
उन्हें स्वप्न से हकीकत में लाना है।
वे खोये हुए हैं स्वार्थी मायाजाल में,
उन्हें परमार्थ की सम्यक् राह दिखाना है।।
धन, वैभव, सत्ता ने अवसाद में है डाला,
इनसे परे हटाकर स्वभाव में लाना है।
गुलाम बन बैठे हैं सुख-सुविधाओं के,
अब अभाव में भी प्रसन्नता दिलाना है।।
आसक्त हैं कुटुम्ब परिवार स्वजन में,
उनमें भी भाव विरक्त पनपाना है।
भोग-उपभोग को ही मान बैठे जीवन,
अब उपयोग से लक्ष्य पास बुलवाना है।।
सत्य की खोज, सम्यक् शोध, सही बोध,
जागकर स्वयं, अब औरों को जगाना है।
उन्हें स्वप्न से हकीकत में लाना है।।

-44/219, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

जिनशासन यह कहता है

श्रीमती शिपिका जैन

(तर्ज :: मधुबन खुशबू देता है)

जिनशासन यह कहता है संयम मुक्ति देता है।
जिनवाणी जो सुनता है जीवन उसका खिलता है।।
योगी न बन पाए तो भोगों से तू बचता चल-2
सागर न बन पाए तो नदिया बनके बहता चल-2
करुणा से दामन भरना है भोगों से तो डरना है।
जिनवाणी जो सुनता है जीवन उसका खिलता है।।
संयमी न बन पाए तू श्रावक बन के चलता चल-2
तप कि लौ में न जल पाए कर्मों से तू बचता चल-2
व्रतों से जीवन सजाना है आस्रवों से खुद को बचाना है।
वीतरागी ना बन पाए तू दुर्भावों से बचता चल -2
विषयों से ना बच पाए तो कषायों से तू बचता चल-2
रागों से खुद को बचाना है मुक्ति का मार्ग पाना है।
जिनशासन यह कहता है.....

-मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

पुद्गलानन्दी नहीं, आत्मानन्दी बनें

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

प्रायः व्यक्ति पुद्गलों में ही आनन्द मानता है तथा पुद्गलों में ही आसक्त बना रहता है। उसे अपनी आत्मा की सुध लेने का ध्यान ही नहीं रहता है। वह आत्मा को भूल कर सांसारिक कार्यों में ही रचा-पचा रहता है। उसकी यही प्रवृत्ति दुःखों की मूल कारण है। व्यक्ति यौवन अवस्था से बुढ़ापे की अवस्था में प्रवेश करता है, बाल सफेद होने लग जाते हैं, इन्द्रियाँ शिथिल होने लग जाती हैं, फिर भी आत्म-जागृति नहीं होती, धर्मारधना के प्रति रुचि नहीं जगती। चिन्तन करें, इस दशा में आत्मा का कल्याण कैसे हो सकता है? बाल्यावस्था हो, चाहे युवावस्था हो और चाहे वृद्धावस्था हो, हमें प्रत्येक अवस्था में धर्म अवश्य करना चाहिए। धर्म को विस्मृत कर हम सुखी नहीं बन सकते और न ही आत्मा का कल्याण हो सकता है। किसी कवि ने ठीक कहा है-

सुबह तो बीत गई, खेल खिलौने में,
दोपहर बीत गई, बिस्तर बिछौने में।
लो सन्ध्या भी अब ढलने आई है,
गाफिल न रहना, रोने और धोने में।।

जीव दो प्रकार के होते हैं-

1. पुद्गलानन्दी जीव-नाशवान पुद्गलों में और संसार के विषय-भोगों में आसक्त होकर व्यक्ति सुख पाने की चाहना करता है। भोगवादी प्रवृत्ति से व्यक्ति अशान्त बना हुआ है। भौतिक साधनों से सुख प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा पालता है। विकारोत्पादक सामग्रियों के परिग्रह से सुख के बजाय दुःख अधिक मिल रहा है। धन-राशि इकट्ठा करने के लिए धन के पीछे जितना दौड़ते रहेंगे, उतनी ही कर्मों की राशि इकट्ठी होती चली जाएगी। पुद्गलों के व्यामोह से निकलकर धर्म को

अपनाने से ही आत्मा का उत्थान सम्भव है। पुद्गलों की आसक्ति को त्यागें और धर्म से जुड़ें तभी मोक्ष मञ्जिल की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

2. आत्मानन्दी जीव-जो जीव आत्मा के कार्यों में आनन्द मानता है, वह जीव आत्मानन्दी जीव कहलाता है। वह आत्मा की उन्नति के लिए पुरुषार्थ करता है। सांसारिक कार्यों में रुचि न लेकर आत्मानन्दी जीव आत्म-कल्याण के कार्यों पर अधिक ध्यान देता है। आत्मा पवित्र-पावन बनी रहे, इसके लिए वह कषायों को मन्द करने का प्रयास करता है तथा आत्मा के ऊपर आए हुए कर्मों के आवरण को दूर करने के लिए तप-त्याग की वृत्ति को अपनाता है। वह शुद्ध साधना-आराधना कर अपनी आत्मा को सद्गुणों से भावित करने का लक्ष्य रखता है। भौतिक सुखों की चाहना नहीं करके आत्मानन्दी जीव आध्यात्मिक सुख पाने के लिए कटिबद्ध रहता है तथा आत्मा के अधिक से अधिक समीप रहने से आत्मा का उद्धार करने में सफल होता है। जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए आत्मानन्दी जीव निम्न तीन बातों का ध्यान रखता है-

1. सभी परिस्थितियों को स्वीकार करता है (Accepts all situations)-जीवन में सुख-दुःख का क्रम चलता रहता है। सुख आने पर मन में अधिक फूलता नहीं है और दुःख आने पर घबराता भी नहीं है। दोनों ही परिस्थितियों में समभाव रखता है, जिससे उसके चित्त की समाधि बनी रहती है।

2. सभी के गुणों को सम्मान देता है (Accepts Virtues of all)-सभी के गुणों को सम्मान देने से आत्मा कभी दुःखी नहीं बनता। रिश्तों में दरारें नहीं आती। यदि सम्बन्ध बिगड़ते हैं तो सामने वाले

की सही बात भी गलत लगती है। जबकि ज्ञानी कहते हैं कि सबकी बातों को सम्मान दो, साधर्मि को आदर दो। सभी अपने हितैषी हैं।

3. सभी के लिए अनुकूल बनकर रहता है (Adjusts with All)–हमें परस्पर निभने और निभाने की कला आनी चाहिए। सभी के साथ हम निभना सीखें। व्यापार करने से पहले कुशल व्यवहार

करना सीखें। परमात्मा की पूजा-अर्चना से पहले माता-पिता का आदर-सम्मान करना सीखें। माता-पिता एवं बड़ों की सेवा करना सीखें। ऐसी वृत्ति रखने से सबके साथ मधुर सम्बन्ध बन सकते हैं।

-जन्ता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

योग तत्त्व-बोध

डॉ. रमेश 'मंयक'

योग- श्रेष्ठ कल्प वृक्ष, चिन्तामणि,
सिद्धि का साधन, मोक्ष से जोड़ने की प्रवृत्ति
जो ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य से
शोधित करे
वचन-काया और मन।
योग- नष्ट करता
चिरकाल से संचित पाप कर्म,
आसन-कुम्भक रेचक से,
अनुलोम-विलोम से,
नियन्त्रित होती इन्द्रियाँ,
और विषयों का प्रतिगमन
तब साधना से
समझ में आता
योग तत्त्व-बोध का मर्म।
योग के प्रभाव से
आत्मा अपने शुद्ध भाव को
जान पाती,
संसार की असारता
समझ में आती,
भाव-धरा पर
यात्री को जल में नाव
जन्म तट से प्रवाहित कर
मोक्ष-किनारे पर पहुँचाती

तब जीवन की कष्ट-पीड़ाएँ
स्वतः समाप्त हो जातीं।
अध्यात्म-योग दृष्टि से होता
वृत्तियों का क्षय,
मैत्री-करुणा-मुदिता से
जुड़ने लगती
जीवन-श्वास की लय,
सत्त्व का उत्कर्ष
पीयूष का आस्वादन कराता,
काम-क्रोध-अशुभ भावों की
समाप्ति से व्यक्ति निवृत्त हो जाता।
ध्यान-योग ज्ञान-विज्ञान
तप-स्वाध्याय से
चित्त की एकाग्रता
वृद्धि पाती है,
चिन्तना-दोष रहित स्थिति की
तरफ बढ़ाती है,
फिर-कुछ नहीं कर पाते
खेद-उद्वेग-रोग और भ्रम
बस आवश्यक होता है
समता की साधना का
करते हुए विकास
विवेक की सक्रियता के साथ
योग-तत्त्व बोध का अभ्यास।

-बी-8, मीरर नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

दादी सास का नया रूप

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

छह माह पहले ही ललिताजी के पोते की शादी हुई। ललिताजी की शादी 14-15 साल की लघु उम्र में ही हो गई थी। पति हीरों के व्यापार के लिए मुम्बई आ गये। बहुत ही कम समय में उन्होंने अपना व्यापार अच्छा जमा लिया।

एक पुत्र हुआ, बड़ा होकर वह भी अपने पिता के व्यवसाय में हाथ बँटाने लगा।

समय पंख लगाकर उड़ जाता है। ललिताजी लगभग 73 साल की हो गई हैं। पतली-दुबली हैं। आँखों पर चश्मा लगाती हैं और हमेशा इस्त्री की हुई सूती साड़ियाँ पहनती हैं।

घर में रसोइया और अन्य सहायक भी हैं। वह अक्सर घर में सामायिक करती है और शाम को 3-4 घंटे बगीचे में बैठती है, जहाँ पर सोसायटी की दूसरी औरतें भी आती हैं और सब गपशप करती हैं।

एसे ही एक दिन 7-8 औरतें कुर्सियों पर बैठी थी, उनमें से एक ने कहा-“ललिताजी पहले तो रोज आती थी, आजकल नहीं आती हैं, न जाने क्या हो गया? पोते की शादी भी हो गई। घर में इतना कुछ काम भी नहीं है। स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। आखिर घर में पूरे दिन क्या करती हैं?” तभी गुलाबी रंग के सलवार सूट पहने एक आंटी बोली-“घर में बैठे-बैठे तो बोर ही होते हैं, आखिर कितने समय तक हम टी.वी. देखें।”

कुछ दिन पूर्व का ललिताजी के घर का दृश्य

नेहा (ललिताजी के पोते की बहू)-दादीसा, आप मुझे आपके बचपन के बारे में कुछ बताओ ना।

ललिताजी-नेहा मुझे पढ़ने का बहुत शौक था। मेरी पढ़ाई केवल चौथी कक्षा तक हुई है, बाद में बेटे को पढ़ाई करवाते वक्त काफी कुछ और सीख गई।

नेहा-दादीसा आपके मन में कोई अधूरी इच्छा है?

ललिताजी-पुण्यवानी से सब कुछ प्राप्त है, अच्छा घर-परिवार है, घर में संप और सम्पत्ति है। समाज सेवा करना चाहती हूँ, पर क्या और कैसे करूँ, नहीं पता?

नेहा-दादीसा आप कल शाम को चौविहार करने के बाद मेरे साथ चलिए।

ललिताजी-कहाँ!

नेहा-यह तो सरप्राइज है।

अगले दिन शाम 7:00 बजे ललिताजी और नेहा गाड़ी में बैठकर एक अनाथालय जाते हैं। नेहा ने कार्यक्रम पहले ही सेट कर रखा था। वहाँ के मैनेजर से बात करके एक माइक की व्यवस्था कर दी थी और सब बच्चे बड़े हॉल में आकर बैठ गये।

नेहा ने माइक हाथ में लिया और कहा-“आपमें से कहानी सुनना किसको पसन्द है?” सभी ने अपने हाथ खड़े कर दिये और होठों पर मुस्कान आ गई।

नेहा-“दादीसा को बहुत सारी कहानियाँ आती हैं। आज ये आपको धन्ना-शालिभद्र की कहानी सुनायेंगी।” ललिताजी बच्चों के इतने उत्सुक और खुश चेहरे देखकर मना नहीं कर पाई और उन्होंने बहुत अच्छे से कहानी सुनाई।

बच्चे तो कहानी में एकदम खो गये थे। बच्चे तो बच्चे, मैनेजर और अन्य काम करने वाले सहायक सब अपना-अपना काम छोड़कर कहानी सुनने लगे।

अन्त में सभी ने जोरदार तालियाँ बजाई और दादीसा का धन्यवाद किया।

नेहा-“दादीसा, यही आपकी सेवा होगी, हफ्ते

में एक दिन आकर आपको यहाँ नई-नई कहानी सुनानी पड़ेगी।”

दादीसा को भी इतना मजा आने लगा कि वह अब अलग-अलग जगह जाकर जैनधर्म की कहानियाँ सुनाने लगी।

ललिताजी में एक अलग ही आत्मविश्वास

छलकने लगा और समय काटने की जगह अब उन्हें समय कम लगने लगा। वे स्वयं पढ़कर नई-नई कहानी सुनाने की तैयारी करने लगी।

सेवा के अनेक रूप हैं, अपने समय को हमेशा सार्थक कार्यों में उपयोग लें।

-वर्ती, मुम्बई (महाराष्ट्र)

मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो

श्री विजेन्द्र कुमार जैन
(तर्ज :: मेरे देश प्रेमियों....)

मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे...
महापर्व है आया सन्देशा पावन लाया
धर्मस्थान में आकर,
सामायिक स्वाध्याय करो
मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे...
जिनवाणी को सुनकर ज्ञान प्रकाश को पाकर,
धर्म की राह चलो
मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे....
मन में करुणा लाकर दया भाव दिखलाकर,
अभय दान करो
मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे....
मोह माया को त्यागो, ईर्ष्या भाव को छोड़ो
पापों से मुक्त बनो
मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे....
त्याग तपस्या करके आत्मा को निर्मल करके
मोक्ष के मार्ग चलो
मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे....
वैर भाव मिटाकर, विनय भाव तुम रखकर
आपस में गले लगाकर,
सबको तुम माफ़ करो
मेरे जैन भाइयों आपस में प्रेम करो मेरे.....

-77/235, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर

ऐसा अवसर कब होगा

श्री सुशील चाणोदिया
(तर्ज :: चाँद सी महबूबा हो मेरी)

छोड़ जगत् संयम को धरेंगे, ऐसा अवसर कब होगा।
जावज्जीवाय सामायिक लेंगे,
ऐसा अवसर कब होगा।।
कब भोग के बन्धन टूटेंगे, और स्नेह के नाते छूटेंगे,
कब क्रोध कषाय के चोर बड़े,
मेरे आतम धन को न लूटेंगे।
आरम्भ-परिग्रह त्याग करेंगे, ऐसा अवसर कब होगा।
जावज्जीवाय सामायिक लेंगे,
ऐसा अवसर कब होगा।।
कब मोह मिथ्यात्व का न तम हो,
और चारित्र मोह क्षयोपशम हो,
महापुण्य से सन्त समागम हो,
और वैरागी मेरी यह आत्म हो।
जिनवाणी में लीन बनेंगे, ऐसा अवसर कब होगा।
जावज्जीवाय सामायिक लेंगे,
ऐसा अवसर कब होगा।।
कर जोड़ गुरु के सम्मुख हों खड़े,
करेमि भंते का वह पाठ पढ़ें,
वोसिरामि वोसिरामि कह, सातवाँ हम गुणस्थान चढ़ें,
दृढ़ साहस संग आगे बढ़ेंगे, ऐसा अवसर कब होगा।
जावज्जीवाय सामायिक लेंगे,
ऐसा अवसर कब होगा।।

-3-6-20, हिमायतनगर, हैदराबाद-500029

उपवास को आदत बनाइए

श्री राजकुमार जैन

विश्व के सभी प्रमुख धर्मों में उपवास को महत्त्वपूर्ण माना गया है, तब अवश्य ही इसकी पृष्ठभूमि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहा होगा। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने साबित कर दिया है कि उपवास मात्र धार्मिक रूढ़ि ही नहीं है, बल्कि इस अनुष्ठान के पीछे सेहत और शारीरिक सञ्चालन का एक सार्वकालिक एवं सुविचारित चिन्तन छुपा हुआ है। आज चिकित्सा-विज्ञान उपवास को स्वास्थ्य के प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत एक अनिवार्य आवश्यकता मानने लगा है।

यह सत्य है कि शरीर को चलाने के लिए वायु और जल की भाँति भोजन भी एक आवश्यक तत्त्व है, मगर भोजन की पूरी उपयोगिता तभी है, जब स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन किया जाए। सतत कार्य करते रहने से पाचनतन्त्र में कई प्रकार के अनुपयोगी तत्त्व एकत्रित होते रहते हैं। जब बिना पचा हुआ भोजन शरीर में एकत्र होकर सड़ने लगता है, तब वह शरीर के रक्त को विषाक्त करने लगता है। यह विषाक्त रक्त ही अनेक प्रकार की व्याधियाँ पैदा करने के लिए उत्तरदायी है। शरीर में संगृहीत अनुपयोगी एवं विजातीय तत्त्वों के परिशोधन के लिए सबसे सुलभ, सर्वोत्तम और प्राकृतिक उपाय उपवास ही है। उपवास अपने आप में एक सम्पूर्ण उपचार परिशोधन पद्धति है।

शारीरिक और मानसिक विश्राम की दृष्टि से उपवास एक अनुपम प्राकृतिक देन है तथा यह आरोग्य की कुञ्जी है। सोवियत जीवविज्ञानी ब्लाड दीमीर निकिलन ने उपवास पर लम्बे समय तक अनुसन्धान किया और निष्कर्ष के तौर पर कहा कि यौवन को लम्बे समय तक अक्षुण्ण रखने में उपवास की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उनके शोध-परिणामों के अनुसार लोगों के अल्पायु में मरने का मुख्य कारण पाचनतन्त्र की गड़बड़ियाँ हैं, जो अधिक खाने से उत्पन्न होती हैं। ब्लाड

दीमीर ने जोड़ों के जकड़ने की असाध्य बीमारी को पैतालीस दिन के उपवास से ठीक करने का सफल प्रयोग भी किया।

उपवास के बारे में हुए वैज्ञानिक अनुसन्धानों के बाद अब इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। अमरीका के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉक्टर हर्बर्ट एम. शेल्टन ने उपवास की स्वास्थ्य की दृष्टि से विस्तृत व्याख्या करते हुए इस सम्बन्ध में एक पुस्तक 'फास्टिंग केन सेव योर लाइफ' (उपवास से जीवन रक्षा) लिखी है। यह पुस्तक सम्पूर्ण विश्व में बहुत अधिक लोकप्रिय हुई है।

प्राचीन काल में सभी चिकित्सा पद्धतियों में विभिन्न रोगों के उपचार की औषधि के साथ उपवास का भी प्रावधान था। कई प्रकार के रोगों का उपचार तो मात्र उपवास के द्वारा ही किया जाता था। कालान्तर में मनुष्य के जीवन में आई जटिलताओं ने उपवास जैसी नितान्त प्राकृतिक एवं निर्दोष चिकित्सा पद्धति को बिसरा दिया।

मगर अब आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में उपचार पद्धति के रूप में उपवास को महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा है। 'शिकागो के इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ डगलेश' में फिजिक्स के प्रोफेसरों द्वारा उपवास के माध्यम से कई असाध्य रोगों का इलाज किया जा रहा है। लम्बे उपवास द्वारा पेट की असाध्य बीमारियों, मूच्छा, खून की कमी जैसे अनेक रोगों का सफल उपचार किया जा रहा है और उसके उत्साहवर्द्धक नतीजे भी मिल रहे हैं।

चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञ फ्यूरिंगटन के अनुसार मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य, सौन्दर्य, यौवन और जीवन के वास्तविक आनन्द की प्राप्ति का सबसे सरल और प्राकृतिक उपाय है-सप्ताह में एक बार नियमित रूप से उपवास करना। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ आपके जीवन के आध्यात्मिक आधार को भी सुदृढ़ करता है।

आज पूरे विश्व में, खासतौर पर पश्चिमी देशों में उपवास की लोकप्रियता में लगातार वृद्धि हो रही है। स्वास्थ्य के आधारभूत सिद्धान्त रोगों से सुरक्षा और रोगों के उपचार में उपवास समान रूप से प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति सिद्ध हो रही है। उपवास से स्वास्थ्य वर्द्धन से लेकर आरोग्य संरक्षण जैसे अनेक लाभ हैं। विश्व के प्रमुख चिकित्सा शास्त्रियों और विचारकों ने अपने अनुभवों से इसकी महत्ता को स्वीकार किया है।

यदि हम उपवास के धार्मिक और आध्यात्मिक

पक्ष को अनदेखा भी कर दें तो भी शारीरिक और मानसिक रूप से होने वाले लाभ ही हमें अपने जीवन-क्रम में उपवास को स्थान दिलाने हेतु पर्याप्त आधार रखते हैं। उपवास को अपनी दिनचर्या का अंग बनाइए। आज की तेज गति से दौड़ती मशीनी-ज़िन्दगी में उपवास आपके लिए प्राकृतिक रूप से एक वरदान साबित हो सकता है।

-राज स्टेशनर्स, नवजीवन हॉस्पिटल के पास,
भवानीमंडी (राजस्थान)

सभ्य भाषा

श्री शुभम बोहरा

एक अन्धा आदमी राह से गुज़र रहा था। एक अन्य आदमी भी उसके साथ-साथ चल रहा था। चलते-चलते सामने एक आदमी आया। उसने कहा-“अन्धिया बाबा! राम-राम।” अन्धे ने कहा-“गोले! राम-राम!”

थोड़ी दूर आगे चलने पर एक अन्य आदमी आया। उसने कहा-सूरदास बाबा! राम-राम! अन्धे ने तत्काल कहा-हाँ ठाकुर साहब! राम-राम! साथ चलने वाले आदमी ने देखा अन्धा जो कह रहा है वह बिलकुल सही है। पहला व्यक्ति गोला था तथा दूसरा व्यक्ति ठाकुर था। उसने अन्धे से पूछा जब आपको दिखाई ही नहीं देता तब आपने गोले को गोला और ठाकुर को ठाकुर कैसे कहा? अन्धे व्यक्ति ने कहा मैंने उन्हें बोली से पहचाना। जो आदमी सम्मानजनक भाषा से बोलता है वह सम्माननीय होता है जो असम्मानजनक भाषा बोलता है वह ओछा आदमी होता है। राजस्थानी में एक कहावत है-

भरिया सो छलकै नहीं, छलकै सो आधा।

मिनखां आही पारखा, बोल्या कलाधा।।

अर्थात् जो घड़ा भरा हुआ होता है, वह छलकता नहीं। जो अधूरा भरा होता है वह छलकता है। मनुष्य की भी यही कसौटी है। उसके बोलने से ही पता चल जाता है। यदि वह सभ्य है तो सभ्य भाषा

बोलेगा, यदि असभ्य है तो उसके वचनों में असभ्यता रहेगी।

बच्चों की भाषा उनके अपने वातावरण से बनती है। यदि आस-पास का वातावरण संस्कारित होता है तो उनकी भाषा सभ्य होगी। यदि वातावरण असंस्कारित है तो उनकी भाषा असभ्य होगी। शालीन लड़के वे ही होते हैं जो सभ्य भाषा बोलते हैं। बहुत सारे लड़के बचपन से ही गन्दी गालियाँ बोलना सीख जाते हैं। इससे उनका बहुत बड़ा अनिष्ट होता है। जब भी वे सभ्य समाज में बैठते हैं तो उनका आदर नहीं होता। अपनी गन्दी भाषा के कारण उनका कहीं सम्मान नहीं होता। बहुत सारे लड़कों की आदत ही ऐसी हो जाती है कि उन्हें अपनी असभ्य बोली का ध्यान ही नहीं रहता। उन्हें यह भी भान नहीं रहता कि वे किसके सामने क्या बोल रहे हैं। ऐसे लड़के प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

इसलिए उचित तो यही है कि अच्छे साथियों की संगति की जाये। जब संगति खराब होती है तो न केवल भाषा बिगड़ती है, अपितु आदतें भी बिगड़ जाती हैं। कुसंगति में पड़े बालक गन्दा साहित्य पढ़ने लगते हैं तथा गन्दा कार्य करने लगते हैं और गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। जिससे उनका चरित्र ही बिगड़ जाता है। चरित्रहीन लोग जीवन में सफल नहीं हो पाते हैं।

-आर. सी. बाफना सामायिक-स्वाध्याय
भवन्, जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

एकत्व भावना

संकलनकर्ता-श्री लड्डूलाल जैन (देवली वाले)

प्रश्न- भावना से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- किसी वस्तु या विषय का बार-बार चिन्तन करना, भावना अथवा अनुप्रेक्षा कहलाती है, ये बारह होती हैं। यथा-अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधि दुर्लभ एवं धर्म भावना।

ये बारह भावनाएँ संसार, देह और भोगों से वैराग्य उपजाने वाली हैं तथा तत्त्व और धर्म-ध्यान का कारण है। संसारादि से वैराग्य तथा उदासीनता के बिना धर्म-ध्यान और तत्त्वाभ्यास में लगना नहीं हो सकता। साधक अपने वैराग्य की वृद्धि के लिए तथा उपसर्ग-परीषह के काल में समता भावों की प्राप्ति के लिए बारह भावनाओं का चिन्तन करते हैं, उन्हें अनुप्रेक्षा भी कहते हैं।

छन्द

शुभ, अशुभ कर्म फल जेतें, भोगे जिय ऐकें तेते।
सुत, दारा, होई न सीरी, सब स्वारथ के हैं भीरी॥
आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ इस जीव का, साथी सगा न कोय॥
परमारथ ते आत्मा, एक रूप हो जोय।
कर्म निमित्त विकल्प घने, तिन नाशे शिव होय॥
एकत्व ही शिव सत्य है, सौन्दर्य है एकत्व में।
स्वाधीनता सुख शान्ति का, आवास है एकत्व में॥
एकत्व को पहचानना ही भावना का सार है।
एकत्व की आराधना, आराधना का सार है॥

अनित्य, अशरण और संसार भावना के चिन्तन में संयोगों की क्षण भंगुरता, अशरण, निरर्थकता तथा निज स्वभाव की नित्यता, शरणभूतता एवं सार्थकता अत्यन्त स्पष्ट हो जाने पर भी ज्ञानी-अज्ञानी सभी को अपनी-अपनी भूमिकानुसार सुख-दुःख भोग लेने का

विकल्प बना ही रहता है, जड़मूल से साफ नहीं होता। उक्त विकल्प को जड़मूल से उखाड़ फेंकने के लिए ही एकत्व भावना (अनुप्रेक्षा) का चिन्तन किया जाता है। जन्में मरे अकेला चेतन, सुख दुःख का भोगी। और किसी का क्या इक दिन, यह देह जुदी होगी॥ कमला चलत न पेढ़ी जाय, मरघट तक परिवारा। अपने-अपने सुख को रोवे, पिता, पुत्र, दारा॥ ज्यों मेले में पंथी जन, मिली नेह धरें फिरते। ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा, पंछी आ करते॥ कोस कोई दो कोस कोई, उड़-उड़ फिर थक हारे। जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारे॥

जीव का सदा अपने स्वरूप से एकत्व और पर से विभक्तपना है, इसलिये वह स्वयं ही अपना हित अथवा अहित कर सकता है, अतः जीव जो भी शुभ अथवा अशुभ भाव करता है उनका अनुकूलता-प्रतिकूलता रूपी फल वह स्वयं अकेला ही भोगता है। उसमें अन्य कोई स्त्री, पुत्र, मित्रादि सहायक नहीं हो सकते, क्योंकि वे सब पर पदार्थ हैं।

वे सब पदार्थ जीव को ज्ञेय मात्र हैं, इसलिये वे वास्तव में जीव के सगे-सम्बन्धी हैं ही नहीं, तथापि अज्ञानी जीव उन्हें अपना मानकर दुःखी होता है। पर के द्वारा अपना भला-बुरा होना मानकर, पर के साथ कृतत्व-ममत्व करता है, इस प्रकार अपनी भूल से स्वयं ही दुःखी होता है।

संगी-साथी सम्बन्धी तथा अन्य संयोगों के बीच रहता हुआ भी यह जीव सदा अकेला ही है, स्वयं अकेला होते हुए भी अपने कर्मों के प्रभाव के कारण से अपने को अकेला नहीं मानता है। अपने आपको संगी-साथी, परिवार वाला मानता हुआ यह जीव उनके लिए

अनेक पाप कर्म करता है, लेकिन उनसे उपार्जित कर्मों का फल नरकादि गतियों में जाकर स्वयं अकेला ही भोगता है, कोई भी इसकी सहायता करने नहीं आता।

जीव के पापकर्म का उदय आने पर परिजन असहाय होकर देखते रहकर भी कुछ नहीं कर सकते, अपना दुःख तो आपको स्वयं ही भोगना पड़ता है। अपना स्वार्थ पूरा नहीं होते देखकर सगे सम्बन्धी भी विपरीत होते दिखाई देते हैं। इस प्रकार यह जीव अकेला ही रहता है।

अकेले ही पैदा होना होगा, अकेले ही मरना होगा, सुख-दुःख भी अकेले ही भोगना होगा, इस प्रकार के चिन्तन से यदि खेद उत्पन्न होता है तो हमें अपनी चिन्तन प्रक्रिया पर गहराई से विचार करना चाहिए, यदि हमारी चिन्तन प्रक्रिया की दिशा सही है तो आह्लाद, आत्मिक सुख आना ही चाहिए।

एकत्व ही सत्य है, एकत्व ही सुन्दर है और एकत्व ही कल्याणकारी है, सुख-शान्ति और स्वाधीनता एकत्व के आश्रय से ही प्रकट होती है, क्योंकि इनका आवास एकत्व में ही है। एकत्व भावना का सार तो एकत्व को पहचानने में ही है और एकत्व की आराधना ही, आराधना का सार है।

संसार अवस्था और मोक्ष अवस्था में यह जीव अकेला ही है। निश्चय से ज्ञान, दर्शन, स्वभावी, सुख का भण्डार यह आत्मा, सदा परम एकत्व भाव लिये हुए है। अलग-अलग अवस्थाओं को प्राप्त होता हुआ बदलते संयोगों के बीच जीव अकेला ही है। एकत्व आत्मा की मजबूरी नहीं, सहज स्वभाव है। ऐसा जानकर सम्यग्दृष्टि जीव, निज शुद्धात्मा के साथ सदैव अपना एकत्व और पर के साथ विभक्त जानकर अपनी निश्चय परिणति द्वारा शुद्ध एकत्व की वृद्धि करता है। यही एकत्व भावना है।

यह बारह भावनाएँ चारित्र गुण की आंशिक शुद्ध

पर्यायें हैं, इसलिये सम्यग्दृष्टि जीव को ही होती हैं। सम्यक् प्रकार से इन बारह भावना का चिन्तन करने से वीतराग की वृद्धि होती है, इन बारह भावनाओं का चिन्तन मुख्य रूप से निर्ग्रन्थ वीतरागी जैन मुनिराजों को होता है तथा गौण रूप से सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं को भी होता है।

जिस प्रकार पवन के लगने से अग्नि भभक उठती है, उसी प्रकार अन्तरंग परिणामों की शुद्धता सहित इन भावनाओं का चिन्तन करने से समता भाव प्रकट होता है और उससे मोक्ष सुख प्रकट होता है। स्व-सन्मुखतापूर्वक इन भावनाओं से संसार, शरीर और भोगों के प्रति विशेष उपेक्षा होती है और आत्मा के परिणामों की निर्मलता बढ़ती है। इस प्रकार एकत्व भावना का फल जानकर निज शुद्धात्मा के एकत्व की भावना निरन्तर करना चाहिए।

एकत्व आत्मा का ऐसा स्वभाव है, जो अनादिकाल से प्रतिसमय उसके साथ है और अनन्तकाल तक रहेगा, क्योंकि यह आत्मा का द्रव्यगत स्वभाव है। एकत्व न केवल आत्मा का, अपितु प्रत्येक पदार्थ का सौन्दर्य है। पर के साथ सम्बन्ध की चर्चा ही असत् है, विसंवाद पैदा करने वाली है। एकत्व वस्तु की अखण्डता का सूचक है, कण-कण की स्वतन्त्रता का सूचक है।

सारा लोक निज अखण्ड एकत्व के आश्रय से उत्पन्न धवल निरञ्जन पावन परिणतियों के अजस्र प्रवाह में निमग्न हो और आनन्दमग्न हो। इन सब चिन्तन का सार यही है कि पर का साथ खोजने के व्यर्थ विकल्पों से विरत हो, ज्ञान के घनपिण्ड, आनन्द के कन्द, शान्ति के सागर, निज परमात्मतत्त्व को पहचान कर उसी में लीन रहो, तृप्त रहो, सुखी होने का एकमात्र यही उपाय है। अतः बारह भावनाओं का प्रत्येक साधर्मीजन को निरन्तर चिन्तन करना चाहिए।

-139, महावीर नगर, इन्दौर (म.प्र.)

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार प्राप्त

श्रीमती कमलाजी नरपतचन्दजी सिंघवी, महावीर नगर-जयपुर (राजस्थान)

शरीर में स्वयं को स्वस्थ रखने की क्षमता

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

भावों, मानव का शरीर दुनिया की श्रेष्ठतम मशीन

मानव शरीर की संरचना विश्व का एक अद्भुत आश्चर्य है। उसके रहस्य को दुनिया का बड़े से बड़ा डॉक्टर और वैज्ञानिक पूर्ण रूप से समझने में असमर्थ है। शरीर के ऊपर यदि त्वचा न होती तो हमारी कैसी स्थिति होती? क्या हमने कभी कल्पना की? मस्तिष्क जैसा सुपर कम्प्यूटर, फेंफड़े एवं गुर्दे जैसा रक्त शुद्धीकरण यन्त्र, हृदय जैसा निरन्तर गतिशील रक्त का पम्प, आमाशय, तिल्ली, लीवर जैसा रासायनिक कारखाना, आँख के समान कैमरा, कान के समान श्रवण यन्त्र, जीभ के समान वाणी एवं स्वाद यन्त्र, लिंफ प्रणाली जैसी नगर निगम के समान सफाई-व्यवस्था, नाड़ी तन्त्र के समान मीलों लम्बी सञ्चार व्यवस्था, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के समान सन्तुलित, नियन्त्रित, संयमित, न्यायिक, प्रशासनिक व्यवस्था, अवाञ्छित तत्त्वों के विसर्जन की व्यवस्था, प्रकाश से भी तेज गति वाला मन इत्यादि अन्यत्र निर्मित उपकरणों अथवा अन्य चेतनाशील प्राणियों में एक साथ मिलना असम्भव होता है। शरीर के ऊपर यदि त्वचा न होती तो हमारी कैसी स्थिति होती? क्या हमने कभी कल्पना की?

शरीर अपने लिये आवश्यक रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियाँ, वीर्य आदि अवयवों का निर्माण चेतना के सहयोग से स्वयं करता है, जिसे अन्यत्र प्रयोगशालाओं में बनाना अभी तक सम्भव नहीं हुआ है। हमारे शरीर में पसीने द्वारा त्वचा के छिद्रों से पानी तो आसानी से बाहर आ सकता है, परन्तु पानी में त्वचा को रखने से, उन छिद्रों से पानी भीतर नहीं जा सकता। प्रत्येक शरीर का कुछ न कुछ वजन होता है, परन्तु चलते-फिरते किसी को अपना वजन अनुभव नहीं होता है। हमारे शरीर का

तापक्रम साधारणतया 98.4 डिग्री फारेहनाइट होता है, भले ही बाहर कितनी ही सर्दी अथवा गर्मी क्यों न हो? चाहे, बर्फीले दक्षिणी अथवा उत्तरी ध्रुव पर जाएँ अथवा गर्मी में सहारा मरुस्थल जैसे गर्म स्थानों पर, शरीर का तापक्रम 98.4 डिग्री फारेहनाइट ही रहता है। हम देखते हैं जब कभी आँधी या तेज हवा चलती है, तब हल्के पदार्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़कर चले जाते हैं। परन्तु हलन-चलन, उठने-बैठने एवं दौड़ने के बावजूद शरीर की पतली से पतली कोई भी नाड़ी अपना स्थान नहीं छोड़ती। यदि हम शीर्षासन करें तो हृदय अथवा कोई भी अंग अपना स्थान नहीं छोड़ता। शरीर के सभी अंग, उपांग, नाड़ियाँ, हड्डियाँ, हलन-चलन के बावजूद कैसे अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं? वास्तव में क्या यह आश्चर्य नहीं है?

शारीरिक क्षमताओं का दुरुपयोग अनुचित

यदि कोई लाखों रुपये के बदले आपके शरीर का कोई अंग, उपांग अथवा इन्द्रियाँ आदि लेना चाहें तो भी यथा सम्भव कोई व्यक्ति देना नहीं चाहता। क्योंकि पैसों से उन अंगों को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। यहाँ तक लाखों रुपयों के बदले यदि आपको 15 मिनट श्वास रोकने का आग्रह करें तो क्या आप ऐसा करना चाहेंगे? नहीं! कदापि नहीं। मृत्यु के पश्चात् उस पैसे का क्या उपयोग? क्या हमने कभी सोचा कि ऐसी अमूल्य श्वास जो हमें प्रतिक्षण निःशुल्क मिल रही है, उसे हम बराबर तो ले रहे हैं अथवा नहीं? इतने अमूल्य मानव जीवन का उपयोग हम कैसे कर रहे हैं? यदि कोई रुपयों के नोटों के बण्डल को चाय बनाने के लिए ईंधन के लिए जलादे तो हम उसे मूर्ख अथवा पागल कहते हैं। तब इस अमूल्य मानव जीवन की क्षमता का दुरुपयोग अथवा अपव्यय

करने वालों को क्या कहा जाए? बुद्धिमान व्यक्ति के लिये चिन्तन का प्रश्न है। कहीं हमारा आचरण अज्ञानवश अपने आपको गरीब, दरिद्र, मानकर अरबपति बाप के भिखारी बेटे की तरह दर-दर भीख माँगने जैसा तो नहीं है? जिस शरीर में इतने अमूल्य उपकरण हों, उस शरीर में अपने आपको स्वस्थ रखने की व्यवस्था न हो, क्या यह सम्भव है?

जरा चिन्तन करें, कहीं मानव जीवन रूपी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ गाड़ी, हमारी स्वच्छन्द मनोवृत्तियों रूपी अनाड़ी ड्राइवर के हाथों में तो नहीं है? पेट्रोल की गाड़ी को केरोसिन से कब तक ढंग से चलाया जा सकता है? ठीक उसी प्रकार जीवन में सद्गुणों रूपी ऊर्जा के रूप में उपलब्ध सनातन सिद्धान्तों पर आधारित प्राकृतिक जीवन शैली रूपी पेट्रोल के स्थान पर दुर्गुणों और अप्राकृतिक जीवन जी कर कैसे स्वस्थ रहा जा सकता है? स्वास्थ्य के प्रति सजग व्यक्तियों के लिए चिन्तन का प्रश्न है।

शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है

प्रत्येक अच्छे स्वचालित यन्त्र में खतरा उपस्थित होने पर स्वतः उसको ठीक करने की व्यवस्था प्रायः होती है। जैसे बिजली के उपकरणों के साथ ओवरलोड, शार्ट सर्किट, अर्थ फाल्ट आदि से सुरक्षा हेतु युज, रिले आदि होते हैं। प्रत्येक वाहन में ब्रेक होता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर वाहन की गति को नियन्त्रित किया जा सके। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में जो दुनिया की सर्वश्रेष्ठ स्वचालित, स्वनियन्त्रित मशीन होती है, उसमें रोगों से बचने की सुरक्षात्मक व्यवस्था न हो तथा रोग होने की अवस्था में पुनः स्वस्थ बनाने की व्यवस्था न हो, यह कैसे संभव हो सकता है? आवश्यकता है, हमें अपनी क्षमताओं को जानने और समझने की तथा स्वविवेक, धैर्य, सहनशीलता एवं सद्बुद्धि द्वारा उसका सही उपयोग करने की। हम जानते हैं कि स्वचालित उपकरणों में जितनी ज्यादा अनावश्यक छेड़छाड़ की जाती है उतनी ही उसके खराब

होने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। ठीक उसी प्रकार साधारण रोगों में दुष्प्रभावों वाली दवाओं का सेवन कर हम स्वयं के लिए कहीं भविष्य में परेशानी का कारण तो नहीं बन रहे हैं?

सही निदान हेतु पूर्ण शरीर, मन और आत्मा को एक इकाई मानना आवश्यक

आज हमने उपचार हेतु शरीर को कई टुकड़ों में बाँट दिया है। जैसे एक अंग का दूसरे किसी अंग से सम्बन्ध ही न हो। आँख का डॉक्टर अलग; कान, नाक, गला, दाँत, हृदय, फेंफड़ा, गुर्दा, मस्तिष्क आदि सभी के विशेषज्ञ डॉक्टर अलग-अलग होते हैं। उपचार करते समय जब तक पूर्ण शरीर, मन और आत्मा को एक इकाई के रूप में स्वीकार न किया जायेगा, तब तक स्थायी प्रभावशाली उपचार, एक कल्पना मात्र होगी। आँखों के डॉक्टर एवं कान का डॉक्टर भौतिक कान तक सीमित रह उस पर गहनतम शोध में व्यस्त है। चेतना के मूल स्रोत पर उसका नियन्त्रण नहीं है। चींटी और कुत्ते की घ्राणेन्द्रिय (सूँघने की शक्ति) इतनी तीक्ष्ण क्यों होती है? गिद्ध दृष्टि जैसी प्रत्येक मानव की दृष्टि क्यों नहीं होती? कोयल जैसी मधुरता प्रत्येक व्यक्ति की वाणी में क्यों नहीं विकसित होती? जब आँख बैठे-बैठे पूर्व में देखे गये अप्रत्यक्ष दृश्यों का स्मरण होते ही बन्द आँखों से देख सकती है, तो क्या उन दृश्यों के चिन्तन से पड़ने वाले अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव आँखों को प्रभावित नहीं करेंगे? आँख, कान अथवा शरीर का सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग मात्र भौतिक उपकरण ही नहीं हैं, परन्तु उसके साथ शरीर की जीवन्त चेतना, संवेदनाएँ और मन की स्मृति, कल्पनाएँ, अनुभूति आदि भी जुड़े हुए होते हैं, उसके ज्ञान के बिना आँख और कान जैसे शरीर के किसी भी भाग की सूक्ष्मतम जानकारी अधूरी ही होती है।

स्वास्थ्य हेतु स्वयं की सजगता सर्वाधिक आवश्यक

सजग व्यक्तियों को अपने रोग के कारणों की जितनी सूक्ष्मतम जानकारी होती है उतनी किसी भी

चिकित्सक को नहीं हो सकती। इसी कारण बहुत से व्यक्ति उपचार करवाने के बावजूद पुनः स्वस्थ नहीं होते, जबकि चन्द रोगी बिना उपचार करवाए, प्राकृतिक नियमों का पालन कर स्वतः स्वस्थ हो जाते हैं। शरीर में रोग के अनुकूल दवा बनाने की क्षमता होती है और यदि उन क्षमताओं को बिना किसी बाह्य दवा के विकसित कर दिया जाए तो उपचार अधिक प्रभावशाली, स्थायी एवं भविष्य में पड़ने वाले दुष्प्रभावों से रहित होता है। अतः अच्छे स्वास्थ्य हेतु जीवनचर्या और गतिविधियों पर पूर्ण संयम, अनुशासन और नियंत्रण आवश्यक होता है।

शरीर में स्वयं को स्वस्थ रखने की क्षमता होती है

हम देखते हैं कि जब किसी व्यक्ति की हड्डी अपना स्थान छोड़ देती है तो डॉक्टर उसको ठीक स्थान पर पुनः स्थित कर छोड़ देता है। जोड़ने का कार्य तो शरीर स्वयं ही करता है। शरीर अपने लिए आवश्यक रक्त का निर्माण स्वयं करता है। आज तक अति आधुनिक प्रयोगशालाओं में भी शरीर के लिए आवश्यक तत्वों का निर्माण सम्भव नहीं हो सका। माँ के गर्भ में जब बच्चे का विकास होता है तो पूरे शरीर का निर्माण स्वयं शरीर के द्वारा ही होता है। ये सभी तथ्य हमें सोचने तथा चिन्तन करने के लिए प्रेरित करते हैं कि

शरीर में स्वयं को स्वस्थ रखने की क्षमता अवश्य होनी चाहिए। क्या मानव कभी चिन्तन करता है कि मनुष्य के अलावा अन्य चेतनाशील प्राणी अपने आपको कैसे स्वस्थ रखते हैं? बहुत से रोगी बिना दवा लिए अपने आपको कैसे रोग मुक्त बना लेते हैं? इसका स्पष्ट मतलब है कि शरीर में स्वयं को स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। चिकित्सा विज्ञान में इतने विकास के बावजूद रोग और रोगियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि क्यों हो रही है? वास्तव में इस बात पर विश्वास करना होगा कि शरीर ही अपने आपको स्वस्थ रख सकता है। अच्छे से अच्छा अनुभवी चिकित्सक और दवा उसके बिना रोगी को ठीक नहीं रख सकते। अच्छी से अच्छी दवा और चिकित्सक तो शरीर को अपना कार्य स्वयं करने में सहयोग मात्र देते हैं। पीड़ा में राहत मिलना मात्र रोग का सम्पूर्ण उपचार नहीं होता। जिसका शरीर सहयोग करेगा, वही स्वस्थ होगा। स्वास्थ्य के प्रति स्वयं की सजगता व्यक्ति की पहली आवश्यकता है। यही सोच, स्वाललम्बी चिकित्सा पद्धतियों द्वारा स्वास्थ्य प्राप्त करने का मूलाधार होता है।

-आचार्य हस्ती अहिंसक चिकित्सा शोध संस्थान,
फ्लेट नं. 301, रिट्टी टॉवर, रतन नगर, एम्स रोड,
जोधपुर-342008 (राज.)

प्रभु में तल्लीनता

अब बढ़ती जाए

श्रीमती सुनीता डागर

प्रभु में तल्लीनता अब बढ़ती जाए
जड़ में पराधीनता अब घटती जाए
चिन्मयता जीवन में अब बढ़ती जाए
अनुप्रेक्षा जीवन में अब चलती जाए
कषायों की कालिमा अब मिटती जाए
विषयों की मलिनता अब घटती जाए
शुद्ध स्वरूप की प्यास अब बढ़ती जाए

भेद विज्ञान की किरण अब फैलती जाए
गुरु चरणों में समर्पण की प्यास अब बढ़ती जाए
चरण की शरण शीघ्रातिशीघ्र मुझको अब मिलती जाए

गुरु कृपा अनन्त बरस रही है
प्रतिपल सावधान हमको कर रही है
संकल्प-विकल्प की धारा सतत चल रही है
मन की शान्ति को भंग देखो कर रही है
'जागो मेरे चेतन, जागो मेरे चेतन'
यह आह्वान प्रतिपल हमसे कर रही है

-बी 13, शिवालय मार्ग, सेठी कॉलोनी, आगरा
रोड़, जयपुर-302004 (राजस्थान)

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम सम्वत् 2080, ईस्वी सन् 2023)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा विक्रम सम्वत् 2080 सन् 2023 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है-

-महामन्त्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

1. शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)

❧ परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

❧ परमश्रद्धेय महान् अध्यवसायी भावी आचार्य प्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल- सामायिक स्वाध्याय भवन, गली नम्बर 06, शक्तिनगर, जोधपुर-342006(राज.), अतिथि भवन-0291-2550148, 98281-66067

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-3 (राज.) 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, 94141-00759
3. श्री अशोकजी मेहता, मो. 94144-75904
4. श्री जितेन्द्रजी लोहा, मो. 94131-21261
5. श्री अनिलजी पारख, मो. 94144-05102

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 5 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन एवं बस स्टैण्ड से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

2. विजयनगर, अजमेर (राज.)

❧ मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ठाणा 3
चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, रेलवे लाईन के पास, पो. विजयनगर-305624, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रेमराजजी बोहरा, अध्यक्ष, मो. 94140-08335
2. श्री प्रकाशचंदजी बडोला, मंत्री, मो. 92149-22300
3. श्री निहालचन्दजी सांड, एन चंद्रा होटल, बस स्टैण्ड के पास, विजयनगर-305624, जिला- अजमेर (राज.), मो. 94140-08695
4. श्री भँवरलालजी कोठारी, मो. 94140-08190

आवागमन के साधन- रेलवे स्टेशन से स्थानक की दूरी 200 मीटर है तथा बस स्टैण्ड से 400 मीटर दूरी पर स्थित है। मुम्बई, रतलाम, उदयपुर, जयपुर रेल सेवा व ब्यावर, अजमेर, जोधपुर, जयपुर से सीधी बस सेवा।

3. खेरली, अलवर (राज.)

❧ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. ठाणा 3
चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, वार्ड नं. 5, पो. खेरली-321606, जिला- अलवर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मुकेशचंदजी जैन-अध्यक्ष, वार्ड नं. 5, शिव स्कूल वाली गली, जैन कॉलोनी, पो. खेरली-321606, जिला अलवर मो. 94143-21710

2. श्री प्रकाशचंदजी जैन, मंत्री, मो. 80589-86363
3. श्री मनीष कुमारजी जैन, मो. 94148-54310, 97842-08690
4. श्री धीरजजी जैन, मो. 80589-64545

आवागमन के साधन- स्थानक भवन से रेलवे स्टेशन की दूरी 500 मीटर व बस स्टैण्ड से 1 किलोमीटर की दूरी पर। जयपुर-आगरा रेलमार्ग पर खेरली ग्राम स्थित है। जयपुर, अलवर, भरतपुर, दिल्ली से सीधी बस सेवा।

4. शिरपुर (महा.)

❧ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री सुनीलमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री आनन्दमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री कर्त्तव्यमुनिजी म.सा.

❧ नवदीक्षित श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- पवन चंद्र विला (नागसेठिया पौषध शाला), समर्थ नगर, करवंद नाका, पो. शिरपुर-425405, जिला-धुलिया (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पवनचंदजी मोतीलालजी नागसेठिया, अध्यक्ष, समर्थ नगर, करवंद नाका, शिरपुर-425405, जिला-धुलिया (महा) 99238-80258, 94225-44897
2. श्री संदीपजी मांगीलालजी मुणोत, मंत्री, मो-86003-03787
3. श्री निखिलजी चंदनमलजी सांड, 99750-13900
4. श्री सागरजी हुकमचंदजी नागसेठिया, मो. 98819-68140, 94208-99899

आवागमन के साधन- नजदीकी रेलवे स्टेशन जलगाँव, नंदूरबार, अमलनेर व दोंडाईचा। स्थानक भवन बस स्टैण्ड से 1.5 किमी की दूरी है।

5. नागौर (राज.)

❧ व्याख्यानी श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री गुणवंतमुनिजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, गणेश चौक, नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अमीचंदजी सुराणा, अध्यक्ष, सराफा बाजार, नागौर-341001(राज.) मो. 94142-89600
2. श्री मनोजजी कांकरिया, मो. 81188-50814, 94609-54401
3. श्री शूरवीर सिंहजी सुराणा, मो. 94141-18342
4. श्री टोडरमलजी सुराणा, मो. 94142-16569

आवागमन के साधन- नागौर रेल एवं बस मार्ग पूरे भारत वर्ष से जुड़ा हुआ है। रेलवे स्टेशन और बस स्टैण्ड से स्थानक भवन की दूरी 1.5 किमी है।

6. प्रतापनगर, जयपुर (राज.)

❧ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.

❧ महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.

❧ महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

❧ महासती श्री मंजुलताजी म.सा.

❧ महासती श्री निरंजनाजी म.सा.

❧ महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री दक्षिताजी म.सा.

ठाणा 10

चातुर्मास-स्थल- श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन, प्रतापनगर, साँगानेर, जयपुर-302033 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रेमचंदजी दफ्तरी-अध्यक्ष, 94146-89575
2. श्री रिषभ कुमारजी जैन, मंत्री, 191/192, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर-302033(राज.) 99820-49866
3. श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर, मो. 98290-52094
4. श्री सुशील कुमारजी जैन, मो. 94130-23374

आवागमन के साधन- सांगानेर रेलवे स्टेशन से स्थानक की दूरी 6 किमी., दुर्गापुरा स्टेशन से 8 किमी., गाँधी नगर से

10 किमी. जयपुर जंक्शन से 16 किमी. बस स्टेण्ड (साँगानेर) से 2.5 किमी. पर स्थित है। नजदकी रेलवे स्टेशन साँगानेर। जयपुर एयरपोर्ट 4.5 किमी दूरी पर है।

7. पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.)

❧ विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री रक्षिताजी म.सा.

❧ महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रभावतीजी म.सा.

❧ महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, अरिहन्त कॉलोनी, महावीर कॉलोनी के पास, पुष्कर रोड़, अजमेर-305001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अनिलजी दुधेडिया, अध्यक्ष, शगुन, 56 प्रकाशनगर, लेन नं. 2, फाय सागर रोड़, अजमेर-305001 (राज.) मो. 98290-73250
2. श्री हेमन्तजी नाहर, मन्त्री, मो. 94142-58920
3. श्री पारसमलजी रांका, मो. 98290-79382
4. श्री अशोकजी पीपाड़ा, मो. 94145-51490

आवागमन के साधन- अजमेर भारत के प्रमुख शहरों से रेल एवं बस सेवा से जुड़ा हुआ है। पुष्कर रोड़ स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से तथा बस स्टेण्ड से 2.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

8. जामोला (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा.

❧ महासती श्री कौशलयावतीजी म.सा.

❧ महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, पो. जामोला, तह. मसूदा, जिला- अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अशोक कुमारजी बोहरा, अध्यक्ष, 99280-28050

2. श्री सुनील कुमारजी बंब, मंत्री, जामोला-305630, जिला-अजमेर (राज.) मो. 99282-39795
3. श्री प्रकाशचंदजी जैन, मो. 90010-76884
4. श्री सुशील कुमारजी जैन, मो. 96024-10475

आवागमन के साधन- नजदीकी रेलवे स्टेशन बान्दनवाडा 12 किमी. दूरी पर स्थित है। अजमेर जाने वाली रोड़वेज बसें जामोला होकर जाती है।

9. जंगमपुरा, इन्दौर (म.प्र.)

❧ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.

❧ महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री शारदाजी म.सा.

❧ महासती श्री लीलाकँवरजी म.सा.

❧ महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन श्वेताम्बर पद्मावती पोरवाल संघ, 6/1, जंगमपुरा, मालगंज चौराहे के पास, इंदौर-452007 (म.प्र.) चातुर्मास हेल्पलाइन नं. 18008906309

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री तेजमलजी जैन, अध्यक्ष, मो. 98936-69515
2. श्री विनोद कुमारजी जैन, मंत्री, 91/92, सुखदेव नगर, एम्स-1, एयरपोर्ट रोड़, इन्दौर-452007 (म.प्र.), मो. 84351-53308
3. श्री धर्मचंदजी जैन, मो. 94250-58021
4. श्री नीरजजी जैन, मो. 89627-69380

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल से मुख्य रेलवे स्टेशन 4 किमी. है। एयरपोर्ट 5.5 किमी. दूरी पर है। बस स्टेण्ड 3 किमी. दूरी पर है।

10. पुराना किशनगढ शहर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा.

❧ सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.

❧ महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री रिद्धिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन- डॉ. कर्मचन्द मेमोरियल हॉस्पिटल के पास, किशनगढ़ शहर- 305802, जिला अजमेर(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विनयचंदजी जामड़, अध्यक्ष, पांडियों का मौहल्ला, धानमंडी, किशनगढ़शहर-305802, जिला अजमेर, मो. 82904-75252, 92522-66182
2. श्री शोभाग सिंहजी भण्डारी, मंत्री, 92146-69308
3. श्री प्रमोदजी मोदी, मो- 94140-12077
4. श्री सुजीतजी लोढ़ा, मो. 98293-54332

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन की दूरी 8 किमी. है। बस स्टैण्ड की दूरी 6 किमी. है।

11. पावटा- जोधपुर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.

❧ महासती श्री शशिकलाजी म.सा.

❧ महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-3 (राज.) 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, 94141-00759
3. श्री महेन्द्रजी सुराणा, मो. 94133-87760
4. श्री ओपेकजी गोलिया, मो. 93523-52919

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल मुख्य रेलवे स्टेशन से 3.5 किमी. एवं बस स्टैण्ड से लगभग 1 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन राईकाबाग है।

12. काचीगुड़ा-हैदराबाद (तेलंगाना)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.

❧ महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री देवांगनाजी म.सा.

❧ महासती श्री सुभद्राजी म.सा.

❧ महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री चेष्टाश्रीजी म.सा.

ठाणा 7

नोट:- काचीगुड़ा एवं मलकाजगिरी चातुर्मास में महासतिवर्याओं में परिवर्तन हो सकता है।

चातुर्मास-स्थल- Sh. Poonamchand Gandhi Jain Sthanak, Opp. Railway Station, Kachiguda, Hyderabad (Tel.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Gautamchand Ji Dak, President, Mob. 93473-73734
2. Sh. Sajjanraj Ji Gandhi, Secretary, 14, Kushal Towers, Khairtabad, Hyderabad (A.P.) Mob. 93965-57077
3. Sh. Ashok Ji Joshi (Manager), Mob. 93912-09546

आवागमन के साधन- हैदराबाद देश के सभी प्रान्तों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। स्थानक भवन रेलवे स्टेशन के सामने स्थित है।

13. नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.

❧ महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री भविताश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री स्तुतिश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री मान्याप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रार्थीप्रभाजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-3 (राज.) 93147-00972

2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, मो. 94141-00759
3. श्री नरेंद्रजी बाफना, मो. 94141-44789
4. श्री रिषभजी मेहता, मो. 87642-02023

आवागमन के साधन- नेहरू पार्क से रेलवे स्टेशन 1.5 किमी की दूरी पर है। बस स्टैण्ड की दूरी 3 किमी. है।

14. मेड़ता सिटी (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.

❧ महासती श्री कांताजी म.सा.

❧ महासती श्री सुप्रियाश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- स्वाध्याय भवन, डाणियों का मौहल्ला, जीवन जी हलवाई के पास, पो- मेड़ता सिटी-341510, जिला- नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री जबरचन्दजी चोरडिया-अध्यक्ष
2. श्री हस्तीमलजी डोसी- मंत्री, डोसी ब्रदर्स, ए-15 कृषि उपज मण्डी, पोस्ट मेड़तासिटी-341510, जिला नागौर (राज.) 94133-68997, 82900-97353
3. श्री विमलकुमारजी बाघमार, मो. 94137-59647
4. श्री गजेन्द्र कुमारजी दुधेडिया, मो.94135-80031

आवागमन के साधन- नजदीकी रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड से मेड़ता सिटी की दूरी 15 किमी. है। जोधपुर-जयपुर-अजमेर-ब्यावर-जैतारण-बीकानेर जाने वाली बसें मेड़ता होकर जाती है।

15. शिरपुर (महा.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.

❧ महासती श्री भावनाजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सुपुष्प विला, (बागरेचा पौषध शाला), समर्थनगर, करवंद नाका, पोस्ट- शिरपुर-425405, जिला-धुलिया (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पवनलालजी मोतीलालजी नागसेठिया, अध्यक्ष,

समर्थ नगर, करवंद नाका, पो. शिरपुर, जिला-धुलिया मो. 99238-80258, 94225-44897

2. श्री सचिनजी सुभाषचंदजी बागरेचा, मंत्री, मो. 88881-21588, 94224-50602
3. श्री जितेन्द्रजी भगवानदासजी संकलेचा, 94207-05586
4. श्री सतीशजी पवनलालजी नागसेठिया, 99238-80258

आवागमन के साधन- नजदीकी रेलवे स्टेशन जलगाँव, नंदूरबार, अमलनेर व दोंडाईचा है। महासती मण्डल के विराजने का स्थल बस स्टैण्ड से 1.5 किमी की दूरी है।

16. भद्रावती (कर्नाटक)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.

❧ महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.(बड़े)

❧ महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल-Shri Vardhman Sthanakwasi Jain Shrivak Sangh, NST Road, Bhadravati-577301 (KT)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Dilip Kumar Ji Mehta, President, Mob. 70193-90051
2. Sh. Babula Ji Loonker, Sheetal Showroom, B.H. Road, Bhadravati-577301 (KT) 70195-80403, 94499-68001
3. Sh. Chandra Prakash Ji Bohra, Mob. 99005-62161, 95386-16190
4. Sh. Rakesh Ji Vinayakiya, 98862-03424

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन की दूरी 1 किमी. है। बस स्टैण्ड की दूरी 2 किमी. है। नजदीकी रेलवे स्टेशन विरूर है।

17. थाँवला-अजमेर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन स्थानक, यूको बैंक के पास, पो-थाँवला-305206 जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री शान्तिलालजी डुंगरवाल-अध्यक्ष, जैन स्थानक के पास, पो- थाँवला-305206 जिला-नागौर (राज.) मो. 94604-95521
2. श्री शोभागमलजी सोजतीया-मंत्री, 94609-53783
3. श्री राजेशजी डुंगरवाल, मो. 99824-14431
4. श्री राकेशजी बोहरा, मो. 82391-05106

आवागमन के साधन- नजदीकी रेलवे स्टेशन अजमेर जंक्शन से 30 किमी. है। मेड़ता सिटी रेलवे स्टेशन से 45 किमी. की दूरी पर है। बस स्टेण्ड से 2 मिनट की दूरी पर स्थित है।

18. मलकाजगिरी-हैदराबाद (तेलंगाना)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री अंजनाजी म.सा.

❧ महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

नोट:- काचीगुड़ा एवं मलकाजगिरी चातुर्मास में महासतिवर्याओं में परिवर्तन हो सकता है।

चातुर्मास-स्थल-Jain Bhawan, Madhusudan Nagar, Malkajgiri, Hyderabad-500047 (Telangana)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Ashok Kumar Ji Jain, President, 9-40/5, Opp. Bank of Baroda, Malkajgiri - 500047, Mob. 9849857250
2. Sh. Amol Kumar Ji Munot, Secretary, Mob. 98494-74140
3. Sh. Shantilal Ji Munot, 92466-08941

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 250 मीटर तथा बस स्टेण्ड 500 मीटर की दूरी पर स्थित है।

19. नदबई (राज.)

❧ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री निमिषाजी म.सा.

❧ महासती श्री रम्यप्रभाजी म.सा.

ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, डॉ. जैन वाली गली, कुम्हेर रोड़, कटरा-नदबई-321602, जिला भरतपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रेमचन्दजी जैन, अध्यक्ष, पी.एन.बी. बैंक के पीछे, जैन कॉलोनी, कटरा-नदबई-321605, जिला-भरतपुर (राज.) 94138-34870, 94142-79091
2. श्री पदमचंद जी जैन, मंत्री, मो. 98874-69215, 96642-32359
3. श्री अमित कुमार जी जैन, मो. 80585-03624
4. श्री वीरू कुमार जी जैन, मो. 78917-19144

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन की दूरी 500 मीटर है। बस स्टेण्ड की दूरी 750 मीटर है।

20. कांकरिया स्थानक-जोधपुर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

❧ महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री रचनाश्रीजी म.सा.

ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- कांकरिया स्थानक, पावटा सी रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-3 (राज.) 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मंत्री, 94141-00759
3. श्री अशोकजी मेहता, मो. 94144-75904
4. श्री जितेन्द्रजी लोढ़ा, मो. 94131-21261

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल जोधपुर मुख्य रेलवे

स्टेशन से 5 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेशन से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

21. रामपुरा-कोटा (राज.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री विदेहाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री विरक्ताश्रीजी म.सा.
- ❧ महासती श्री वनिताप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री निकिताप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री अदितिप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा. (छोटे)
- ❧ नवदीक्षिता महासती श्री मृदुताजी म.सा.
- ❧ नवदीक्षिता महासती श्री ऋजुताजी म.सा.

ठाणा 10

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रांड होटल की गली, रामपुरा बाजार, रामपुरा-कोटा-324001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पंकजजी मेहता, अध्यक्ष, मो. 94141-87814, 98290-87814
2. श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, वर्धमान नमकीन, गुमानपुरा, कोटा-324001(राज.) मो. 94141-77139
3. श्री उत्तमजी जैन, मो. 94149-38875
4. श्री पंकज जी जैन, मो. 90244-11114

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन 7 किमी की दूरी पर है। नयापुरा बस स्टेशन से 3 किमी. है।

22. शास्त्रीनगर-आकोला (महा.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा.

ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अहिंसा मार्ग शास्त्रीनगर-आकोला-444001 (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मीचंदजी चौधरी, अध्यक्ष, जैन वाटिका नं. 2, शास्त्रीनगर, पोस्ट आकोला-444001 (महा.) 86052-87990, 84597-69221
2. श्री रमाकांतजी चौमवाल, मंत्री, मो. 94217-44516, 70380-22520
3. श्री सरदारमलजी झामड़, मो. 98228-35152
4. श्री जितेन्द्रजी बोरा, मो. 99233-88183

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन की दूरी 2.30 किमी है। बस स्टेशन 2 किमी की दूरी पर है।

23. पाली (राज.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.
- ❧ महासती श्री कल्पयशाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.

ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-सामायिक स्वाध्याय भवन, जूनी कचहरी धान मंडी, पाली-मारवाड़(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री कांतिलालजी लुंकड़, अध्यक्ष, 94141-22757
2. श्री रजनीशजी कर्णावट, मंत्री, 807-8, मनोरथ बिल्डिंग, सुमेरपुर रोड़, नये बस स्टेशन के पास, पाली (राज.), मो. 94141-20745, 6376612799
3. श्री नरपतराजजी चौपड़ा, मो. 79768-29833
4. श्री सुरेशजी जैन, मो. 94141-20231

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन 2.4 किमी है। पुराने बस स्टेशन से 0.5 किमी और नये बस स्टेशन से 3 किमी की दूरी है।

24. बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा.
- ❧ महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री समीक्षाप्रभाजी म.सा.

ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-सामायिक स्वाध्याय भवन, बजरिया, टोंक रोड़, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मुकेश कुमारजी जैन पान वाले, अध्यक्ष

- 36 ए, टोंक रोड़, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
94142-04721
2. श्री पदमचंदजी जैन गोटेवाला, मंत्री, मो. 94620-20572, 94140-30572
 3. श्री गणपतलालजी जैन, मो. 94140-30583, 94603-17013
 4. श्री कनिष्कजी जैन, मो. 94145-51890

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन 400 मीटर की दूरी पर है। बस स्टेण्ड 500 मीटर की दूरी पर है।

25. प्रतापगढ़ (राज.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा.
❧ महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा.
❧ महासती श्री प्रणतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री महावीर भवन स्थानक, श्री चंद्रप्रभु मंदिर के सामने, गोपालगंज, प्रतापगढ़-312605 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अंबालालजी चंडालिया, अध्यक्ष, वैभव वस्त्रालय, पीपली चौक, सदर बाजार, प्रतापगढ़-312605 (राज.) 99292-78162
2. श्री यशवंतजी भटेवरा, मंत्री, 94607-12225
3. श्री संजयजी जैन, 94607-03803
4. श्री विनोद कुमारजी लसोड़ जैन, 94143-97059

आवागमन के साधन- नजदीकी रेलवे स्टेशन मंदसौर की दूरी 32 किमी. है। चातुर्मास स्थल से बस स्टेण्ड 500 मीटर की दूरी पर है।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री महावीर प्रसाद जैन

मई, 2023 का जिनवाणी अंक पढ़ा। इसमें सम्पादकीय 'जीवन निर्माणकारी संस्थाएँ' में डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के संघ, समाज एवं मानव जाति के विकास हेतु सत् चिन्तन को प्रस्तुत किया है। पूज्यश्री ने सामायिक-स्वाध्याय के माध्यम से सहस्रों श्रावक-श्राविकाओं को जोड़ा और उनके भीतर ज्ञान का प्रकाश प्रकट किया, जिससे वे अपने जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान कर सकें। इस लेख को पढ़कर हमारे ज्ञान-चक्षु खुल गये, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। निःसन्देह यह बहुत ही सुन्दर एवं पठनीय है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 'शील पालन की महिमा' प्रवचन पढ़ा। यह प्रवचन हृदय को छूने वाला है। शील पालन में आचार्य भगवन्त द्वारा दिया गया दृष्टान्त कि उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता और कौए को रात्रि में दिखाई नहीं देता है, परन्तु कामान्ध व्यक्ति को दिन और रात दोनों में ही दिखाई नहीं देता है और वह कामभोगों की

प्राप्ति हेतु प्रतिक्षण उधेड़बुन में लगा रहता है।

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 'मेरे जीवन के सर्वस्व गुरु हीरा' प्रवचन मन की गहराइयों को छूने वाला है। भावी आचार्यश्री ने अपने गुरु भ्राता आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. को आराध्य एवं गुरु तुल्य बता कर उनके प्रति अपनी गहरी श्रद्धा-अभिव्यक्ति की है। समर्पण और सेवा की प्रतिमूर्ति भावी आचार्यश्री के प्रवचन के शब्द भावाभिभूत करने वाले हैं।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के प्रवचन में विशेष जानकारी प्राप्त हुई कि साता सुख की आकांक्षा रखना भोग है। महाराज साहब ने फरमाया कि दूसरों से सुख चाहना भोग है। जड़ में सुख की आकांक्षा रखना भोग है। दुःख का कारण दूसरों को बताना ठीक नहीं है। भोगी जीव सुख की अपेक्षा दूसरों से करता है, जबकि दुःख का कारण दूसरा नहीं, स्वयं है। जिनवाणी के प्रत्येक अंक का प्रत्येक लेख प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक होता है। अच्छे अंक के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

-ग्राम पोस्ट-कुंडेरा, जिला सवाईमाधोपुर (राज.)

10 जुलाई 2023

जिनवाणी 74

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



Dr. Anil Kumar Jain

Name of the book : SAMAYSARA, **English translation and annotation :** Dr. Parasmal Agrawal (97847055711), **Publisher :** Samarpan Charitable Trust, Udaipur, **Edition :** First, 2022, **Pages :** 516, **Price :** Rs. 200

Acharya Kundkunda has got a very special place in Jainism. His name is remembered before every auspicious work. Many texts of Acharya Kundkunda are available, such as Samaysara, Niyamasara, Pravachansara, Panchastikaya, Ashtapahuda etc. All the books are full with various aspects of spirituality. But, the most popular among all of them is Samaysara. This is the main book of spirituality. There is a wonderful description of the pure soul in this book. The main objective of this is to understand the pure form of soul while travelling through *Nishchaya* and *Vyavahara*.

Many Acharyas and scholars have written commentary on this book in many languages, among them, the Sanskrit commentaries of Acharya Jaysena and Acharya Amritchandra are very famous. English commentary of this book has not come to my notice so far. Dr. Parasmal Agrawalji, a well known scholar of Jainism, has filled this gap, for which we are grateful to him. His commentary and annotations are very important in many ways. Wherever necessary, he explained through questions and answers. Since the author himself has been a physics professor in India and abroad, he has also used many examples of science to simplify complex matters. Due to which this book has become more interesting. Eleven appendices have been given at the end of the book, which are very important.

The printing of the book is very

beautiful. Its cost is also quite less. It will definitely be liked among English speaking people. It should be widely publicised.

Name of the book : PURE SOUL, **Edited by :** Peter Flugel, Heleen De Jonckheere, Renate Sohnen-Thieme, **Publisher :** Centre of Jaina Studies, The United Kingdom, **Edition :** First, 2023, **Pages :** 196, **ISBN :** 978-1-3999-4686-5.

This book is a collection of 22 scholarly articles written by different experts. These include six articles on pure soul and its exponents like Acharya Kundkunda, Pandit Banarasi Das, Pandit Todarmal, Poet Pandit Anandaghan, Shrimad Raichand and Kanji Swami; twelve articles are on Jain scriptures & manuscripts, Jain history, temples & their architecture; rest are on traditions of Jain sects and Yoga. The important thing is that many references are associated with all the articles making them quite useful to the researchers in the field.

Acharya Kundkunda was the first one who described pure soul in detail. Soul is associated with consciousness. But until we are in worldly state, our consciousness remains covered with Karmas. Jain Acharyas explained spirituality in the language of *Nishchaya Naya* (absolute standpoint) and *Vyavahara Naya* (practical standpoint). *Nishchaya Naya* talks about the pure soul and *Vyavahara Naya* shows the ways to get it. If *Nishchaya Naya* is abandoned, then the goal will be missed, and if you leave the *Vyavahara Naya*, then the way to achieve the goal would be missed. Both are necessary to achieve understand spirituality. Our Jain traditions inspire us to follow this path of liberation.

It is a matter of great pleasure for us that Western scholars are also taking keen interest in spirituality as described in Jainism. We hope it will further expand there.

-D-197, Moti Marg, Bapu Nagar, Jaipur

संस्कृत श्लोक संग्रह (प्रथम भाग)-अनुवादक-
गौतमचन्द्र जैन, प्रकाशक-प्राकृत भारती अकादमी,
13 ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017
(राजस्थान), फोन 0141-2520230, Email :
prabharti@gmail.com, ISBN No. 978-93-
92317-55-2, पृष्ठ-288 + 20 = 308, संस्करण-
2023, मूल्य-625 रुपये।

संस्कृत श्लोक संग्रह प्रथम भाग का संग्रह
कविरत्न पण्डित श्री सूर्यमुनिजी म.सा. द्वारा किया गया
है। संस्कृत साहित्य में ज्ञान का अथाह भण्डार समाहित
है। नीतिपरक, आचार-परक एवं जीवन-निर्माणकारी
श्लोकों का मानव-जीवन में अनुपम महत्त्व है।

संस्कृत भाषा में निबद्ध श्लोकों में निहित सार
तत्त्व को ग्रहण करना आमजन के लिए कठिन है। अतः
उन्हें सभी के लिए सहज एवं सुबोध बनाने हेतु अनुवादक
ने इसका सरल भाषा में अर्थ किया है, जो अभिनन्दनीय
है।

प्रस्तुत संग्रह के प्रथम भाग में कुल 52 विषयों के
1,265 श्लोक हैं। इसमें मंगलाचरण से प्रारम्भ कर देव,
गुरु, धर्म, दान, शील, तप, भावना, ज्ञान, दर्शन,

चारित्र, मुक्ति, मिथ्यात्व स्वरूप, अहिंसा, सत्य,
अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अतिथि सत्कार आदि अनेक नैतिक,
धार्मिक तथा जीवनोपयोगी विषयों का समावेश किया
गया है।

विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इसमें विभिन्न
छन्दों में श्लोक रचित हैं। अतः पाठकों हेतु छन्दों के ज्ञान
के लिए छन्द-परिचय पृथक् रूप से दिया गया है, जिसमें
12 छन्दों का समावेश किया गया है। इससे पाठक
शुद्धता एवं लय के साथ श्लोक का उच्चारण कर विशेष
आनन्दानुभूति कर सकते हैं।

संस्कृत श्लोक संग्रह को पढ़कर सामान्य पाठक
तो अपने जीवन में जानने, मानने एवं आचरणीय
सूक्तियों को अपनाकर श्रेष्ठ बना सकते हैं, किन्तु जो
वक्तृत्वशैली को प्रभावी बनाने वाले स्वाध्यायीजन हैं वे
भी प्रवचन आदि में इनका पूर्ण सदुपयोग कर सकते हैं।
अनुवादक श्री गौतमचन्द्रजी जैन श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण
संस्थान, जयपुर के पूर्वछात्र, पूर्व संस्कृत व्याख्याता एवं
सेवानिवृत्त राजकीय अधिकारी हैं।

-श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन, प्लॉट नं. 55-56, क्यूब
लोटस, फ्लैट नं. 102, अमृत नगर, इस्कॉन मन्दिर
रोड़, जयपुर-302029 (राजस्थान)

आओ पक्षियों से कुछ सीखें

श्री पीरचन्द विनोद कुमार चोरड़िया

- ❖ पक्षीगण रात को कुछ नहीं खाते।
- ❖ पक्षीगण रात को घूमते नहीं।
- ❖ अपने बच्चे को सही समय पर सिखाते हैं।
- ❖ ठूस-ठूस के कभी नहीं खाते। आपने कितने भी
दाने डाले हों, थोड़ा खा के उड़ जायेंगे। साथ कुछ
नहीं ले जाते।
- ❖ रात होते ही सो जायेंगे, सुबह जल्दी जाग जायेंगे,
गाते चहकते उठेंगे।
- ❖ अपना आहार कभी नहीं बदलते।
- ❖ अपने शरीर से सतत काम लेते हैं। रात के सिवा

आराम नहीं करते।

- ❖ बीमारी आई तो खाना छोड़ देंगे, तभी खायेंगे जब
ठीक होंगे।
- ❖ अपने बच्चे को भरपूर प्यार देंगे।
- ❖ परिश्रम करने से हृदय, किड़नी, लीवर के रोग नहीं
होते।
- ❖ प्रकृति से उतना ही लेते हैं जितनी जरूरत है।
- ❖ अपना घर पर्यावरण के अनुकूल बनाते हैं।
- ❖ अपनी भाषा छोड़कर दूसरों की बोली नहीं बोलते।
यदि हम भी इन पक्षियों से कुछ सीखें तो जीवन
सरल, सुन्दर एवं सफल हो जायेगा।

-माणक चौक, जोधपुर (राजस्थान)

समाचार विविधा

पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यश्री सहित जोधपुर में चार चातुर्मासों में अपूर्व उत्साह का वातावरण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 सामायिक-स्वाध्याय भवन, गली नम्बर 6, शक्तिनगर एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-7 कांकरिया स्थानक, पावटा, जोधपुर में सुखे-समाधौ विराजित हैं। व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 का पावटा में तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-8 का नेहरू पार्क, जोधपुर में चातुर्मासार्थ प्रवेश हो गया है।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के कारण पूरा जून माह विविध शिविरों एवं दर्शनार्थियों के भरपूर आवागमन से युक्त रहा। युवक परिषद् जोधपुर के तत्त्वावधान में गतिशील ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण-संस्कार शिविर 4 जून को सम्पूर्ण हुआ। युवक परिषद् के सदस्य प्रत्येक रविवार को शिविरार्थियों को दर्शन-वन्दन हेतु गुरुभगवन्तों की चरण सन्निधि में लेकर आते। शिविर में लगभग 800 बालक-बालिकाओं ने धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों की शिक्षा प्राप्त की। नियमित 3 घण्टे की धार्मिक कक्षाओं के साथ धार्मिक ज्ञान, नैतिकता एवं संस्कारों को दैनिक जीवन में जीने का अभ्यास कराया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा बालिकाओं में ज्ञानाभिवृद्धि हेतु गुरुभगवन्तों के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर में 8 से 10 जून तक 'आस्था-अनुशास्ता शिविर' का आयोजन किया गया, जिसमें जोधपुर, जयपुर सहित विभिन्न स्थानों से लगभग 50 बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर में स्वयं के गुण-दोष को पहचान कर जीवन में आगे बढ़ने के तरीके एवं स्वयं की क्षमता को पहचानने आदि का शिक्षण दिया गया एवं विविध तरीकों से समझाने का प्रयास किया गया। आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी संस्कृति को खो रहे हैं। इस पर चिन्तन कर भारतीय संस्कृति तथा जैनधर्म के अनुसार जीवन जीने के पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। आचार, विचार, भाषा, व्यवहार, वेशभूषा, शालीनता एवं कुलीन तरीके से आधुनिक परिवेश में रहना जरूरी है, यह समझाया गया।

सन्त प्रवरों एवं महासतीवृन्द ने नारी का स्वरूप एवं धर्ममय संस्कारित जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। आधुनिकता के नाम पर वर्तमान समय में बालिकाओं, युवतियों में जो धर्म एवं संस्कृति का अवमूल्यन हुआ है, जीवन जीने के तरीकों में जो बदलाव आया है, उन पर प्रकाश डालते हुए धर्म एवं संस्कृति के अनुरूप, सभ्य परिवेश में भौतिक शिक्षा के साथ मर्यादाओं को अंगीकार कर, जीवन में सन्तुलन का उपदेश दिया गया। उज्ज्वल भविष्य के लिए आत्मगुणों का विकास उपयोगी एवं जरूरी है, ऐसी विशेष प्रेरणाएँ दी गईं।

3 जून, ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी को क्रियोद्धारक आचार्य पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के 178वाँ स्मृतिदिवस एवं 5 जून, आषाढ़ कृष्णा द्वितीया को 227वाँ क्रियोद्धार दिवस तप, त्याग, धर्मध्यानपूर्वक मनाया गया तथा क्रियोद्धार के नियमों एवं क्रियोद्धारक आचार्य पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के जीवन के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया।

11 जून को रविवारीय विशेष कक्षा में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में 'समसामयिक जीवन

शैली एवं परिस्थितियों का यथार्थ निरूपण' विषय पर उद्बोधन हुआ। साथ ही 'कल्चर का न्याय अदालत' शीर्षक से संवादात्मक बोधगम्य प्रस्तुति दी गई, जिसमें वर्तमान पारिवारिक स्थितियों, माता-पिता, पुत्र-पुत्रियों, पति-पत्नी, उच्च शिक्षा, विदेश प्रवास तथा अतिव्यस्तता, भौतिकता की भागदौड़ से उत्पन्न विषाद, विवाद, टूटते परिवार, हास होते धर्म संस्कार एवं संस्कृति के हनन की विविध स्थिति-परिस्थिति को पक्ष-प्रतिपक्ष के रूप में संवादात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया। इन समस्याओं के समाधान हेतु उपाय सुझाये गये।

16 से 20 जून तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में पाँच दिवसीय केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर, गुरुभगवन्तों के सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ। (विस्तृत विवरण आगे शिविर रिपोर्ट में द्रष्टव्य)

22 से 26 जून तक श्राविका मण्डल, जोधपुर का पाँच दिवसीय शिविर आयोजित हुआ, जिसमें आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 23 जुलाई को होने वाली परीक्षा की तैयारी करवायी गयी। शिविर में जोधपुर की 115 श्राविकाओं ने भाग लिया एवं नये स्वाध्यायी भी बनाये गये। कक्षा 1 से 11वीं तक की कक्षाओं का आयोजन किया गया तथा नवतत्त्व की विशेष जानकारी दी गई।

विशेष :-स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर में जयपुर सिद्धान्तशाला से आये छात्रों ने परमाराध्य आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन करके गुरुदेव के श्री चरणों में हितशिक्षा हेतु निवेदन किया। जिस पर पूज्य आचार्य भगवन्त ने अल्प एवं मार्मिक शब्दों में एक प्रश्न के साथ प्रेरणा की कि-धर्म किसमें है? छात्रों ने यथामति उत्तर दिये। अन्त में गुरुदेव ने फरमाया-“धर्म पापों से निवृत्ति में है। मर्यादित जीवन में है। श्रावक के बारह व्रत, चौदह नियमों की महत्ता को समझकर प्रत्याख्यान ग्रहण करके पापों से बचा जा सकता है।” पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से हृदयस्पर्शी हितवचनों को सुनकर सभी छात्र धन्यता की अनुभूति करने लगे।

दैनिक धर्मचर्याओं में प्रार्थना, प्रवचन एवं आचारांगसूत्र वाचनी पूर्ववत् चल रहे हैं। विविध विषयों पर रविवारीय कक्षा में श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. सम्बोधित कर रहे हैं।

दर्शनार्थियों का आवागमन अनवरत एवं अभिवर्द्धित है। स्थानीय श्रद्धालुओं से भी धर्मध्यान एवं धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण आदि से धर्मोल्लासमय वातावरण बना हुआ है। तप-त्याग, धर्म-ध्यान, सामायिक, संवर, दया, पौषध आदि विविध धर्मक्रियाओं का क्रम सतत गतिशील है।

शक्तिनगर, पावटा क्षेत्र के संयोजकों सहित सभी क्षेत्रों के संयोजक अपने-अपने कार्यकर्ताओं के साथ सक्रिय हैं एवं सेवा, भक्ति, भावना आदि सभी कार्यों में अग्रसर हैं। शक्ति नगर क्षेत्र के संयोजक, कार्यकर्ता उत्साह उमंग के साथ आवास, निवास, भोजन आदि सभी व्यवस्थाओं में सतत तत्पर हैं।

अखिल भारतीय पदाधिकारीगण, जोधपुर संघ पदाधिकारीगण, श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् सभी पूर्ववत् सक्रिय हैं एवं गुरुचरणों में धर्मलाभ के साथ, प्राप्त मार्गदर्शन अनुसार समस्त सेवा-कार्य, व्यवस्था कार्य एवं धर्मचर्याओं में सतत गतिशील हैं।

-गिररज जैन

सन्त-सतियों का विचरण-विहार

ब्यावर-मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 ने पाली का यशस्वी प्रवास पूर्ण कर सोजत की तरफ क़दम बढ़ाये। मार्गवर्ती ग्रामों में पाली निवासी युवकों ने सन्तों की निर्दोष चर्या में सहायक बनते हुए पूर्ण सेवा भक्ति का परिचय दिया। समय अल्प होने के बावजूद भी सोजतवासियों ने सन्तों की सन्निधि का उत्साह से लाभ उठाया। गर्मी के प्रतिकूल वातावरण के उपरान्त भी सन्त समभाव के साथ विहार करते हुए एक ग्राम से दूसरे ग्राम होते हुए ब्यावर पधारे। ब्यावर पधारने के साथ ही सन्तों के सान्निध्य में लोगों की उपस्थिति बढ़ती गई। प्रवचन सभा में लोगों की उपस्थिति श्रावण-भाद्रपद की याद दिला रही थी।

ब्यावर प्रवचन सभा में पहले श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने देव-गुरु-धर्म की सुन्दर व्याख्या की। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने धर्म आराधना का लक्ष्य तथा निज पहचान को लेकर सटीक प्रवचन दिये। महाराजश्री ने फरमाया कि हम धर्म क्रियाएँ तो करते हैं, पर धर्माराधना के पीछे लक्ष्य क्या? एक सामान्य यात्रा करने वाले यात्री का भी अपना लक्ष्य निश्चित रहता है और व्यापारी भी धनवान बनने का लक्ष्य बनाकर व्यापार करता है। आश्चर्य है कि लोग वर्षों से धर्म क्रियाएँ तो कर रहे हैं मगर लक्ष्य निर्धारित न होने के कारण उनके जीवन में जो परिवर्तन होना चाहिये, वैसा देखने को नहीं मिल रहा। जरा आत्मावलोकन करें कि मैं इतने वर्षों से विविध प्रकार की धर्म क्रियाएँ तो कर रहा हूँ, किन्तु आसक्ति कितनी छूटी, कषाय कितना मन्द हुआ, इन्द्रिय संयम कितना बढ़ा, मन के परिणामों पर कितनी सजगता जगी, शायद इन सब चर्चाओं पर गौर करेंगे तो अपने आपको कमजोर पायेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि हम लक्ष्यहीन क्रियाएँ कर रहे हैं, यह हमारे जीवन का एक धर्म के नाम पर कमजोर पक्ष है। इस तरह मुनिराज ने अपने प्रवचनों के माध्यम से जन-मानस को प्रभावित करने की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की। ब्यावर में धर्म का अपूर्व जागरण करके सन्त वहाँ से प्रस्थान कर मसूदा पधारे, जहाँ लगभग एक सप्ताह रुकना हुआ। प्रवचन में लोगों की उपस्थिति भी विशेष रही। मसूदा से विहार कर शेरगढ़, लोडियाना होते हुए बिजयनगर पधारे और निकट समय में ही चातुर्मासिक स्थल पर प्रवेश की सम्भावना है।

-संजय जैन

नागौर-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 धनारी कलाँ में पर्युषण जैसा तप-त्याग एवं धर्मध्यान का ठाट लगाकर वहाँ से कुड़छी, बिरलोका, पाचोड़ी, आचीणा तथा पाँचलासिद्धा पधारे। बिरलोका में 9 दिन विराजना हुआ, इन 9 दिनों में यहाँ 7 एकाशन, 2 आयम्बिल, 5 उपवास और 1 बेले की तपस्या हुई। सुश्री लब्धि सुपुत्री श्री रतनलालजी लुणावत ने तेले की तपस्या की तथा श्री गौतमचन्दजी लुणावत ने शीलव्रत के पचकखाण ग्रहण किए। पाँचलासिद्धा में 5 दिन विराजना हुआ, यहाँ पर 2 उपवास, 2 तेले, 3 एकाशन हुए। 13 वर्ष की सुश्री वाणिया लुणावत ने तेले की तपस्या की। इस प्रकार सभी श्री शूरवीरजी सुराना आदि के नेतृत्व में पाँचलासिद्धा से नागौर तक श्रावक संघ, श्राविका संघ, युवक संघ ने उत्साह से विहार सेवा का लाभ लिया। 10 वर्ष के बालक जागृत सुराणा ने लगभग 70 किलोमीटर पैदल विहार सेवा का लाभ लिया। मार्गवर्ती जैनेतर गाँव, ढाणी वालों ने भारतीय संस्कृति को जीवंत रखते हुए आगन्तुक बन्धुओं तथा सन्तों की सेवा-सत्कार का भरपूर लाभ लिया तथा धर्मसभा में भी बढ़-चढ़कर शामिल हुए। श्री धनजी गुर्जर, धन्नारामजी डूडी, दुर्गाजी सुथार, बसयाणीजी लुणदा, श्रवणजी प्रजापत सिंघड आदि ने दर्शनलाभ लिया। सन्त गोगेलाव से 23 जून को नागौर नौ छतरी दादाबाड़ी पधारे। आगे सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मास के लिए नागौरवासी धर्म आराधना के लिए तत्पर हैं।

किशनगढ़-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 ने शिवाजी नगर-मदनगंज किशनगढ़ में लगभग 10 दिन धर्म प्रभावना करने के पश्चात् 27 जून मंगलवार को दोपहर बाद बिना किसी पूर्व सूचना के चातुर्मासिक प्रवेश महावीर भवन किशनगढ़ शहर में किया। सभी श्रावक-श्राविकाओं में चातुर्मास हेतु अपूर्व उल्लास बना हुआ है।

-प्रमोद कुमार मोदी

जोधपुर में त्रि-दिवसीय आस्था-अनुशास्ता शिविर सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा बालिकाओं में ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल-प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में

सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर में 8 से 10 जून, 2023 को धार्मिक संस्कारों में अभिवृद्धि हेतु शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें जोधपुर, जयपुर, अजमेर, गोटन, मण्डावर, खेरली, आदि विभिन्न स्थानों से लगभग 50 बालिकाओं ने भाग लिया। शिविरार्थियों का कक्षाओं में वर्गीकरण कर सभी को अध्यापन करवाया गया, जिसमें प्रातः 6.30 बजे से रात्रि 9 बजे तक कार्यक्रम चलता था।

प्रथम दिवस में श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट द्वारा 'स्वयं के गुण-दोष को कैसे जानें' एवं 'जीवन में आगे बढ़ने का नया तरीका' तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए 'स्वयं की क्षमता को पहचानो' आदि को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने कहा कि हम अति आधुनिकता की दौड़ में अपनी संस्कृति खो रहे हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार हमारे परिधान सभ्य होने चाहिये। हमें धार्मिक स्थलों पर किस तरह के परिधान पहनने चाहिये आदि की विशेष जानकारी प्रदान की गई।

परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. एवं सन्त-मुनिराजों ने प्रवचन के माध्यम से तथा महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा., महासती श्री मधुश्रीजी म.सा. ने कक्षाओं में सम्बोधित किया। सन्त-सतीमण्डल ने बालिकाओं को प्रभावी प्रेरणा करते हुए कहा कि घर, समाज एवं परिवार की धुरी बालिकाएँ होती हैं। यदि हमारी बालिकाएँ संस्कारित होंगी तो घर, परिवार एवं समाज सभी संस्कारित होंगे।

शिविर के समापन दिवस पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया, स्थानीय अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा, मन्त्री श्री नवरत्नजी गिड़िया सहित युवक परिषद् अध्यक्ष, सचिव उपस्थित रहे। इस शिविर में श्री तरुणजी बोहरा, चेन्नई द्वारा बालिकाओं को अध्यापन कार्य करवाया गया। श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट, जोधपुर शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी, सचिव श्रीमती पूजाजी गिड़िया का विशेष प्रयास रहा, जो प्रशंसनीय एवं अनुमोदनीय है। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, जोधपुर के सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं, श्रावकों एवं विशेष रूप से बालिका मण्डल का सहयोग अनुमोदनीय एवं प्रशंसनीय रहा। बालिकाओं को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गये।

-अलका दुधेड़िया, अध्यक्ष

जोधपुर में पंचदिवसीय केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में पंचदिवसीय केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर शक्तिनगर, गली नं.6, जोधपुर में व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य प्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ, जिसमें महाराष्ट्र के 61, पोरवाल क्षेत्र के 36, जोधपुर के 21, जयपुर के 30, मध्यप्रदेश के 06, मारवाड़ के 07, मेवाड़ के 06, पल्लीवाल क्षेत्र के 05 एवं छत्तीसगढ़ के 01 इस प्रकार कुल 173 स्वाध्यायियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। भावी आचार्यप्रवर तथा श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने स्वाध्याय की महत्ता, अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह, दुःख मुक्ति के उपाय आदि विषयों पर प्रभावशाली प्रवचन फरमाये। प्रथम अहिंसा अणुव्रत अधिकांश स्वाध्यायियों ने स्वीकार किया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने षड्रव्य का स्वरूप, श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने उच्चारण शुद्धि, प्रतिक्रमण सम्बन्धी जानकारी एवं लोकाशाह की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने सामाचारी का ज्ञान, अतिचारों की शुद्धि के लिए प्रायश्चित्त के बारे में जानकारी उपलब्ध

कराई। महासती श्री विनीतप्रभाजी, महासती श्री भाग्यप्रभाजी, महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. ने भी स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी विषयों का अध्ययन करवाया।

इस शिविर में मुख्य रूप से गणधरों के जिज्ञासा-समाधान, वीर-स्तुति, सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, पाँच समवाय, प्रमाण, निक्षेप का स्वरूप, दसकल्प, क्षेत्र-गणना, काल-गणना, प्रतिक्रमण का अर्थ एवं महत्त्व, अंतगडदसासूत्र, गुणस्थान, योग, कर्म का स्वरूप, तत्त्व का स्वरूप आदि का विवेचन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताएँ, प्रश्नमंच, स्मृति धारण के साथ प्रभावी वक्ता कैसे बनें आदि पर भी विशेष प्रकाश डाला गया। शिविर में श्री प्रकाशचन्दजी जैन, श्री धर्मचन्दजी जैन, श्री सुन्दरलालजी सालेचा, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, श्री जिनेन्द्रजी जैन, श्री धर्मेन्द्रजी जैन, श्री शुभमजी जैन, श्री श्रीकान्तजी गुप्ता, श्री सुरेशजी हिंगड़ आदि प्रशिक्षकों ने योगदान किया। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् प्रतियोगिताओं में श्री कमलेशजी मेहता, श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

20 जून को प्रवचन के पश्चात् अतिथि भवन में शिविर समापन कार्यक्रम आयोजित हुआ। शिविरार्थियों में से पाँच स्वाध्यायियों ने शिविर के बारे में अपने अनुभव बताये। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल ने स्वाध्याय संघ की गति-प्रगति प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथिगण एवं स्वाध्यायियों का अभिनन्दन किया। शिविर संयोजक श्री धर्मचन्दजी जैन ने शिविर की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया ने सभी को मार्गदर्शन किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा ने सभी का आभार प्रकट किया। श्री प्रकाशचन्दजी जैन, जयपुर ने सभी स्वाध्यायियों को प्रेरणा करते हुए इस वर्ष पर्युषण पर्व में जाने की प्रभावी प्रेरणा की। सभी अध्यापकगण, स्वाध्यायी बन्धु, कार्यकर्ता आदि को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

समापन कार्यक्रम में जोधपुर के अनेक गणमान्य महानुभाव एवं पदाधिकारी उपस्थित थे। जोधपुर संघ द्वारा आवास, निवास, भोजन, नाश्ता आदि की उत्तम व्यवस्था की गई। शिविर के कार्यक्रमों की व्यवस्था करने में श्री धीरजजी डोसी, श्री शीतलजी बोहरा, श्री गौतमजी जैन आदि की सराहनीय सेवाएँ रहीं। स्वाध्याय संघ के सचिव श्री सुनीलजी संकलेचा ने जोधपुर संघ की सराहनीय के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन स्वाध्याय संघ के प्रभारी श्री सुरेशजी हिंगड़ ने किया।

-सुनील संकलेचा, सचिव

शिक्षण बोर्ड की 23 जुलाई की परीक्षा में भाग लेकर ज्ञान-वृद्धि कीजिए

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 23 जुलाई 2023, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

परीक्षा सम्बन्धी जानकारी के लिये सम्पर्क करें-अशोक बाफना-संयोजक 94442-70145, आकाश चौपड़ा-सचिव 94130-33718, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार 93515-89694 शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक स्वाध्याय भवन, 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003(राज) 0291-2630490, व्हाट्स एप्प नं.7610953735 Website :jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 78 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मास से वंचित गाँव-शहरों में पर्वारिधारा पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर धर्माराधना हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं धर्म की महत्ती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष 14 से 21 अगस्त, 2023 तक पर्युषण पर्व रहेंगे। किसी कारणवश आपको सन्त-सती वर्ग का चातुर्मास प्राप्त नहीं हुआ हो तो

आप परिवाराधना हेतु स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी आमन्त्रित कर सकते हैं। आवेदन करने का पता- संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, मो. 9414126279 (कार्यालय) ईमेल- swadhyaysanghjodhpur@gmail.com पर सम्पर्क कर सकते हैं। दक्षिण भारत के संघ इस हेतु चेन्नई में श्री नवरतनजी बाघमार, संयोजक 09444051065 से सम्पर्क कर सकते हैं। -सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा 70 क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन शिविरों का सफल आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी धार्मिक शिविरों का आयोजन पूरे भारत वर्ष के 70 क्षेत्रों में 21 मई से 4 जून, 2023 तक किया गया। इन शिविरों में लगभग 303 अनुभवी अध्यापकों द्वारा 5,261 छात्र-छात्राओं को सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, देव, गुरु, धर्म, जैन कहानियों सहित जैनधर्म के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की गई। इसके साथ ही सभी शिविरार्थियों को नवतत्त्व की विशेष जानकारी प्रदान की गई। सभी शिविर स्थलों पर संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, शाखा अध्यक्ष, शाखा सचिव, क्षेत्रीय प्रधान एवं युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर निरीक्षण भी किया। शिविर में पोस्टर प्रतियोगिता, नारे प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें सभी शिविरार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। सभी क्षेत्रों के युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं का भी सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस शिविर को सफल बनाने में सभी कार्यकर्ता ने जो उत्साह, उमंग से सेवा प्रदान की, इस हेतु युवक परिषद् द्वारा सभी का आभार प्रकट किया गया।

-विकास राज जैन-महासचिव, निरूपण डागा-उपाध्यक्ष, धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार

जिनशासन मेले के साथ हुआ युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा आयोजित धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर का समापन

श्री जैन रत्न युवक परिषद् जोधपुर के तत्त्वावधान में आयोजित 27 वें धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन महावीर पब्लिक स्कूल में किया गया, शिविर संयोजक श्री राजेशजी कर्णावट ने बताया कि शिविर में लगभग 800 बालक-बालिकाओं ने जैन धर्म एवं नैतिक संस्कारों की शिक्षा प्राप्त की। लगभग 350 शिविरार्थियों ने महावीर पब्लिक स्कूल में एवं संस्कार केंद्र के सहयोग से जोधपुर के विभिन्न केंद्रों पर लगभग 450 बच्चों ने ज्ञानार्जन किया। शिविर के दौरान रविवार को सभी शिविरार्थियों को पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन के लिए उपस्थित किया गया।

18 मई से 4 जून तक आयोजित इस शिविर में प्रतिदिन बालक-बालिकाओं को योगाभ्यास एवं गुरु भगवन्तों के मुखारविंद से जैनत्व की विशेष प्रेरणा प्रदान की गई। नियमित 3 घण्टे की धार्मिक कक्षाओं के साथ शिविरार्थियों को नैतिक जीवन में संस्कारों को जीने की कला सिखाने का अभ्यास कराया गया। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा के नेतृत्व में महावीर पब्लिक स्कूल में 4 जून को आयोजित समापन समारोह में श्राविका मण्डल की ओर से जिनशासन मेले का आयोजन किया गया, जिसमें खेल-खेल के साथ जैनत्व की शिक्षा प्रदान की गई। शिक्षक-अभिभावक मीटिंग के माध्यम से बालक-बालिकाओं को नियमित संस्कार कक्षाओं में जाने की प्रेरणा प्रदान की गई और उन्हें शिविर की परीक्षा का परिणाम एवं पुरस्कार प्रदान किया गया।

मंच पर आसीन अतिथियों के कर कमलों से वरीयता प्राप्त छात्र-छात्राओं को विशेष पुरस्कार प्रदान कर

उत्साह वर्धन किया गया। शिविर के दौरान पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया एवं उसके भी पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायाधीश श्री प्रकाशजी टाटिया एवं संघ के राष्ट्रीय मन्त्री श्री धनपतजी सेठिया के साथ जोधपुर संघ के अध्यक्ष सुभाषजी गुंदेचा, मन्त्री श्री नवरत्नजी गिड़िया, कोषाध्यक्ष जिनेन्द्रजी ओस्तवाल, रचना जी कानूगो, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी, मन्त्री श्रीमती पूजाजी गिड़िया आदि अतिथि रूप में उपस्थित थे।

-गजेन्द्र चौपड़ा

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों के लिए धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारु रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप एवं सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजें।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID : 35288297 **निवेदक** : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

19. श्रीमती अंजलीजी जैन, दुर्गापुरा-जयपुर (राजस्थान) 24,000/-
 20. श्री गोविन्द सहायजी जैन (चकेरी वाले), आदिनाथ नगर, सवाईमाधोपुर
 सौ. अदितिजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में। 12,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप तथा सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : *Bapu Bazar, Jaipur*, Ifsc Code : *SBIN0031843* निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

मोकलावास गौशाला में हुआ आचार्य हस्ती अहिंसात्मक चिकित्सा शोध केंद्र का लोकार्पण

रविवार, 25 जून 2023 के दिन जोधपुर के निकट ग्राम मोकलावास स्थित गौशाला गौ-संवर्द्धन आश्रम, मोकलावास के द्वारा संचालित किए जाने वाले नवनिर्मित 'आचार्य हस्ती अहिंसात्मक चिकित्सा शोध केंद्र' का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। मौलिक चिकित्सा के पुरोधा डॉ. चंचलमलजी चोरड़िया द्वारा आश्रम में विशाल प्राकृतिक चिकित्सा शोध केंद्र का निर्माण कराया गया। साथ ही प्रशिक्षण के दौरान रहवास हेतु कुटीरों का निर्माण भी कराया गया है। यह चिकित्सा भवन और सभी कुटीर गोबर, चूने एवं मिट्टी से निर्मित किए गए हैं, ताकि हर मौसम के अनुकूल हों एवं यहाँ रहने का आनन्द लिया जा सके। जो भी स्वावलम्बी एवं सरल प्राकृतिक चिकित्सा क्रियाओं से स्वयं के उपचार का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए यह केंद्र वरदान साबित हो सकता है। प्रशिक्षणार्थियों के आवास व सात्त्विक भोजन की व्यवस्था इस केंद्र में गौ संवर्द्धन आश्रम द्वारा की जाएगी।

सम्भवतः यह देश की पहली गौशाला होगी, जहाँ इस प्रकार के केंद्र की स्थापना की गई है। प्रातः 10 बजे नियत समय पर नमस्कार मन्त्र के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में जोधपुर के साथ-साथ अन्य शहरों से भी गणमान्य लोग पधारे। पूर्व विधायक श्री कैलाशजी भंशाली, शहर के कई जाने माने उद्योगपति, अहिंसात्मक एवं वैकल्पिक चिकित्सा के विशेषज्ञ जिनमें अहमदाबाद से श्री नानकजी वरलानी, घी पर कार्य करने वाले भुज के श्री अश्विनीजी, गाँधीधाम से श्री मोहन भारतीजी आदि पधारे। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से जयपुर के श्री कमललोचनजी एवं संस्था के सचिव श्री राकेशनिहालजी द्वारा किया गया। सर्वप्रथम सचिव एवं संचालक श्री राकेशनिहालजी ने गौ-संवर्द्धन आश्रम के उद्देश्य, इतिहास, संकल्पना एवं भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् बाहर से आए गणमान्य विशेषज्ञों का उद्बोधन हुआ। सम्पूर्ण प्रकल्प के प्रेरणास्रोत डॉ. चंचलमलजी चोरड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी का उद्बोधन विशेष रहा। इसके बाद में उन सभी सेवाभावियों को सम्मानित किया गया जिन्होंने गौशाला को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग किया। संस्था के कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन ने धन्यवाद व्यक्त किया। सभी आगन्तुकों ने सम्पूर्ण प्रकल्प को जानने-समझने हेतु अवलोकन किया एवं डॉ. चोरड़िया के विजन को खूब सराहा तथा इस प्रकल्प के लिए मंगलकामना दी। -डॉ. चंचलमल चोरड़िया, जोधपुर

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2023 का प्रकाशन

मुम्बई-प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी सम्पूर्ण जैन समाज के चारों समुदायों के 17,000 से अधिक जैन साधु-साध्वियों के 2023 में स्वीकृत होने वाले चातुर्मासों एवं समाज की सभी गतिविधियों की जानकारियों से युक्त 'समग्र जैन चातुर्मास सूची 2023 के 45वें अंक' का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है। अतः आपसे नम्र निवेदन है

कि आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन-जिन पूज्य जैन गच्छनायकों, आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2023 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी साधु-साध्वियों के चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि हम इसका शीघ्र प्रकाशन कर सकें। चातुर्मास की जानकारियाँ ई-मेल से भी प्रेषित कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र—बाबूलाल जैन उज्ज्वल, सम्पादक (गजेन्द्र सन्देश), 105, तिरुपति अपार्टमेंट, आकुर्ली रोड नं. 1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101, मोबाइल 9324521278, 9869841923 ई-मेल ujjwalprakashan@gmail.com

रत्नसंघ प्रोफेशनल फोरम रजिस्ट्रेशन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर रत्नसंघ में जितने भी चार्टर्ड एकाऊन्टेण्ट/कास्ट एकाऊन्टेण्ट, कम्पनी सेक्रेटरी, डॉक्टर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट, वकील/कानून विशेषज्ञ, न्यायाधीश/न्यायाधिपति, भारतीय प्रशासनिक/पुलिस/सम्बन्धित सेवा, राज्य प्रशासनिक पुलिस/सम्बन्धित, अध्यापक, प्राध्यापक, प्रोफेसर, भारतीय सेना/ सुरक्षा बल, पत्रकार, बैंकिंग, कलाकार (आर्टिस्ट) सूचना एवं तकनीक, एम.बी.ए. आदि प्रोफेशनल सदस्य हैं, उन्हें एक मंच पर लाने की, संघ की मुख्य धारा से जोड़ने की, सक्रिय करने की और उनकी प्रतिभाओं का उपयोग करने की, संगठित रूप से एक-दूसरे का सहयोग करने की एवं साथ ही उनमें नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने की भावना रखता है।

सभी सदस्यों से निवेदन है कि रत्नसंघ एप्प में अपना पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) करते समय प्रोफेशनल वर्ग (केटेगरी) का अवश्य चयन करें।
—*धनपत सेठिया, महामंत्री, अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

पर्युषण पर्व की आराधना द्वितीय श्रावण में

14 से 21 अगस्त, 2023 तक

आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा ने इस वर्ष स्थानकवासी समाज में पर्युषण पर्व की एकता के लिए अपना मानस बनाया था। एतदर्थ उन्होंने विगत तीन शताब्दियों से चातुर्मास प्रारम्भ होने के 49/50वें दिन सम्बत्सरी मनाने की परम्परा को छोड़कर पर्युषण एकता हेतु निम्नाङ्कित दो शर्तों पर सहमति प्रदान की थी—

1. समस्त स्थानकवासी समाज के घटक यदि इस एकता में सम्मिलित होते हैं, तो वे भी सहर्ष इस एकता में सहभागी बनकर प्रमोद का अनुभव करेंगे।

2. जो भी तिथि तय हो वह सदा के लिए हो, उसमें बार-बार परिवर्तन न हो।

एकता के इस प्रयत्न में इन दिनों स्थानकवासी समाज के कुछ घटकों ने अपनी असहमति प्रकट की है। अतः रत्नसंघ भी अपनी पूर्व आगम सम्मत परम्परा के अनुसार चातुर्मास से 50वें दिन संवत्सरी पर्व मनायेगा। ऐक्य की दीर्घ प्रतीक्षा के पश्चात् अब यह निर्णय लिया गया है कि पर्युषण पर्व द्वितीय श्रावण कृष्ण 13 सोमवार, 14 अगस्त, 2023 से प्रारम्भ होंगे तथा द्वितीय श्रावण शुक्ला 5 सोमवार, 21 अगस्त 2023 को संवत्सरी महापर्व मनाया जायेगा।
—*धनपत सेठिया, महामन्त्री*

संक्षिप्त समाचार

जयपुर- 26 जून, 2023 को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ, जयपुर (रजि.), लाल भवन, चौड़ा रास्ता की कार्यकारिणी-समिति की बैठक आयोजित की गई, जिसमें सर्व सम्मति से श्री विजयचन्द्रजी लोढ़ा का अध्यक्ष पद पर चयन किया गया तथा श्री नवरतनजी कोठारी का कार्यकारिणी में सहवरण सदस्य के रूप में चयन किया गया।

-सुरेशचन्द्र कोठारी, संयुक्त मन्त्री

मुरादाबाद- तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय में 24 मई, 2023 को प्रो. रेणुजी जैन (कुलपति देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर) और प्रो. रघुवीरसिंहजी (कुलपति, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद) की उपस्थिति में 'भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र' (IKS Centre) का शुभारम्भ हुआ। इस केन्द्र में पुस्तकालय, सभाकक्ष, निदेशक कक्ष आदि की व्यवस्था के साथ ही शोधार्थियों हेतु सभी आवश्यक सुविधाएँ जुटाई गई हैं। केन्द्र के निदेशक एवं चेयर प्रोफेसर डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन तथा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने हेतु इस केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र पर आयोजित व्याख्यानमाला में प्रथम व्याख्यान 'भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जैन साहित्य' विषय पर सम्पन्न हुआ।

-डॉ. अनुपम जैन, निदेशक

आगरा- अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा घोषित श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द जन्म शताब्दी समारोह 2023-24 के अन्तर्गत 18 जून, 2023 को ब्रह्मचारी जय निशान्त जैन के प्रतिष्ठा आचार्यत्व में श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समारोह में 'आचार्य श्री विद्यानन्दजी का राष्ट्र को अवदान' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन श्री शैलेन्द्रजी जैन-एडवोकेट, अलीगढ़ की अध्यक्षता में हुआ। इस विद्वत् संगोष्ठी में डॉ. श्रेयांस कुमारजी जैन-बड़ौत, डॉ. अनिल कुमारजी जैन-जयपुर, कार्याध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्रजी भारती-बुरहानपुर, महामन्त्री डॉ. अखिलजी जैन बंसल सहित अनेक विद्वानों ने सहभागिता की और इस विषय पर अपने-अपने विचार अभिव्यक्त किए।

-सुरेन्द्र जैन

बधाई

उदयपुर- डॉ. दिलीपजी धींग को साहित्यिक संस्था युगधारा द्वारा 21 मई, 2023 को 'युगधारा सम्मान' से सम्मानित किया गया। अनेक साहित्यकारों की उपस्थिति में उन्हें यह सम्मान उनके द्वारा प्रचुर लोकोपयोगी साहित्य सृजन तथा शाकाहार-प्रचार में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज ने कहा कि डॉ. धींग के सम्मान से युगधारा का गौरव बढ़ा है। राजस्थानी भाषा, साहित्य व संस्कृति अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देवजी कोठारी के मुख्य आतिथ्य में समारोह अध्यक्ष डॉ. कुंदनलालजी कोठारी ने कहा कि डॉ. धींग तन से दुर्बल, लेकिन मन से सबल हैं। 8 जून, 2023 को तिरुवन्नामलै जिलान्तर्गत प्राचीन तीर्थ तिरुमलै में भट्टारक धवलकीर्तिजी ने डॉ. धींग का उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए सम्मान किया। उक्त अवसर पर आचार्य श्री सुविधिसागरजी, आर्यिकाएँजी एवं आचार्य अकलंक विद्यापीठ के विद्यार्थी उपस्थित थे।

-अशोक जैन, अध्यक्ष



जोधपुर- सुश्री भूमि सुपुत्री श्रीमती सुषमाजी-श्री राकेशजी सुपौत्री श्रीमती प्रेमलताजी-श्री शांतिलालजी सिंघवी ने सी.बी.एस.ई. की सीनियर कला वर्ग की परीक्षा 95% अंकों से उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

कोटा-धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलाबाईजी (हरकीबाईजी) धर्मपत्नी श्री महावीर प्रसादजी जैन (श्यामपुरा वाले) का 67 वर्ष की आयु में 31 मई, 2023 को स्वर्गवास हो गया। आप आदर्श गृहिणी होने के साथ ही मिलनसार, धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धाशील श्राविका थीं। आपने अपने जीवन में अठाई तथा नौ उपवास की तपस्या की एवं प्रतिवर्ष तेले तप की आराधना करती थीं। विगत 25 वर्षों से रात्रि में चौविहार-त्याग रखती थीं। जमीकंद त्याग, कच्चे पानी का त्याग, शीलव्रत का पालन, पर्व तिथियों पर लिलौती का त्याग रहता था। सामायिक, प्रार्थना आपका दैनिक क्रम था। आपकी सन्त-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धा भक्ति थीं एवं उनकी सेवा भक्ति-दर्शन-वन्दन में अग्रणी रहती थीं। आपके धर्म सहयोगी श्री महावीर प्रसादजी जैन वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ प्रदान करते हैं। आपके देवर श्री प्रकाशचन्दजी जैन प्राचार्य-जयपुर में तथा श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार, जोधपुर में रत्नसंघ में सक्रिय रूप से समर्पित हैं। आपके बड़े सुपुत्र श्री गौतमचन्दजी जैन अहमदाबाद में कार्यरत हैं। छोटे सुपुत्र श्री संदीपजी (शीतल) जैन का अभी दस माह पूर्व स्वर्गवास हो गया था। आपकी सुपुत्री स्मिता जैन (पिंकी जैन) धर्मपत्नी श्री मुकेशजी जैन इंदौर में है। आपकी दोनों पुत्रवधुएँ श्रीमती नीतू जैन एवं श्रीमती मंजूजी जैन धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत, व्यवहार कुशल एवं विनम्र स्वभाव की हैं। आपके पौत्र श्रेयांस जैन, आरव जैन, पौत्री आयुषी जैन, भव्या जैन आदि से भरा-पूरा परिवार है। - *धर्मचन्द जैन, जोधपुर*

जोधपुर-दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती तुलसीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्रीमान् मोहनलालजी गोगड़ (आगोलाई वाले) का 4 जून, 2023 को 88 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत थीं। आप प्रतिदिन 8-10 सामायिक करती थीं तथा आपने अठाई तप की 10 बार आराधना की। प्रत्येक होली-दीपावली पर्व पर तेले की तपस्या भी करती थीं। आपने 3 वर्ष तक एकान्तरतप की साधना भी की। आपके अनेक वर्षों से रात्रि भोजन तथा जमीकन्द के त्याग थे। आपके सुपुत्र श्री भँवरलालजी गोगड़ रत्नसंघ के प्रतिष्ठित श्रावक होने के साथ ही प्रतापनगर जैन समाज के अध्यक्ष हैं। आपकी पुत्रवधू श्रीमती तारादेवीजी गोगड़ तपस्विनी, सेवाभावी एवं समर्पित श्राविका हैं। आपके पौत्र श्री रावलचन्दजी, श्री स्वरूपचन्दजी तथा श्री सचिनजी गोगड़ भी समर्पित एवं सेवाभावी हैं। आपकी सभी सन्त एवं महासतियाँजी के प्रति गहरी श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गयी हैं। परिवारजनों में धार्मिक संस्कार आपकी सत्प्रेरणा का ही सुफल है।

सूरत-धर्मपरायण, श्रद्धानिष्ठ, वरिष्ठ सुश्राविका वीरमाता श्रीमती खमादेवीजी धर्मसहायिका स्मृतिशेष वीरपिता श्री सम्पतराजजी कोठारी (बागावास, सबदत्ती) का 18 मई, 2023 को 84 वर्ष की वय में चौविहार संधारे के साथ देवलोकगमन हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म पर अगाध श्रद्धा-भक्ति थीं एवं चारित्रनिष्ठ संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपका जीवन धर्मनिष्ठ एवं तप-त्याग से ओतप्रोत था। आपकी सांसारिक पुत्रियाँ महासती श्री प्रवीणाजी म.सा. एवं महासती श्री उर्मिलाजी म.सा. के रूप जिनशासन की प्रभावना कर रही हैं। आपके सुपुत्र श्री गेंदमलजी, श्री विजयजी, श्री अशोकजी कोठारी संघ-समाज की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। - *मोहन कोठारी 'विनर'*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री मूलचंदजी गोखरू (दूनी वाले) का 3 जून, 2023 को 69 वर्ष की वय में हैदराबाद में देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति

थीं। आपने तेले आदि की तपस्याएँ की है तथा प्रतिदिन पाँच सामायिक करती थीं। आप सरल हृदय की प्रतिमूर्ति थीं एवं जरूरतमन्दों की मदद हेतु सदैव तत्पर रहती थीं। आप जैनधर्म-दर्शन के प्रमुख विद्वान् आदरणीय श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा की सुपुत्री थीं। आपके सुपुत्र श्री मनीषजी सी.ए. एवं पुत्रवधु श्रीमती नीलिमाजी संघ सेवा में अग्रणी रहते हैं। आपकी सुपुत्री गरिमा एवं वन्दना भी सेवाभावी हैं तथा हैदराबाद में कार्यरत हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



मंडी गोबिन्दगढ़(पंजाब)- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पुरुषोत्तमजी जैन का 18 जून, 2023 को 76 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप साधु-साध्वियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपने 66 जैन ग्रन्थों का पंजाबी भाषा में अनुवाद/लेखन किया तथा स्वतन्त्र रूप से जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया। आप पंजाबी, अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा में जैनधर्म एवं इतिहास को निपुणतापूर्वक प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला में जैन चेयर की स्थापना कराने में आपका पूरा योगदान रहा था। आपके द्वारा रचित सचित्र महावीर जीवनचर्या के तीन संस्करणों का प्रकाशन हो चुका है। आप साधु-साध्वियों को पी-एच.डी. करने में भी सहयोग प्रदान करते थे।



उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

चाह-

❖ चाह में आह है, अचाह ही सुख की राह है।

समत्व-

- ❖ समाधि का अनुसन्धान हो, समत्व का रसपान हो।
- ❖ पर-पदार्थों के जुड़ाव को 'ममत्व' कहते हैं, स्व पदार्थ (आत्मा) से जुड़ाव को 'समत्व' कहते हैं,
- ❖ ममत्व का विसर्जन हो, समत्व का सर्जन हो।

प्रेम-

- ❖ अपनी गलती का शीघ्र स्वीकार हो, आपसी प्यार बरकरार हो।
- ❖ ये ही जीवन का सार, निःस्वार्थ प्रेम का हो प्रसार।
- ❖ जीव से हो प्रेम और पुद्गल का हो उपयोग, तो नहीं बढ़ेगा, कर्म का रोग।

शुद्धता-

- ❖ अपनी शुद्धता का स्वीकार हो, तो अवश्य बेड़ा पार हो।
- ❖ जब से मैंने अपने को पूर्ण, शुद्ध, नित्य, ध्रुव माना। तब से न कुछ करना शेष है, और न कुछ पाना।

भेद-विज्ञान-

- ❖ हे चेतन! अपने को देह मानना भारी भूल है, भेद-विज्ञान ही मुक्ति का मूल है।

ज्ञाता भाव-

- ❖ कर्ता भाव विभाव है, ज्ञाता ही मेरा स्वभाव है।

सम-

- ❖ 'सम' के समान सुख नहीं, यम (मृत्यु) के समान दुःख नहीं।

भ्रमजाल-

- ❖ साधनों से सुख यह एक भ्रमजाल है, इसे काटे वह निहाल है।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

- 16410 श्री पवनजी जैन, नया हरसूद (मध्यप्रदेश)
- 16411 श्री रविन्द्रजी बोथरा, चेन्नई (तमिलनाडु)
- 16412 श्री भीकमचन्दजी बोहरा, जोधपुर (राजस्थान)
- 16413 श्रीमती सपनाजी ढङ्गा, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- 16414 श्री अन्नूजी कोचर, अहमदाबाद (गुजरात)
- 16415 श्री सुदर्शनजी जैन, दिल्ली (दिल्ली)
- 16416 डॉ. रश्मिजी पोखरना, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
- ### जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार
- 111000/-श्री हेमेशजी भागचन्दजी सेठ, जयपुर (राज.)
- 100000/-श्री ज्ञानचन्दजी जैन (बाघमार), श्री कालाहस्ती (आन्ध्रप्रदेश)
- 50000/- M/s. Gie Gold Creations Pvt. Ltd., Jaipur
- ### जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार
- 11000/-श्रीमती मंजूजी पदमचन्दजी कोठारी, जयपुर की ओर से सप्रेम।
- 11000/-मैसर्स शान्ति ज्वैलर्स, पी. शान्तिलालजी, सुरेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी गुन्देचा, हैदराबाद, श्री पी. शान्तिलालजी-श्रीमती कमलादेवीजी की 52वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
- 6300/- श्री मुकेश कुमारजी, विनीतजी गोठी, किशनगढ़-अजमेर, पूजनीया माताजी श्रीमती प्रेमलताजी गोठी की पुण्यस्मृति में।
- 5100/- श्रीमती चन्द्रप्रभाजी धर्मपत्नी श्री पदमराजजी मेहता, बेंगलुरु-जोधपुर, अपने विवाह की 50वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
- 3100/- श्री डी. गौतमचन्दजी, निर्मल कुमारजी, पवन कुमारजी टोडरवाल, चेन्नई, चि. हर्षजी द्वारा बी.कॉम, चि. प्रणीतजी द्वारा कक्षा 10, चि. आयुषजी एवं कु. नेहलजी जैन द्वारा 96% से अधिक अंक प्राप्त करने की खुशी में।
- 2100/- श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी, नमोकारजी, मोहनजी, धनराजजी, कृतिकजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. कृतिकजी (सोनू) सुपुत्र श्री

धनराजजी का शुभविवाह सौ.कां. अदितिजी (प्रज्ञा) सुपुत्री श्री गोविन्द सहायजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर के संग 5 जून, 2023 को सम्पन्न होने की खुशी में।

- 2100/- श्री धर्मचन्दजी, रमेशचन्दजी, महेन्द्र कुमारजी, अंकित कुमारजी जैन (करेला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. अंकुशजी सुपुत्र श्रीमती विश्रान्तिजी-स्व. श्री दानमलजी का शुभविवाह सौ.कां. पूजाजी सुपुत्री श्रीमती अनिताजी-महेन्द्र कुमारजी (पचाला वाले) के साथ 16 मई, 2023 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 2100/- श्री नरेन्द्रजी जैन (सुपुत्र), सचिनजी, नितिनजी जैन (सुपौत्र) प्रभु तारा परिवार, फाजिलाबाद-हिण्डौनसिटी, वीरपिता स्व. श्री प्रभुदयालजी जैन की 12वीं पुण्यतिथि 2 जून, 2023 के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्री भँवरलालजी, रावलचन्दजी, स्वरूपजी, सचिनजी गोगड़ (आगोलाई वाले), जोधपुर, पूजनीया माताजी श्रीमती तुलसीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री मोहनलालजी गोगड़ का 4 जून 2023 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 2100/- श्री अनोखचन्दजी, सौरभजी, गौरवजी जैन (श्यामपुरा वाले), जयपुर, नवनिर्मित आवास में 1 जून, 2023 को गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्री गोविन्द सहायजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, सौ.कां. अदितिजी का शुभविवाह चि. कृतिकजी जैन सुपुत्र श्री धनराजजी जैन सराफ के संग 5 जून, 2023 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री महेन्द्र कुमारजी, कुशलजी, नवरत्नजी, अक्षतजी, अंशुलजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. रजतजी (गोल्) सुपुत्र श्री महेन्द्रजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. नैन्सी (वेशु) सुपुत्री श्री मनमोहनजी जैन (कुण्डेरा वाले), फलौदी के संग 2 मई, 2023 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, नरेन्द्रजी, कमलजी जैन (जय जिनेन्द्र वाले), कोटा, पूज्य पिताजी श्री नेमीचन्दजी जैन (सुनारी वाले) का 2 जून 2023 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

- 1100/- श्री महेशचन्दजी जैन (नांगल पहाड़ी वाले), प्रतापनगर-जयपुर, सौ.कां. प्रेक्षाजी का शुभविवाह चि. नवीन कुमारजी जैन सुपुत्र श्री रमेशचन्दजी जैन (समिधि वाले) के संग 2 मई 2023 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री रामलक्ष्मणजी कुम्भट, जोधपुर, पूजनीया माताजी श्रीमती उगमकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की 13वीं पुण्यतिथि 4 जून, 2023 के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री गौतमचन्दजी सुपुत्र श्री महावीरप्रसादजी जैन, जवाहरनगर-कोटा, पूजनीया माताजी श्रीमती विमलाबाईजी जैन का 31 मई, 2023 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्रीमती चन्द्रकँवरजी मोदी, जोधपुर, सुपौत्र श्री देवेशनाथजी मोदी की पदोन्नति तथा श्री जिनेशनाथजी मोदी के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री रघुवीर प्रसादजी जैन (समिधि वाले), महारानी फार्म-जयपुर, अपने भ्राता श्री बाबूलालजी जैन का 16 मई, 2023 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री लड्डूलालजी, सुरेन्द्रजी, पदमचन्दजी जैन (चकेरी वाले), जलगाँव-जयपुर, श्रीमती बादामदेवीजी की द्वितीय पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री रमेशचन्दजी जैन (आलनपुर वाले), जयपुर, चि. चिरागजी का शुभविवाह सौ.कां. नीतूजी सुपुत्री श्री धर्मचन्दजी जैन, जरखोदा वाले के संग 5 जून, 2023 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु

- 420000/-मैसर्स नयनतारा एण्ड सन्स, जलगाँव, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'शास्त्र स्वाध्यायमाला' एवं 'अंतगडदसासूत्र' के पुनः मुद्रण हेतु अर्थ सहयोग।
- 128000/-मैसर्स पारस जयशील हेल्थ केयर, बेंगलुरु, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'उत्तराध्ययनसूत्र हिन्दी' के पुनः मुद्रण हेतु अर्थ सहयोग।

नर भव हाथ आया

श्री धैर्य सुराणा

(तर्ज :: सजना है मुझे, सजना के लिए)

नर भव हाथ आया, तिरने के लिए।
नहीं तीर पर आकर, बहने के लिए॥

अरे! चेतन जरा विचार तूँ,
प्रभु वाणी पे श्रद्धा धार तूँ,
अनन्तकाल सञ्चित किए पुण्य कर्म,
तब कहीं मिला है ये मानव जन्म,
दुर्लभता इसकी जानकर,
पुरुषार्थ अपना महान् कर॥1॥

जीवन के अनमोल क्षण हैं चन्द,
तोड़ डाल सारे कर्मों के बन्ध,
प्रतिपल तूँ प्रभु को याद कर,
न क्षण का भी प्रमाद कर॥2॥

इत-उत दौड़ता रहता है मन,
फैशन-व्यसन में लग रहा तन,
नश्वर तन से न भोग कर,
इसे साधना में उपयोग कर॥3॥
बीत रही आयुष्य की ये घड़ियाँ,
खोलता जा मोह की हथकड़ियाँ,
आत्मगुणों को निखार लें,
जीवन अपना तूँ सँवार ले॥4॥
मोक्ष के द्वार प्रभु फरमाते चार,
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप जीवन का है सार,
ज्ञान गगन में उड़ान भर,
निज आत्म की पहचान कर॥5॥
मोक्ष मार्ग प्रभु ने फरमाया है,
गणधरों ने हम तक पहुँचाया है।
अनित्यता शरीर की जान ले,
सिद्ध बनना है ये ठान ले॥6॥

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

एक बच्चा और

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

नीलिमाजी अपनी बीएमडब्ल्यू गाड़ी से उतरी। सामने सरकारी स्कूल के दरवाजे से महेश दौड़ता हुआ आया। पाँव में चप्पल, फटी हुई हल्के नीले रंग की शर्ट और गहरे नीले रंग की नीकर, गौरा रंग और मोहक मुस्कान। महेश नीलिमाजी को देखकर रुका और फिर उन्हें प्रणाम किया।

नीलिमाजी एक दिन घर में सुस्त बैठी थी। वह स्वयं बहुत पढ़ी-लिखी एमबीए किये हुए है, लेकिन उन्होंने बच्चे होने के बाद अपनी मर्जी से नौकरी छोड़ दी और अपने दोनों बच्चों को बहुत अच्छे संस्कार दिये। उनके बच्चे भी पढ़ाई में सदैव अक्वल आते। बारहवीं कक्षा के बाद पहले बड़ा बेटा आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया और दो साल बाद छोटा बेटा भी चला गया। अमेरिका के टॉप कॉलेज हारवर्ड में दोनों की पढ़ाई चल रही थी। नीलिमा जी को खाली घर खाने को दौड़ता था, इसलिए वह थोड़ी सुस्त थी।

उन्होंने सोसायटी का क्लब जॉइन किया, लेकिन देखा सिर्फ गपशप ही अधिक होती है, रचनात्मक काम नहीं। उन्होंने सोचा कुछ करना है, फुलटाइम नौकरी नहीं करके क्यों न मैं अपना मातृत्व अब दूसरे बच्चों पर भी

उँडेलूँ। नीलिमाजी ने अगले दिन एक सरकारी स्कूल के प्रधानाचार्यजी से बात की और उनसे पता चला कि महेश पढ़ने में होशियार है, लेकिन कोविड के दौरान उसके पिताजी की मृत्यु हो गई। उसके घर में माँ और महेश अब दो ही प्राणी हैं। महेश की माँ लोगों के घर बर्तन साफ करने का काम करती है।

नीलिमाजी ने मन ही मन ठान लिया कि महेश को काबिल बनाने और उसकी जिन्दगी सँवारने की जिम्मेदारी अब मेरी है। चूँकि महेश अपनी माँ का इकलौता बेटा है, वह अपनी माँ के साथ ही रहेगा, लेकिन उसकी स्कूल पोशाक, उसकी अतिरिक्त ट्यूशन, किसी एक खेल में अतिरिक्त ट्रेनिंग, उसको स्वास्थ्यवर्धक अच्छा खाना मिले आदि की जिम्मेदारी स्वयं लेगी। हर माह उससे मिलने जायेगी। उसको किसी भी तरह की कोई परेशानी है, तो उसको दूर करने की कोशिश करेगी।

प्रधानाचार्यजी ने महेश को और उसकी माँ को सब बताया। अगले दिन नीलिमाजी महेश को मिलने स्कूल आई। जैसे ही महेश ने प्रणाम किया, उन्होंने उसको गले लगा लिया। उसको बाजार ले गई। नई पोशाक, 3-4 दूसरी पोशाक, कुछ फल और नया बाँस्केट बाल आदि दिलाया। उससे ढेर सारी बातें की।

उसका अगले माह जन्मदिन भी था।

नीलिमाजी हर 3-4 दिन में फोन करती। उसको ज्ञानवर्धक और रोचक किस्से भी सुनाती। महेश का भी आत्मविश्वास बढ़ रहा था। अब वह अच्छी अंग्रेजी भी बोलने लगा। नीलिमाजी को बहुत खुशी हुई, उन्होंने सोचा कि क्यों न मैं 'एक बच्चा और' की मुहिम छोड़ूँ और सोसायटी की सभी औरतों को इससे जोड़ दूँ।

पहले दौर में 11 औरतें जुड़ी। सबने एक-एक बच्चे की जिम्मेदारी ली। बच्चों को उनके जन्मदिन पर कुछ अच्छा तोहफा अलग से देते। यह बच्चों के सम्पूर्ण विकास की मुहिम थी।

कई जगह स्कॉलरशिप प्रोग्राम वगैरह चलते हैं, लेकिन इस मुहिम में बच्चों के साथ सीधी बातचीत होती है और छोटा-सा पौधा वटवृक्ष का रूप लेता दिखाई देता है। माह में एक दिन समय निकालना किसी के लिए मुश्किल भी नहीं था और बच्चों का शैक्षणिक शारीरिक, आध्यात्मिक विकास देखकर सभी को अच्छा महसूस होता था।

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- उच्चारण की अशुद्धि से क्या-क्या हानियाँ हैं?

उत्तर- उच्चारण की अशुद्धि से निम्नांकित हानियाँ हैं-
(1) कई बार अर्थ सर्वथा नष्ट हो जाता है। (2) कई बार विपरीत अर्थ हो जाता है। (3) कई बार आवश्यक अर्थ में कमी रह जाती है। (4) कई बार सत्य, किन्तु अप्रासंगिक अर्थ हो जाता है। उदाहरण-संसार में से एक बिन्दु कम बोलने पर संसार (सारसहित) हो जाता है या शास्त्र में से एक मात्रा कम कर देने पर शस्त्र हो जाता है। अतः उच्चारण अत्यन्त शुद्ध करना चाहिए।

प्र. 2- अकाल में स्वाध्याय और काल में अस्वाध्याय से क्या हानि है?

उत्तर- जैसे जो राग या रागिनी जिस काल में गाना चाहिए, उससे भिन्न काल में गाने से अहित होता है,

वैसे ही अकाल में स्वाध्याय करने से अहित होता है। यथाकाल स्वाध्याय न करने से ज्ञान में हानि तथा अव्यवस्थितता का दोष उत्पन्न होता है। अकाल में स्वाध्याय करने एवं काल में स्वाध्याय न करने से शास्त्राज्ञा का उल्लंघन होता है। अतः इन अतिचारों का वर्जन करके यथासमय व्यवस्थित रीति से स्वाध्याय करना चाहिए।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

अहिंसा

श्री अशोक कुमार बोहरा

अहिंसा हमारा आत्म-तत्त्व है, हर जन को हम यही बतायें। महावीर की दिव्य वाणी का, परम धर्म यही समझायें। जिस साधक ने इसको पाला, मुक्ति मार्ग में बढ़ गया वह। श्रावक ने समझी शक्ति तो, भव सागर से तिर गया वह। धर्म का मूल जीव दया है, हिंसा सर्वत्र महापाप है। हिंसा मेटे, हिंसा रोके, हिंसा से नित बचे आप हैं। घोर नरक का द्वार है हिंसा, मिथ्यात्व से परिपूर्ण है। समत्व-समता को अपना लो, मोक्ष मार्ग नहीं दूर है। अहिंसा काटे कर्मबन्धन, मानवधर्म इसी में निहित। पालन जिसने कर लिया तो, नर से नारायण वह चिह्नित। जाप कर नवकार मन्त्र का, जिसने अहिंसा को अपनाया। जीवन सार्थक सफल करके, सुख अलौकिक उसने पाया। पतवार यही जीवन नौका की, आत्मबल विश्वास अहिंसा। साधना-आराधना यही अहिंसा, युगधर्म है आज अहिंसा। है साधक की सिद्धि अहिंसा, समत्व की जननी अहिंसा। नींव का पत्थर यही अहिंसा, मानव मूल्यों में प्रथम अहिंसा। होगी मानवता की सेवा, जीव सभी नित गले मिलेंगे। भय-शोक-दुःख दूर होंगे, सब खुशियों के कमल खिलेंगे।

-10, प्रतापनगर, दादाबाड़ी, कोटा-324009 (राज.)

You can start to win at any time

Sh. Shrikant Gupta

To solve any problem or to reach your goal, you don't need to know all the answers in advance. But you must have a clear idea of the problem or the goal you want to reach.

All you have to do is to know where you're going. The answers will come to you of their own accord. Don't procrastinate when faced with a big difficult problem, break the problem into parts, and handle one part at a time.

If you can get up the courage to begin, you have the courage to succeed. It's the job you never start that takes the longest to finish. Don't worry about what lies dimly at a distance, but do what lies clearly ahead.

Your biggest opportunity is where you are right now. Once you begin you're half done. When you realize you want to spend the rest of your life with somebody you want the rest of your life to start as soon as possible.

-Jodhpur (Rajasthan)

What is Life?

Miss Rajul Chopra

Life is like **Arithmetic**;

Where friends are **Added**

Enemies are **Subtracted**

Joys are **Multiplied**

And sorrows are **Divided**

Life is also like **Chemistry**;

It evaporates our **Sorrow**

Filters our **Troubles**

And we get crystals of **Happiness**

-D/o Shri Sunil Chopra, Shiv Shakti Nagar, Jodhpur
(Rajasthan)

3 Piece of Advice

Mrs. Minakshi Dinesh Jain

1. Don't talk, ACT.
2. Don't say, SHOW.
3. Don't promise, PROVE.

-17/729, CHB, Jodhpur (Rajasthan)

भाई-बहिन का प्यार

डॉ. दिलीप धींग

रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।
किस्मत वालों को मिलता, यह अनुपम उपहार है।।

पूछो उसको जिस भाई के बहिन नहीं है।
पूछो उसको जिस बहिन के भाई नहीं है।
भैया दूज, राखी सूनी, सूने सब त्यौहार हैं।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।।1।।

वीर प्रभु जब मोक्ष पधारे, व्यथित हुए थे नन्दीवर्धन।
तब सुदर्शना बहिना आई, किया शोक रंज का वर्जन।
आओ भैया मेरे घर पर, बहिना की मनुहार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।।2।।

बाहुबली की दीर्घ साधना, जब फलदायी नहीं बन पाई।
तब दो बहिनें ब्राह्मी-सुन्दरी, आई सम्यक् राह दिखाई।
मान-कषाय बुरा है छोड़ो, विनय धर्म का सार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।।3।।

साध्वी सरस्वती का जब, कामी राजा ने हरण किया।
भ्राता कालक जैनाचार्य ने, रणभेरी को बजा दिया।
मुक्त बहिन, भयमुक्त प्रजा हुई, धर्म की जय जयकार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।।4।।

आन, बान और शान बढ़ाते, भारत के त्यौहार निराले।
सम्बन्ध को सम बनाते, जीवन मूल्यों के रखवाले।
रीत प्रीत की रहे सुरक्षित, रक्षित घर-परिवार है।
रिश्ते में जो पावन प्यारा, भाई-बहिन का प्यार है।।5।।

-7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001
(तमिलनाडु)

अहिंसा अपनाओ, सृष्टि को बचाओ

श्री जयदीप ठड्डा

हम सभी जानते हैं कि जीवों को दुःख पहुँचाना
हिंसा है। हम मानते भी हैं कि इंसानों की हत्या और
पशु-पक्षियों को मारना कानून जुर्म है, हिंसा है, पाप
है। हम यह भी समझते हैं कि पेड़ों को काटना उचित नहीं
है, इनसे हमें ऑक्सीजन मिलती है। यह हमारी प्राणवायु
है, जीने का आधार है। इन्हें काटना भी हिंसा है। फिर भी
हम हिंसा पर हिंसा किए जा रहे हैं। हम इसकी सजा भी

भुगत रहे हैं। इन सबका सीधा असर हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। विश्व भर में आतंक की स्थिति बनी हुई है। यह कैसी समझदारी है? जबकि हमारे शास्त्रों में सृष्टि की 84 लाख जीव योनियों में सबसे श्रेष्ठ मानव योनि को माना गया है। मानव देह लाखों योनियों में भटकने और अच्छे कर्म करने के बाद मिलती है। लेकिन मानव योनि के जीवों ने शेष योनियों के जीवों के जीवन को संकट में डाल दिया है। हम जो देते हैं वहीं हमें मिलता है। हिंसा का प्रतिफल हिंसा ही है। इसीलिए खुद इंसान कौनसा सुरक्षित है? पूरी दुनिया में छाया अशान्त वातावरण और कोविड 19 जैसी जान लेवा महामारियाँ इसका ही प्रमाण है।

हमारी समझदारी केवल यह जानने, मानने में नहीं है कि हिंसा करना गलत है। हमारी बुद्धिमानी केवल यह कहने में भी नहीं है कि हमें अहिंसा अपनानी चाहिए। हम अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील और चेतनाशील हैं। हम अपनी गलतियों को उनसे बेहतर पहचान सकते हैं। सुधारने की कोशिश कर सकते हैं। उचित यही है कि हम अपनी इस समझदारी को व्यवहार में लाएँ। कथनी और करनी में अन्तर नहीं रखें। जब तक हम अपने विचारों, अपनी समझ और कथन को तुरन्त क्रियान्वित नहीं करेंगे, उसका सकारात्मक परिणाम कैसे मिलेगा? हमें तुरन्त अहिंसा को अपनाना होगा। जीव-जन्तु-पक्षियों को मारना बन्द करना होगा। पेड़ों को काटना बन्द करना होगा। अच्छी जीवन शैली को अपनाना होगा। तभी हम दुनिया की खराब स्थितियों पर काबू पा सकेंगे, विश्व को बचा सकेंगे। अन्यथा हमारे गुनाह, हमारे पाप हमें ही खा जाएँगे।

यही नहीं, उन सभी जीवों, पेड़-पौधों से क्षमा भी माँगनी होगी, जिन्हें हमने तकलीफ पहुँचाई है। अभी भी देर नहीं हुई है। अपने आप से वादा करें कि हम फिर कभी हिंसा नहीं करेंगे। अहिंसा को अपनाने का संकल्प लेंगे। उसे अपना आदर्श बनाएँगे और उस आदर्श पर चलेंगे भी। इसके अलावा बचने का कोई रास्ता नहीं है।

तभी सारे खतरे टल सकेंगे। विश्व में चैन और अमन बना रहेगा। पेड़-पौधों सहित सभी जीवों की रक्षा होगी। मानव जाति बची रहेगी, वरना जिस तेज गति से सर्वनाश हो रहा है, इस प्रलयकारी स्थिति से हमें कोई नहीं बचा पाएगा।

-ढड्डा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
(राजस्थान)

जैन बालक यह आदत डालें....

श्री महेश नाहटा

1. सन्त-सतियों के दर्शन करने जाएँ।
2. जय जिनेन्द्र बोलने की आदत डालें।
3. तीर्थकरों की कहानियाँ सुनें।
4. संकट आये तो नमस्कार मन्त्र बोलें।
5. गलती होने पर क्षमा माँगने की आदत डालें।
6. नमस्कार मन्त्र, तिकखुत्तो आदि याद करें।
7. सामायिक/स्वाध्याय की आदत डालें।
8. घर में सभी से जय जितेन्द्र कहें और उनसे भी जवाब में जय जिनेन्द्र बुलवायें।
9. रात्रिभोजन-त्याग सप्ताह/माह में कुछ दिन करने की शुरुआत करें।
10. हर रोज खुद छोटा या बड़ा पालन कर सकें, ऐसा नियम लें।
11. पर्युषण के दौरान प्रतिक्रमण अवश्य करें।
12. प्रतिदिन स्थानक में अवश्य जायें।
13. अपने निकट स्थित धार्मिक पाठशाला/शिविर में अवश्य जाएँ।
14. साधु-साध्वियों के प्रति विनय-भाव रखें।
15. हिंसक खेलों से दूर रहें।
16. टी.वी. देखने का समय निर्धारित हो, उससे अधिक देखना हितकर नहीं।

अपने धर्म का ज्ञान हमको ही प्राप्त करना है। यह सब सिखाने के लिए कोई और नहीं आयेगा।

-नगरी, धम्मत्तरी (छत्तीसगढ़)

क्षमा-शक्ति

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त, 2023 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

डॉक्टर डिग्री (M.B.B.S.) की छात्रा आकांक्षा मेडिकल कॉलेज के कोषाधिकारी रामसिंहजी के पास परीक्षा शुल्क जमा करवा कर रसीद लेकर चली गई। रामसिंहजी ने उस दिन की लेखा पंजिका (केशबुक) में टोटल लगाकर उसे बन्द कर दी थी, इसलिए उसने सोचा कि कल आते ही आकांक्षा वाली राशि जमा कर लूँगा।

अवकाश होने के कारण घर चला गया।

घर जाकर खाना खाया और तत्पश्चात् माँ के पास गया। रामसिंहजी की माँ ने कहा-“रामसिंह! आने वाली त्रयोदशी को तेरे दादाजी का श्राद्ध है। घर की आर्थिक परिस्थिति के कारण तीन-चार वर्ष से श्राद्ध नहीं कर रहे हैं। घर की बहिन-बेटी इस दिन की राह देखती है और इस दिन पूर्वज को स्मृति में लाकर दान-पुण्य कर लेते हैं।”

रामसिंह-“माँ श्राद्ध अवश्य करेंगे, पैसों का जुगाड़ करते हैं।” माँ ने हाथ में से सोने की चूड़ी उतार कर दी और कहा कि इसे बेच दे।

रामसिंह-ठीक है माँ।

रामसिंह ने जैसे ही चूड़ी उठाई, उसके हाथ काँपने लगे। चूड़ी आँगन में गिर गई। उसने साहस बटोर कर चूड़ी उठाई और जेब में डाल ली। दूसरे दिन कार्यालय जाने के पहले सर्राफा बाजार गया और चूड़ी सर्राफा को

देना चाहा, वह दे न सका उसके हाथ रुक गए। उसने चूड़ी जेब में वापस डाल ली। उसके मन में विचार आया कि यह तो पिताजी की निशानी है, इसे कैसे बेचूँ? वह रुआँसा होने लगा। परिवार बड़ा है। मैं, पत्नी, माँ, तीन बच्चे इनका खर्चा भारी पड़ता है। बच्चों की पढ़ाई बहुत महँगी है, वह मार देती है। मन में चिन्तन-मन्थन चल रहा था, तभी वह मेडिकल कॉलेज पहुँच गया। लेखा-पंजिका खोली। आपात-काल विपरीत बुद्धि हो गई। आकांक्षा की राशि लेखा-पंजिका में जमा न करके अपनी जेब में डाल ली। कार्यालय की रसीद बुक में राशि अंकित नहीं थी, उसने सोचा अब तो ऑडिट के पकड़ में भी नहीं आऊँगा। घर जाकर बड़ी प्रसन्नता के साथ उसने अपनी माँ से कहा-“माँ पैसों का जुगाड़ हो गया है आप सभी को आमन्त्रित कर दें और आप अपनी यह चूड़ी भी पहन लीजिए।”

बेचारी माँ को पता न था कि बेटे ने भारी कबाड़ा किया है। घर वाले, अतिथि सब प्रसन्न थे। रामसिंह भी खुश था। उसने यह नहीं सोचा था कि सत्य तो सत्य होता है, उसी की जीत होती है। लेकिन जो राशि का गबन किया, उसका परिणाम बहुत बुरा हुआ।

समय बीत गया। M.B.B.S. की परीक्षा समीप आ गई। आकांक्षा कोषाध्यक्ष के पास प्रवेश-पत्र लेने

आई। आकांक्षा का शुल्क, शुल्क-पंजिका में अंकित नहीं था, इसलिए उसका शुल्क और फॉर्म विश्वविद्यालय गया ही नहीं था, इसलिए प्रवेश-पत्र नहीं आया था।

आकांक्षा—बाबूजी, प्रवेश-पत्र दीजिए।

बाबू रामसिंह—आपका प्रवेश-पत्र नहीं आया है।

आकांक्षा—क्यों नहीं आया ?

बाबूजी—आपका शुल्क पंजिका में जमा नहीं है।

आकांक्षा—बाबूजी! ऐसा कैसे हो सकता है? मैं स्वयं आपके पास जमा करवा कर गई हूँ। आप पुनः शुल्क सूची में देखिए।

बाबू—नहीं है।

आकांक्षा तुरन्त प्रधानाचार्यजी के पास गई और रसीद उन्हें दिखाई और कहा—“मैंने समय पर राशि जमा करवा दी थी। फिर भी मेरा प्रवेश-पत्र क्यों नहीं आया?” आकांक्षा रोने लग गई। प्रधानाचार्यजी ने आकांक्षा को कहा—“धैर्य रखिए, मैं रसीद उनके पास भेज रहा हूँ। अभी पता लग जाएगा।”

प्रधानाचार्यजी ने चपरासी के साथ रसीद बाबू के पास भेजी। उस समय बाबू बाहर गया हुआ था। चपरासी रसीद टेबल पर रख कर आ गया। बाबू कक्ष में आया टेबल पर रसीद देखी और उसके होश उड़ गए। रसीद लेकर जूते में डाल दी।

आकांक्षा—बाबू जी! रसीद आपकी टेबल पर रख दी गई है। अब प्रवेश-पत्र का पता लग जाएगा।

बाबू रामसिंह—यहाँ रसीद नहीं है।

आकांक्षा—रोती हुई कहने लगी प्रधानाचार्यजी ने देखकर आपके पास भेजी है।

जोर-जोर से रोने लगी। शोर सुनकर पास के कक्ष से एकाउन्टेंट वहाँ पहुँच गया।

एकाउन्टेंट साहब—रामसिंहजी आप सच बोलिए। प्रधानाचार्यजी ने रसीद देख ली है, मामला बहुत गड़बड़ है। आप क्षमा पत्र लिख दीजिए कि मेरे से भूल हो गई है, गलती हो गई है।

रामसिंहजी ने कार्यालय के अन्य बाबुओं से सलाह ली तो उन्होंने कहा लिख कर हाथ नहीं कटाना है। एकाउन्टेंट साहब सस्पेन्ड करवा देंगे।

रामसिंह—एकाउन्टेंट साहब यदि मैंने लिखकर दे दिया तो आप मुझे नौकरी से निकलवा देंगे।

एकाउन्टेंट साहब—“यदि आप लिख कर दे देंगे तो मैं प्रधानाचार्यजी को समझा कर बचा सकता हूँ। कहूँगा बाल-बच्चे वाला है। कमाने वाला और कोई नहीं है। आप इस पर कृपा करिए। मामला पेचीदा है। लड़की कोर्ट कचहरी तक पहुँच सकती है। मैं तेरा बुरा क्यों करूँगा? मैं तुझे बचाने के चक्कर में हूँ।

रामसिंह को एकाउन्टेंट साहब पर भरोसा था, इसी विश्वास के साथ उसने लिख कर दे दिया।

एकाउन्टेंट साहब ने कोष पंजिका में राशि अंकित करवा दी ताकि रसीद बुक से मिलान करें तो ऑडिट पेरा न बने।

रामसिंह कार्यालय में गलती स्वीकार कर छूट गया। अब लड़की से समझौता करना था। वह कार्यालय से बाहर गया जहाँ प्रवेश-पत्र की आशा में वह लड़की बैठी थी।

रामसिंह—बेटी! मेरे से बहुत बड़ी घृणित गलती हो गई है। मैं तेरे पाँव पड़ता हूँ, मुझे क्षमा कर दो। मैंने घरेलू कारणवश गबन कर लिया। मेरी वृद्धा माँ ने अपनी सोने की चूड़ी हाथ से खोल कर दी कि बेटा बेचकर श्राद्ध की रीति पूरी कर लेंगे। इस कारण मैं बहुत दुःखी हुआ। मैं उसे बेच न सका और धोखा-धड़ी का काम कर बैठा। मैं बहुत लज्जित हूँ। आपका शुल्क जमा नहीं करके जेब में डाल लिया। आप मुझे जो भी दण्ड देंगे उसे मैं भुगतने के लिए तैयार हूँ। प्रधानाचार्यजी, एकाउन्टेंट साहब और कार्यालय के सभी कर्मचारियों की दृष्टि से मैं गिर गया हूँ, अपनी प्राणामिकता खो बैठा हूँ।

बेटी! क्षमा कर दो।

आकांक्षा अचेत सी होने लगी। आँसूओं की झड़ी लग गई। उसकी बोली रुँध गई। मैं परीक्षा नहीं दे पाऊँगी। रात-देखी न दिन और खाने-पीने की कोई चिन्ता नहीं,

केवल पढ़ाई में डूबी रही, परिणाम यह हुआ कि मेरी वरिष्ठता छह माह पीछे हो जाएगी। सभी सहपाठी आगे हो जाएँगे, छूट जाएँगे। पिताजी होते तो वे मुझे ढाढ़स बँधाते। माँ तो बिना पापा के यूँ ही टूटी हुई है। छह माह का शुल्क भी उन पर भारी पड़ जाएगा। सभी सहपाठी खुशी-खुशी प्रवेश पत्र ले जा रहे हैं। हे प्रभो! मैंने क्या दोष किया? छह माह, अरे छह माह में तो दुनिया बदल जाती है। मैं अब कैसे पढ़ पाऊँगी? और उसकी आँखों में अंधेरा छा गया। मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ?

आकांक्षा की मनःस्थिति डोल रही थी। वह सोच रही थी कि मैं कोर्ट के द्वार खटखटाऊँगी तो समय और पैसों की बर्बादी है।

रामसिंह—मेरी मनःस्थिति का अंदाजा भी मैं नहीं लगा सकता हूँ। मैंने तेरे साथ वह अन्याय कर दिया जिससे मुझे स्वयं को अपने ऊपर ग्लानि हो रही है। मैंने अपने जीवन पर कलंक लगा लिया, वह मुझे हमेशा रौंदाता रहेगा।

आकांक्षा बहुत समझदार और दयालु प्रकृति की लड़की थी। उसने उस व्यक्ति को परख लिया। उसने सोचा कि रामसिंहजी ने अपनी गलती स्वीकार कर ली है। वह जरा भी आवेश में नहीं आई।

आकांक्षा—आपने मुझे बेटी बनाया है, बेटी कहा है। बेटी को पिता का सम्मान रखना चाहिए। आप माँ को कितना याद रखते हैं। जो मानव अपने माता-पिता की पीड़ा और भावना समझ लेता है, उसे मैं महान् समझती हूँ। आज क्षमा-दिवस है। मैं आपको हृदय से क्षमा करती हूँ।

रामसिंह—क्षमा वीरों और शक्तिमानों का अमूल्य आभूषण है। उसे आपने सहर्ष पहन लिया है। आप धन्य हैं।

—ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

- प्र. 1 रामसिंह ने शुल्क जमा क्यों नहीं किया ?
प्र. 2 आकांक्षा को प्रवेश-पत्र न मिलने पर उसकी क्या स्थिति हुई।

- प्र. 3 'सत्य तो सत्य होता है, उसकी हमेशा जीत होती है।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
प्र. 4 रामसिंह द्वारा सत्य बोलने पर आकांक्षा का मन कैसे परिवर्तित हो गया ?
प्र. 5 प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है।
प्र. 6 दिए गए शब्दों के चार-चार पर्यायवाची लिखिए—
प्रामाणिक, शुल्क, दयालु और प्रकृति।



बाल-स्तम्भ [मई-2023] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2023 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'सीख' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	रूपमाला जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	23
तृतीय पुरस्कार-200/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	21
	अंश जैन, मानसरोवर-जयपुर (राजस्थान)	21
	अमम जैन, दुर्गापुरा-जयपुर (राजस्थान)	21
	यशवर्धन आहूजा, अग्रवाल फार्म-जयपुर (राजस्थान)	21
	कु. किरण राजेश छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	21

बाल-जिनवाणी जून, 2023 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 अगस्त, 2023)

- प्र. 1. साधुजी ने सेठ को अशान्ति दूर करने का क्या उपाय बताया ?
- प्र. 2. सार्थक ने किस प्रकार अपने टूटते परिवार को बचाया ?
- प्र. 3. अर्थागम, सूत्रागम एवं तदुभयागम को परिभाषित कीजिए।
- प्र. 4. बड़ों के प्रति विनय-व्यवहार क्यों आवश्यक है ?
- प्र. 5. 'सभी बड़ों से लें आशीष' कविता में निहित मूलभाव लिखिए।
- प्र. 6. हम सच्चे अर्थों में भगवान महावीर के अनुयायी कब कहलायेंगे ?
- प्र. 7. शाकाहार किस तरह पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक है ?
- प्र. 8. Why is Ahimsa called the greatest contribution of Jainism to the world?
- प्र. 9. 'दादी-पोता' कहानी हमें क्या सन्देश देती है ?
- प्र. 10. Make a sentence from each word-Repeat, Unboiled, Opportunity and Forgiveness.

बाल-जिनवाणी [अप्रैल-2023] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रैल-2023 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	नैतिक चौपड़ा, जोधपुर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	नमिष जैन, बारों (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार-300/-	काजल जैन, राधानिकुञ्ज-जयपुर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)-200/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	अनिका जैन, महारानी फार्म-जयपुर (राजस्थान)	36
	अरनव चोरडिया, श्यामनगर-जयपुर (राजस्थान)	36

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

॥ श्री महावीराय नमः॥

॥ श्रीकुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः॥

॥ जय गुरु हीरा॥

॥ जय गुरु महेन्द्र॥

॥ जय गुरु मान॥

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

छात्रवृत्ति योजना आपकी योजना..... आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना संघ के सर्वांगीण

विकास एवं उन्नति के लिए वर्ष 2006 से जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं रत्नसंघीय सन्त-सती मण्डल की अनन्त कृपा से और आप जैसे श्रेष्ठीवर्य, दानवीरों, संघ समर्पित श्रावकरत्नों के मुक्तहस्त अर्थसहयोग के द्वारा निराबाध रूप से गतिशील है।

आपके द्वारा योजना समिति को दिया गया अर्थसहयोग संघ समर्पण, गुरु भाइयों के प्रति प्रेम-वात्सल्य, उदारता एवं संघ के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति का परिचायक है, जो आपके पुण्यार्जन का सशक्त माध्यम है। योजना समिति आपसे अर्थ सहयोग की अपेक्षा करती है।

Acharya Hasti Medhavi Chhaatravrittii Yojna Is Running Continuously Since 2006 And Have Been Giving Scholarship To Around 500 Students Every Year. Many Of The Students Have Become Graduates, Civil Services, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

**MEMBERSHIP PLAN
(ONE YEAR)**

SILVER MEMBER (RS. 50,000)	GOLD MEMBER (RS. 75,000)	PLATINUM MEMBER (RS. 1,00,000)
DIAMOND MEMBER (RS. 2,00,000)		KOHINOOR MEMBER (RS. 5,00,000)

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs. 3,000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M. Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

THE BANK A/C DETAILS IS AS FOLLOWS - BANK NAME & ADDRESS :-	AXIS BANK ANNA SALAI, CHENNAI
A/C NAME :-	GAJENDRA NIDHI ACHARYA HASTI SCHOLARSHIP FUND
IFS CODE :-	UTIB0000168
	A/c No. 168010100120722
	PAN No. AAATG1995J

Note Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act. 1961.

योजना में दिया गया अर्थसहयोग आयकर अधिनियम में 80जी के तहत छूट में आता है।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर प्रेषित करें

M. Harish Kavad, No. 5, Cart Street, Poonamallee, CHENNAI-600056 (Tamilnadu)

आचार्य हरती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यो एवं अर्थसहयोग एकत्रित करने करवाने वालों के नाम की सूची

विशेष आधार सहयोगी :: श्री राजीवजी नीताजी डागा, ह्यूस्टन

KOHINOOR MEMBER (Rs. 5,00,000)

श्री मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई।

युवारत्न श्री हरीश सा कवाड़, चैन्नई।

श्रीमती इन्द्राबाईजी-श्री सूरजमलजी भण्डारी (निमाज वाले), चैन्नई

DIAMOND MEMBER (Rs. 2,00,000)

M/s. Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai

PLATINUM MEMBER (Rs. 1,00,000)

मैसर्स दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।

श्री दलीचंद सा सुरेश सा कवाड़, पूनामल्लई।

श्री राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई।

श्री अम्बालाल सा बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।

श्री सम्पतराज सा राजकँवर जी भण्डारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।

प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगाँव

श्री विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडु

श्री जी. गणपतराजजी हेमन्तकुमारजी उपेन्द्रकुमारजी (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर।

श्री पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नामलई

श्रीमती शान्ता डॉ. उमरावसिंह जी लोढ़ा, रावजी की हवेली, जोधपुर।

श्री सुश्रावक, महामन्दिर-जोधपुर।

स्व. श्री रिषभराज जी सज्जनकँवरजी भण्डारी, सरदारपुरा जोधपुर।

श्री झूमरमल राजेन्द्रजी, किशोरजी बाघमार, चैन्नई।

GOLD MEMBER (Rs. 75,000)

श्रीमती पुष्पाबाईजी-सुभाषचन्दजी बागरेचा, शिरपुर (महा.)

श्री सम्पतराजजी, सपनाजी, दिनेशजी, राजेशजी सुराणा, जोधपुर-बैंगलोर।

श्री संदीप माँगीलालजी मुणोत, शिरपुर (महा.)

श्री सज्जनराजजी, महेन्द्रजी, राजेशजी बाफना, वडोदरा (गुजरात)

SILVER MEMBER (Rs. 50,000)

श्रीमती प्रेमलताजी-सोहनलालजी बोथरा (भोपालगढ़ वाले), जलगाँव।

श्री अमीरचन्दजी जैन, मानसरोवर-जयपुर (गंगापुरसिटी)।

श्री प्रकाशचन्दजी, शायरचन्दजी मुथा, औरंगाबाद (महा.)

श्री मदनलाल मैनाबाईजी बोहरा, आवड़ी-चैन्नई।

श्रीमती लाडकँवरजी-श्री अमरचन्दजी सांड, विजयनगर (राज.)

श्री पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नामलई।

श्री सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति नगर, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

श्री हेमन्त अरविन्दजी सिंघवी, चारनी रोड़, मुम्बई।

श्रीमती लताजी-विरेन्द्रजी सुराणा, मुम्बई (नागौर वाले)।

छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग करने वाले उदारमत्ता सहयोगी (मई, जून- 2023)

100000/- श्री जी. गणपतराजजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर।

100000/- श्री सुश्रावक, महामन्दिर-जोधपुर, मुम्बई।

50000/- श्रीमती प्रेमलताजी-सोहनलालजी बोथरा, जलगाँव (महा.)।

50000/- श्री मदनलाल जी बोहरा, आवड़ी-चैन्नई।

21000/- श्री कैलाशजी गोलेच्छा, व्हाइटफील्ड-बैंगलोर।

12000/- श्री विरेन्द्रकुमारजी जामड़, जयपुर।

12000/- श्री महेन्द्रजी गांग, सूरत।

4000/- श्री दीपकजी भण्डारी, अहमदाबाद।

छात्रवृत्ति योजना से सम्बन्धित जानकारी के लिए सम्पर्क करें-मनीष जैन, चैन्नई +919543068382

छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

जिनवाणी-प्रकाशन-योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में एक माह प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
- (2) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
- (3) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
- (4) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
- (5) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
- (6) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्म्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई
- (7) श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी, देवांशजी कुम्भट, जोधपुर-मुम्बई
- (8) सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि), जयपुर-वडोदरा-मुम्बई
- (9) नाहर परिवार मुम्बई, भोपाल, इन्दौर, बरेली।
- (10) सौ. प्रेमलताजी श्री सोहनलालजी, सौ. रंजनाजी श्री महावीरजी बोथरा, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (11) श्रीमती लाडुश्रीजी, राजीवजी, संजीवजी, सन्दीपजी नाहर, सूरत (गुजरात)

वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री जी. गणपतराजजी, हेमन्तजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार, चेन्नई-कोयम्बटूर (तमिलनाडु)
- (2) श्री हेमेशजी भागचन्दजी सेठ, जयपुर (राजस्थान)
- (3) श्री ज्ञानचन्दजी जैन (बाघमार), श्री कालाहस्ती (आन्ध्रप्रदेश)

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

**उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं
स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का
हार्दिक स्वागत।**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य

आत्म-चिन्तन, मूल्य 10 / -, संकलनकर्ता : श्री भँवरलाल

इस आत्मचिन्तन पुस्तक में मरण का स्वरूप बतलाकर सुमरण प्राप्त करने हेतु संधारे का स्वरूप एवं उसकी विधि का विवेचन किया गया है। भावों में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु संधारे के भजनों का भी समावेश किया गया है। पूर्वकृत पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए बृहद् आलोचना आदि आलोचना पंचक का समावेश किया गया है।

अचित्त जल का विज्ञान एवं जल-संरक्षण, मूल्य 50 / -, लेखक-डॉ. जीवराज जैन

अभियन्ता वैज्ञानिक द्वारा प्रस्तुत पुस्तक 'जल की विकराल समस्या' पर नियंत्रण की दृष्टि से लिखी गई है। सुधीजन इस पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा अपना ज्ञानवर्धन एवं जल सम्बन्धी-सावधानियों से परिचित होंगे। यथा पर्यावरण-संरक्षण हेतु जल के दुरुपयोग को कैसे रोकें, जल में भी जीव होते हैं एवं जल स्वयं भी जीव रूप है, अतः जलस्थ एवं जलजीवों के प्रति करुणा और अनुकम्पा भाव का विकास हो, दैनिक जीवन में सचित्त जल के उपयोग को घटायें एवं अचित्त धोवन जल के उपयोग को प्रोत्साहित करें। ऐसा सन्देश इस पुस्तक से मिलता है।

अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार, मूल्य 40 / -, सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन, डॉ. श्वेता जैन

प्रस्तुत पुस्तक में भ्रष्टाचार पर आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से विचार किया गया है तथा भ्रष्टाचार के निवारण हेतु आध्यात्मिक उपायों की भी चर्चा की गई है। इसमें न्याय, शिक्षा, समाज-सेवा आदि क्षेत्रों के विद्वानों के आलेखों का प्रकाशन किया गया है। पुस्तक की भूमिका अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष एवं न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द्रजी टाटिया ने लिखी है।

जैन प्रमाणशास्त्र, मूल्य 350 / -, लेखक एवं सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन

इस पुस्तक के लेखन में आगमों में वर्णित ज्ञान एवं प्रमाण निरूपण के साथ पूर्वाचार्यों द्वारा रचित संस्कृत-ग्रन्थों को भी आधार बनाया गया है। इसमें प्रमाण शास्त्र की जैन-परम्परा, प्रमाणलक्षण एवं प्रामाण्यवाद, प्रमाण-भेद, प्रत्यक्ष-प्रमाण, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान एवं तर्क प्रमाण, अनुमान-प्रमाण, आगम प्रमाण आदि शीर्षकों का समावेश करते हुए अन्त में नय एवं निक्षेप तथा वाद-स्वरूप एवं विधि द्वारा पुस्तक को विस्तार दिया गया है।

जैन विचारधारा में शिक्षा, मूल्य 25 / -, लेखक-प्रो. चाँदमल कर्णावट

इस पुस्तक के दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में 23 अध्याय हैं, जिनमें शिक्षा की अवधारणा के साथ जैन परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विचार किया गया है। इसमें शिक्षा-प्राप्ति में विनय, अप्रमत्तता, तप, अहिंसा, संयम आदि का महत्त्व बताया गया है। द्वितीय खण्ड के 5 अध्यायों में राष्ट्रीय शिक्षा में धार्मिक शिक्षा, सामाजिक पुनर्निर्माण में शिक्षा की भूमिका, मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

सबको प्यारे प्राण, मूल्य 25 / -, संकलन-रतनलाल सी. बाफना, सम्पादक-डॉ. दिलीप धींग

अहिंसा, शाकाहार एवं प्राण-रक्षा विषयक सामग्री का इस पुस्तक में समावेश किया गया है। इसके दो भाग हैं- गद्य भाग और पद्य भाग। गद्य भाग में शाकाहार से सम्बन्धित अनेक विद्वानों के लेख हैं, पद्य भाग में गीत कविताएँ आदि संकलित हैं। अनेक रचनाकारों के दोहे, मुक्तक, काव्य पंक्तियाँ सम्मिलित की गई हैं।



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal

Above Shop No. 182,

Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)

Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन